Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समाज

मिस्टर आर. सी. दत्त लिखित बँगला उपन्यास

का

हिन्दी-अनुवाद

अनुवादक

श्रीजनार्दन झा

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग

१९१७

सर्वाधिकार रक्षित

[मूल्य ॥।)

द्विती[illegible]]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

6561.

Price Rs. 12/-=

Printed and published by Apurva Krishna Bose, at the Indian Press, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समाज

पहला परिच्छेद

ता अपने छोटे बच्चे को पास बिठा कर उसे बोलना सिखा रही थी, और उसकी तोतली बोली सुन कर मन ही मन आनन्द से उमँग रही थी।

माता वात्सल्य भरी दृष्टि से बच्चे की ओर देख कर बोली—"लल्ला मेरा।"

लक इसका कुछ अर्थ न समझ बोला—"लल्ला मेला।"

ता—"है।"

ा—"है।"

ता—"होशियार।"

ा—"होच्छयाल।"

ा—"मौंसी के घर चलना होगा।"

"चलना होगा।"

— मौंसी तुझे गोद में लेकर मिसरी दूध पिलावेगी।"

।—दूध पिलावेगी।"

ा—"पेड़ा, बरफ़ी और इमर्ती तुझको खूब खिलावेगी।"

।—"खूब खिलावेगी।"

ा—"तेरे बाबूजी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बच्चा—"बाबू जी।"

माता—"आज घर आवेंगे, तेरे लिए खिलौना लावेंगे।"

बच्चा—"खिलौना लावेंगे।"

माता—"तुझको गोद बिठावेंगे।"

बच्चा—"बिठावेंगे।"

माता—"माला गले पिन्हावेंगे।"

बच्चा—"पिन्हावेंगे।"

माता—"तुम भी उनको चुम्मा देना न भूलना।"

जिस समय माँ और बेटे में इस तरह की मीठी मीठी बातें हो रही थीं ठीक उसी समय "किसको चुम्मा देना न भूलना।" कहती हुई एक युवती स्त्री सहसा घर के भीतर आकर हँसते हँसते बोली—"वे पहले किसका मुँह चूमेंगे? लड़के का या लड़के की माँ का। अरे! आज तो बड़ी तैयारी हो रही है। शृङ्गार का बड़ा ही विन्यास हो रहा है।"

लड़के की माँ ने सकुच कर सिर नीचे कर लिया। आँखें बन्द कर लीं। उसके दोनों होंठ लज्जा से हिलने लगे।

सचमुच ही आज शृङ्गार की बड़ी तैयारी हो रही थी। लड़के की माँ घर के भीतर एक ओर बैठी सामने एक बड़ा [illegible] कंघी से बाल सँवार रही थी। एक ओर पान का बड़ा [illegible] रक्खा था, दूसरी ओर शृङ्गार की अनेक सामग्रियाँ रक्खी थ[illegible] हम उनका नाम ठीक ठीक नहीं जानते। जो यौवनमदगर्वि[illegible] युवती रसिक-स्त्रियाँ हैं वही उन सब चीज़ों का नाम भलीभाँति जानती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भौंरे से काले केश-पाश पर बड़ी शीघ्रता से बार बार कंघी चल रही थी; कमल-नाल से कोमल हाथ की चूड़ियाँ झनक रही थीं; सोने का सुन्दर चन्द्रहार छाती पर झूल रहा था; रह रह कर पड़ुआ के लाल होठों पर मुसकुराहट झलक पड़ती थी। उसकी बहुत समय लगा। हिनी मूर्ति आइने में प्रतिबिम्बित हो उसकी न हुआ। पैदा कर रही थी। अपना रूप देख वह आप ही मुग्ध हो रही थी। सामने की दीवाल में अनेक देवताओं की तसवीरें टँगी थीं। जिनमें श्रीरामचन्द्रजी का चित्र अपूर्व शोभा दे रहा था। वे श्रीसीताजी के साथ एक सिंहासन पर विराज रहे थे। दाहिनी ओर बाईं ओर की दीवाल में भी, सावित्री सत्यवान्, तथा दमयन्ती और राजा नल आदि अनेक प्रातःस्मरणीय स्त्री-पुरुषों के चित्र सुशोभित थे।

लड़का सामने एक चटाई पर बैठ कर खेल रहा था। माता उसे बात करना सिखा रही थी और बीच बीच में बेसुध होकर उमँगभरे धीमे स्वर में कुछ गा भी लेती थी। यह सब देखकर ही उस प्रौढ़ा स्त्री ने घर में आकर पूछा, "लड़के का पिता पहले मँह चूमेगा।" लड़के की माँ लज्जा से कुछ देर सिर नीचा कुराती हुई बोली—"बाई जी, तुम्हें सब बातों में है।"

हीं, बहन, मैं ठट्ठा नहीं करती; तुम अपने मन की हो। आज इतनी आयोजना क्यों हो रही है?"

आयोजना तो कुछ नहीं। खियाँ क्या बाल नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ननद—"बाँधती क्यों नहीं, परन्तु आज भूषण-वसन की कु
और ही बहार देखने में आती है। इसी से पूछती हूँ।"

भौजाई—"क्या स्त्रियाँ गहने नहीं पहनतीं ?"

ननद—"पहनती हैं सही, किन्तु आज सुन्दर
और फूलों की मालायें भी तो देखती हूँ।"

भौजाई—फूल की माला पहरना क्या स्त्रि...

ननद—"मना तो नहीं है, पर तुम गुनगुना कर कुछ ग
भी तो थीं, मुसकुराहट के साथ मन की उमँग भी तो रोके न
रुकती थी।"

भौजाई—"अच्छा, इसका कारण मैं कहती हूँ। थिएटर
गान जो मैंने तुम्हीं से एक आध सीखा था, वही गा रही थ
बताओ तो औरतें क्या कभीं हँसतीं गातीं नहीं, वे सदा रोती
रहती हैं ?"

ननद—"हँसती क्यों नहीं। विशेष आनन्द होने से क्य
क्या पुरुष सभी हँसते हैं, हँसते ही नहीं बल्कि उस हँसी के
साथ उनका हृदय भी आनन्द से उछलने लगता है। कहो
बात ठीक है या नहीं।"

भौजाई चुप हो रही। लज्जा से उसका मु...
देर के बाद वह हँस कर बोली—"मैं... सूझता ...
मुझसे ठठोली न करो। लो, मैंने बाल...

ननद—"वाह ! बाल बाँधना क...
तो तुम्हारी यही उम्र है। तुम गहने...
तुम्हारे मुँह में हँसी की झलक दे...

ननद—"न...क्खी थ...
...च सच क...नमदगवि...
...जाई—"... भलीभाँति
...?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है । बहन, उदास मत हो, आओ, मेरे पास आकर बैठो । मैं तुम्हारी वेणी बाँध देती हूँ । ऐसी सुन्दर वेणी बाँध दूँगी कि जिसका नाम ।"

भ्रातृवधू सुधा के बार बार मना करने पर भी ननद अन्नपूर्णा ने बड़े यत्न से उसकी वेणी बाँधना आरम्भ किया । वेणी बाँधने में बहुत समय लगा । साँझ हो गई, तो भी बाल बाँधना समाप्त न हुआ ।

पाठकगण, चलिए तब तक हम आप एक बार गाँव की परिक्रमा कर आवें और गाँव के नई रीति-रस्मों का कुछ ज्ञान प्राप्त कर लें ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरा परिच्छेद

आज आठ वर्ष बाद सुधा का पुनर्विवाह हो गया।* विधवा का व्याह होना सहज नहीं है। इसमें बड़े बड़े बखेड़े खड़े होते हैं। व्याह हो जाने पर भी एकबारगी बखेड़ा मिट जायगा, ऐसा हम लोगों का समाज नहीं है। शिवचन्द्र की माता ने ब्राह्मणों को कुछ दे लेकर राज़ी कर लिया और उन्हें अपने यहाँ खिलाया पिलाया। सुधा के चचा तारिणी बाबू ने अपने बन्धु-बान्धवों का बहुत कुछ अनुनय विनय किया। स्वदेशहितैषी शिवचन्द्र ने भी गाँव के लोगों के अनेक उपकार किये। अत्यन्त दयामयी सुधा गाँव के ग़रीब भाइयों के रोग, शोक और विपत्ति में बहन की तरह सहायता करने लगी। इससे सभी लोग मुक्तकण्ठ होकर शिवचन्द्र और सुधा की सुजनता, परोपकारिता, और देशहितैषिता की प्रशंसा करने लगे। हमारे प्राचीन काल में सदाचार से जाति की रक्षा और बुरे आचार से जाति-विध्वंस होने का जो नियम था वह अब के सभ्य समाज में न रहा। धर्मपुर और उसके आस पास के गाँव वाले जो सनातनधर्म के पक्षपाती और समाज के मुख्य व्यक्ति थे, बिगड़ बैठे। उन्होंने

---

* जो सुधा के व्याह की बात और उसका पूर्व वृत्तान्त जानना चाहें वे मेरा बनाया संसार नामक उपन्यास पढ़ें।

ग्रन्थकर्ता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा—"विधवा-विवाह होने से हिन्दूधर्म का और क्या बच रहा ।"

सामाजिक पण्डित सब एक स्वर से बोल उठे—"विधवा-विवाह की प्रथा बड़ी ही गर्हित और शास्त्रविरुद्ध है ।"

हेमचन्द्र और शिवचन्द्र उक्त समाज के नेता और विधवाविवाह के विरोधी पण्डितों के साथ सम्बन्ध जोड़ना नहीं चाहते थे और न उन सबों के मतामत की कुछ अपेक्षा रखते थे। हेमचन्द्र को अपनी खेती से जो कुछ थोड़ा सा लाभ होता था उसी से वे धर्मपुर गाँव में रहकर सुख से समय बिताते थे। शिवचन्द्र सरलहृदया स्नेहमयी सुधा सी सुशीला स्त्री को पाकर बड़े सुख से कलकत्ते में रहने और कालेज की प्रत्येक परीक्षा में उत्तीर्ण होकर सभ्य-समाज में सम्मानित होने लगा। शिवचन्द्र के ससुर तारिणीप्रसाद बड़ी विपद में पड़े। वे बड़े चतुर और देशकालज्ञ थे। वे अपने नातेदार को छोड़ना भी नहीं चाहते थे और समाज के साथ विरोध भी करना नहीं चाहते थे। सुधा और सुमित्रा के सिवा उनके कोई था भी नहीं, इसलिए वे उन्हें छोड़ भी नहीं सकते थे। बुद्धिमान् सामाजिक लोग जिस चाल से चलते हैं, बुद्धिमान् तारिणी बाबू भी उसी चाल से चले। उन्होंने छिपे तौर से सुमित्रा और सुधा के साथ सम्पर्क रक्खा, परन्तु बाहर से यह बात किसी पर लक्षित न होने दी और उन दोनों को अपने घर से अलग एक दूसरे मकान में रहने का प्रबन्ध कर दिया।

सुधा के ब्याह होने के तीन वर्ष बाद उसके चचा तारिणी बाबू एक बार तीन मास की छुट्टी लेकर घर आये। उनके आगमन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से उनकी बैठक की शोभा बढ़ गई। वे घर के सब कामों की देख भाल करने लगे। विशेष कर वे महाजनी, तिजारत और खेती आदि व्यवसायों की ओर झुके। थोड़े ही दिनों में उनका कारोबार बहुत बढ़ चला। सवेरे से दो पहर दिन तक उनके दरवाज़े पर लोगों की भीड़ लगी रहती थी। कोई भेंट करने, कोई चुकता हिसाब पाने, कोई क़र्ज़ लेने और कोई सूद देने के लिए आते थे। गाँव के कितने ही लोग जो समाज के मुख्य गिने जाते थे, उनके पास बैठकर अनुपस्थित बन्धुबान्धवों के चरित्र की समालोचना और साथ साथ उनकी निन्दा किया करते थे। पाण्डित्य का अभिमान रखने वाले कितने ही व्यक्ति उनकी बैठक में गोष्ठी करके समाज के विरुद्ध चलने वालों का दोष प्रमाणित कर दण्ड की व्यवस्था करते थे और हिन्दूधर्म की रक्षा का ढोंग रच कर अपना पेट पालते थे। कोई कोई कन्यादान के ऋण से उत्तीर्ण होने के लिए उनसे सलाह-विचार लेने आते थे और जो लोग अदालती कामों के पीछे दिन रात हैरान रहते थे वे सब भी वर्दवान के नाज़िर महाशय से उपदेश पाकर अपने को कृतार्थ मानते थे। सारांश यह कि तारिणी बाबू सब प्रकार से ज्ञानी, मानी और सभ्य-समाज में आदरणीय गिने जाने लगे। सब लोग उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखते थे और उनके आचार-विचार की प्रशंसा करते थे।

जन-समाज में इस प्रकार आदर पाने पर भी बूढ़े तारिणी बाबू के हृदय में शान्तिसुख न था। वे बराबर चिन्ता में डूबे रहते थे। उनकी एक ही लड़की थी, जिसकी मृत्यु का शोक उनके मन में बहुत दिनों तक न रहा। किन्तु उनकी मृत्यु के अनन्तर धर्म्मपुर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का मल्लिक-वंश लुप्त हो जायगा, इस चिन्ता से उनका हृदय दिन रात जलने लगा। उनको सत्परामर्श देने वालों की भी कमी न थी।

समाज के सुधारक और हिन्दू-धर्म्म के पोषकगण बराबर कहा करते थे—"तारिणी बाबू की अभी उम्र ही क्या हुई है। बाल पकने और दाँत टूटने ही से कोई बूढ़ा नहीं होता। यही तो इनके ब्याह की पक्की उम्र है। इनके समान धन में, मान में, ज्ञान में और कुलशील में दूसरा कौन है? भाग्य ही से किसी कन्या को ऐसा सुयोग्य वर मिलता है। झट पट आप दूसरा ब्याह कर लें, नई बहू को अपने घर ले आवें। ईश्वर की कृपा हुई तो आप शीघ्र ही पुत्र का मुख देखकर शान्तिलाभ करेंगे। यहीं तो मित्र महाशय के घर में नौ बरस की एक सुन्दरी कन्या है। अभी उनके यहाँ ब्याह का पैगाम भेज दीजिए। भाग्यवती न होने से क्या कोई लड़की ऐसा योग्य वर पा सकती है? इस सम्बन्ध से कन्या के पितृकुल का उद्धार हो जायगा।" नौ वर्ष की प्रणयिनी का अधरामृत पान करने में तारिणी बाबू को कोई आपत्ति थी, ऐसा उनके स्वभाव से लक्षित न होता था। गाँव के कोई कोई आदमी कहते थे—"तारिणी बाबू इसी काम के लिए छुट्टी लेकर घर आये हैं।" जो कुछ हो, विवाह के विषय में कोई बात पूछने पर तारिणी बाबू चुप हो रहते थे। "मौनं स्वीकारलक्षणम्" मौन सम्मति का लक्षण है, जान कर ब्राह्मण पुरोहित गण तारिणी बाबू से बार बार कहने लगे—"यह तो अच्छा ही काम है। प्रथम पत्नी से कोई सन्तान न हो तो दूसरा विवाह करना ही चाहिए। यह शास्त्र की भी आज्ञा है। इस विषय में आप का विचार बहुत उत्तम है। नौ वर्ष की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कन्या रोहणी के बराबर है। पुरुष के वयःसम्बन्ध में शास्त्र की कुछ विशेष आज्ञा नहीं है। पुरुष की उम्र चाहे जितनी हो, वह विवाह करने के योग्य सदा रहता है। आपकी अभी उम्र ही क्या हुई है। आप तो अभी हृष्ट पुष्ट से दीखते हैं। इस शुभ कार्य में अब आप विलम्ब न कीजिए। तारिणी बाबू, आप धार्म्मिक विचारवान् और दीर्घदर्शी पुरुष हैं। आप पुत्र की कामना और वंशरक्षा के निमित्त दूसरा व्याह करके धर्म्माचरण का ज्वलन्त दृष्टान्त सब को दिखा दें।" तारिणी बाबू ने इस प्रस्ताव का प्रकाश्य रूप से कोई उत्तर न दिया, किन्तु नव वर्ष की बधू के प्रेमरहस्य का माधुर्य सोच कर वृद्ध का हृदय हर्ष से फूल उठा। ब्राह्मण और पुरोहित पण्डितगणों को उस दिन तारिणी बाबू से प्रसन्नतासूचक विशेष पुरस्कार मिले।

तारिणी बाबू के जो विशेष इष्ट-बन्धु थे, वे भी यही सलाह देते थे। तारिणी बाबू के हृदय की उमङ्ग जब रोके नहीं रुकती थी, तब वे कुछ असम्मति का भाव दिखा कर बोलते थे—"तुम लोग मुझे चुप देख कर सोचते होगे कि इस कार्य में मेरी सम्मति नहीं है, बात ऐसी ही है, पर क्या किया जाय। न करने से भी तो नहीं बनता। मल्लिक-वंश के लुप्त होने की बात सोच कर बड़ा ही दुःख होता है।"

बन्धुगण कहते थे—"आप का ख़याल बहुत ठीक है। आप जैसे निस्पृह और निःस्वार्थ हैं, यह धर्मपुर और बर्दवान में कौन नहीं जानता। परन्तु वंशरक्षा धर्मसंगत कार्य है। न करने से कैसे चलेगा। कर्तव्यपालन के हेतु आप कुछ कष्ट स्वीकार कीजिए।" स्वार्थ-सुख के लिए नहीं, केवल कर्तव्य ज्ञान से आप यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कष्ट अपने ऊपर लेना चाहते हैं। क्या यह बात सब से हो सकती है ?"

घर के कोने में एक पड़ोस का धूर्त लड़का बैठा था। तारिणी बाबू के दूसरे व्याह का कष्ट स्वीकार करने की बात सुन कर वह अपने मुँह की हँसी न रोक घर से निकल भागा। बाहर आकर वह खूब हँसा।

तारिणी बाबू—"भाई, यह बात भी तो तुम लोग जानते ही हो कि मैंने दोनों भतीजियों को पाल पोस कर बड़ा किया है। उन्हें कुछ देकर जाने की बात सोची थी, परन्तु आज कल की लड़कियाँ प्रायः स्वेच्छाचारिणी होती हैं। धर्म्मपथ से कोई नहीं चलता। जिसके जी में जो आता है कर गुज़रता है।"

बन्धुगण—"यह कहने की आवश्यकता नहीं। क्या हम सब नहीं जानते ? आप ने सुमित्रा और सुधा के लिए जो कुछ किया है वह हम लोग अपनी आँखों देख चुके हैं। यह क्या बहुत दिनों की बात है ? आप उनको सुध न लेते तो उन दोनों अनाथ बालिकाओं की न मालूम क्या दशा होती ? कौन उन्हें खाने पहनने को देता ? कौन उनका भरण-पोषण करता ? आप का हृदय बड़ा ही कोमल है, इसीलिए आपने इतना उपकार किया। क्या सब लोग ऐसा कर सकते हैं ? नहीं जानते, वे दोनों मानवी हैं या राक्षसी। आप जैसे दयालु संरक्षक की बात न सुन कर धर्म को तिलाञ्जलि दे जो काम न करने का कर बैठीं। विधवाविवाह ! छीः छीः ! इस धर्मविप्लव की बात स्मरण करके शरीर में रोमाञ्च हो आता है। आप उन दोनों का क्या नाम लेते हैं। पापिष्ठाओं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के नाम लेने में भी पाप होता है। आप बड़े उदार हैं, इसी से उन दोनों को इस गाँव में रहने दिया है । दूसरा कोई होता तो उन दोनों के सिर का बाल मुड़ा कर गाँव से बाहर कर देता।"

तारिणी बाबू—"आप लोग सब बात नहीं जानते। मैं अपने मन की सब बातें आज आपसे खोल कर कहता हूँ। आप लोगों से न कहूँगा तो किससे कहूँगा ? मेरी गृहिणी कास-रोग से दिन दिन दुबली हुई जा रही है। उसका रोग दिन दिन बढ़ा जा रहा है। उसकी सेवा के लिए ख़ास कर एक आदमी की बड़ी ज़रूरत है। मैं बराबर बर्दवान में रहने के कारण उसकी देख रेख हमेशा नहीं कर सकता। कम उम्र की एक आत्मीया घर में रहेगी तो उसकी सेवा-शुश्रूषा अच्छी तरह हो सकेगी। यही सोच कर मैंने इस कार्य्य में सम्मति दी है। नहीं तो इस बूढ़े वयस में दूसरा व्याह करने की मेरी कदापि इच्छा नहीं। मैं अब बूढ़ा हो चला। अब परमेश्वर का भजन करना ही मेरे लिए अच्छा है।"

बन्धुवर्ग—"आप कहेंगे तब। क्या हम सब आपके निस्पृह और दयालु स्वभाव को नहीं जानते ? आप अपनी गृहिणी की जैसी चिकित्सा और उनके आराम का यत्न कर रहे हैं, आज कल कितने मनुष्य वैसा कर सकते हैं ? शास्त्र में लिखा है, यदि स्त्री पुत्र प्रसव न करे तो उसको त्याग देना चाहिए। उसको घर में रखने ही से क्या ? आप ने जो इतने दिन उसको अपने घर में यत्नपूर्वक रक्खा है, उसे भोजन वस्त्र दिया है यह आपकी उदारता है, इससे बढ़ कर आपकी दया और क्या होगी ! इस समय जो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आप उसकी सेवा के लिए एक नया प्रबन्ध करना चाहते हैं यह भी आपकी बड़ी दया है।"

बन्धुवर्ग के साथ बड़ी देर तक यों ही परामर्श होता रहा। अन्त में क्या सिद्धान्त हुआ, इसके कहने की आवश्यकता नहीं। कार्यकर्ता जब स्वयं अपना मत स्थिर करके गाँव आये हैं तब परामर्श की बात केवल विडम्बना मात्र है।

तारिणी बाबू के घर में दूर के नाते की स्त्रियाँ थीं, जो उमा की माँ की सदा सेवा-शुश्रूषा किया करती थीं। बाहर की बैठक में बन्धुवर्ग के साथ तारिणी बाबू का जो कुछ परामर्श हुआ, वह उन स्त्रियों से छिपा न रहा। उन्होंने तुरन्त वे सब बातें उमा की माता के कान तक पहुँचा दीं।

रोगिणी की आँखों में आँसू भर आये। वह बोली—"जब मैं उमा को खो बैठी हूँ तब समझो, इस संसार में मैं सब कुछ खो बैठी। इस जीवन में अब मुझे सुख नहीं। यदि उनकी इच्छा है तो वे खुशी से दूसरा व्याह करलें। मुझसे उन्हें कोई सुख न मिला। दूसरा व्याह करके भी तो वे सुखी हों।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीसरा परिच्छेद

रामपुर के मित्र घराने की पहले अच्छी अवस्था थी। अब वैसी न रही। उनकी अवस्था दिन पर दिन घटती ही गई। जो कुछ ज़मींदारी थी, वह बहुत दिन हुए बिक गई। थोड़ी सी ज़मीन बच रही, उसी से मित्र महाशय किसी तरह अपना निर्वाह कर रहे थे। जिस साल उमा की मृत्यु हुई उसी साल मित्र महाशय भी अपनी अनाथा स्त्री और दो सन्तान छोड़ कर परलोक सिधारे। सन्तानों में एक लड़का था जिसका नाम गोपालचन्द्र और एक लड़की थी जिसका नाम सुभद्रा था।

मित्र महाशय की मृत्यु से उनकी विधवा स्त्री और दोनों सन्तान बड़े कष्ट में पड़े। उन सबों को अपना निर्वाह करना कठिन हो गया। गाँव के दयालु लोग जब तब उन्हें कुछ खाने पहनने को दे देते थे। सुमित्रा जब कलकत्ते से लौट आई तब उसने मित्र महाशय के कुटुम्बियों की पूर्ण सहायता की। उनका जो कुछ थोड़ी सी ज़मीन बच रही थी, उसने उसका ऐसा अच्छा बन्दोबस्त कर दिया, जिससे साल में थोड़ा बहुत पैदावार आने लगा। कभी कभी यह अपने पास से भी चावल, दाल और तरकारी आदि उन सबों के भोजनार्थ भेज देती थी। बरसात के मौसम में वह उनके घर के पास की ज़मीन में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बैंगन, मूली और अनेक प्रकार के साग-भाजी बो देती थी। शीतकाल में उनके बच्चों के लिए अपने हाथ से गरम कपड़े का कुरता और टोपी सी देती थी। बराबर उनकी खोज ख़बर लेती थी। सुमित्रा के साथ अधिक हिल मिल जाने के कारण सुभद्रा नित्य उसके घर खेलने को आती थी।

गोपालचन्द्र गाँव की पाठशाला में पढ़ता था, किन्तु पिता का देहान्त होने से उसने पढ़ना छोड़ दिया, किसी तरह के रोज़गार की तलाश में इधर उधर घूमने लगा। सोलह वर्ष के अशिक्षित बालक को कौन काम मिलता? परन्तु वह बुद्धिमान् था, बहुत कोशिश-पैरवी से उसने आठ दस रुपये की मुहर्रिरी का काम करके कुछ रुपया जमा किया, पर वह पीछे सड़क की ठेकेदारी लेकर विशेष उपार्जन करने लगा। माँ के ख़र्च के लिए थोड़ा घना कभी कुछ भेज दाता था। वह बड़ा ही दीर्घदर्शी और चतुर था। रुपया जमा करने का ढङ्ग ख़ूब जानता था।

गोपाल की माँ और बहन धर्मपुर में रह कर खेत की पैदावार और सुमित्रा की सहायता से किसी तरह गुज़ारा कर रही थी। सुमित्रा की बेटी सुशीला की उम्र जब सात वर्ष की थी तब सुभद्रा नौ वर्ष की थी। इस लिए दोनों एक साथ रह कर हमेशा सुमित्रा के घर खेलती थीं। सुशीला का रंग साँवला था। उसकी आँखें बड़ी बड़ी थीं। शील स्वभाव बड़ा ही अच्छा था, परन्तु वह विशेष सुन्दरी न थी। सुभद्रा गोरी, बड़ी चतुर और देखने में भी बहुत सुन्दरी थी। उसके शरीर से लावण्य टपका पड़ता था। चेहरे से बुद्धिमानी का चिह्न झलकता था। रंग उसका तपाये सोने का सा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुन्दर था। धर्मपुर गाँव में ऐसी रूपवती लड़की दूसरी न थी। जब वह किसी बड़े बाग़ या फुलवाड़ा में सखियों के साथ इधर उधर दौड़ कर खेलती थी तब मालूम होता था जैसे कोई देवकन्या नन्दनकानन में विचर रही हो। किसान लोग खेत पर जाते समय उस लड़की को देख कर उसके मुँह से दो चार मीठी बात सुनने के लिए लौट पड़ते थे। स्त्रियाँ घाट से पानी लाने के समय कलसी रख कर उस लड़की को एक बार ज़रूर गोद में लेकर प्यार करती थीं।

सुभद्रा जैसी सुन्दरी थी वैसी ही चतुर थी। नौ वर्ष की लड़की की वैसी विलक्षण बुद्धि देख कर गाँव की बूढ़ी स्त्रियाँ भी चकित होती थीं। सुभद्रा अकेली घर का सब काम करती। कोई बात आप ही सोचती और आप ही उसका पक्का विचार करती। वह सुशीला के साथ खेलती थी, किन्तु सुशीला भोली भाली थी, वह सुभद्रा के हृदय के गम्भीर भाव को क्या जानती? वह सुशीला को प्रसन्न रखने की इच्छा से उसके खेलने की सामग्री को ढूँढ़ ढूँढ़ कर एकत्र करती थी। सुमित्रा और सुधा को माँ कह कर पुकारती थी। सुमित्रा जब तब लोगों से कहती थी, "अहा, यह लड़की क्या ही शान्त, नम्र और बुद्धिमती है। इसको देख कर आंखों में ठण्डक पड़ती है।"

मल्लिक महाशय के यहाँ से एक स्त्री सुभद्रा की माँ के पास ब्याह का पैगाम लेकर आई। सुभद्रा की माँ ने गाली देकर कहा—"अरी रांड़, चण्डालिन, तुझ को यह बात मुँह से निकालते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लज्जा न आई। क्या मैं अपनी लड़की को पानी में डुबो दूँ ? पचास वर्ष के बुड्ढे के साथ मैं अपनी नौ वर्ष की बच्ची को ब्याह दूँ ? रुपया लेकर क्या लड़की धो धोकर चाटेगी ? गहना लेकर क्या होगा। क्या गहना पहनने ही से उसके सब मनोरथ पूरे होंगे ? हम ग़रीब हैं तो हैं, ग़रीब ही रहेंगी। रुपया लेकर लड़की को कदापि न बेचेंगी। दुष्ट, हत्यारिन ! तू क्या कहती है ? छीः छीः वह बूढ़ा तो मेरी सुभद्रा के बाप से भी उम्र में बड़ा होगा। यदि उमा के कोई सन्तान रहती तो वह आज मेरी सुभद्रा की उमर की होती। देखती नहीं, सुमित्रा की लड़की प्रायः मेरी सुभद्रा के बराबर है। उसी सुमित्रा के चचा उमा के बाप हैं। हाय ! हाय ! क्या वही वृद्ध महाशय मेरी सुभद्रा से ब्याह करना चाहते हैं ? क्या यम बूढ़ों की ख़बर लेना भूल गया ? आज कल के बूढ़े भी तो कुछ कम रसिक नहीं होते। दौहित्री की उम्र की छोटी सी ख़ूबसूरत लड़की को देख कर भी उनके मुँह से लार टपकने लगती है। राम राम ! ऐसे बूढ़ों के मुँह में ख़ाक पड़े। नहीं री नहीं, ऐसी बात फिर कभी मुँह से बाहर न करना। क्या तू जानती नहीं ? अन्ना की माँ ने एक बूढ़े वर के साथ लड़की को ब्याह दिया था। उसका परिणाम क्या हुआ ? क्या तूने नहीं देखा ? क्या जान बूझ कर फिर तू वही काम करने को कहती है ? यह मैं कदापि न मानूँगी। जिनका बसाया यह मेरा संसार है, जो हम सब के सुख-दुःख के भागी थे वे हमें रुला कर इस संसार से चले गये। मैं भी उनके साथ चली जाती तो अच्छा होता। अब मुझसे यह यन्त्रणा सही नहीं जाती।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस प्रकार अपनी अवस्था पर दुःख प्रकट करके वह विधवा स्त्री स्वामी का गुण गा गा कर रोने लगी।

जो स्त्री व्याह की घटना लेकर आई थी वह उलटे पाँव लौट गई। सुभद्रा ने टट्टी की आड़ में खड़ी होकर सब बातें सुनीं। वह मन ही मन बोली—"मैं बड़े घर की बहू हूँगी। इसमें माँ बाधा क्यों डाल रही है? माँ की यह बात न चलेगी।"

तारिणी बाबू जब कोई बात मन में ठानते थे, तब उससे वे सहसा पीछे न हटते थे। दूसरे दिन वह औरत फिर सुमित्रा के पास आई। उसने एक चिट्ठी सुमित्रा के हाथ में दी। चिट्ठी सुमित्रा की चची के हाथ की लिखी थी। उसमें लिखा था—"प्यारी सुमित्रा! तुम्हारे चचा के कोई सन्तान नहीं है इससे वे फिर दूसरा व्याह करना चाहते हैं। इसमें मेरी भी सम्मति है। मित्र घराने में सुभद्रा नाम की एक लड़की है। उसी को तुम्हारे चचा ने पसन्द किया है। सुना है, लड़की बड़ी नम्र है। उसकी माँ तुम्हारी आश्रिता है और तुम्हारी बात सुनती है। जिसमें वह इस प्रस्ताव पर राज़ी हो वही यत्न करना। मैं आशा करती हूँ, तुम मेरी बात रक्खोगी।"

पुनश्च—"उमा जब से बिछुर गई, तब से मैं तुम्हीं को अपनी बेटी मानती हूँ। आवश्यकता होने पर माँ को अपने घर में स्थान देना।"

सुमित्रा पत्र का मुख्य वृत्तान्त पढ़ कर बहुत हँसी। परन्तु अन्त की दो पंक्ति पढ़ कर उसकी आंखों से आँसू टपक पड़े।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसकी चाची का इस विवाह में कैसा मत है, वह अन्तिम लेख से विदित हो गया। उसने पत्र का उत्तर लिखा—

"बड़ी चाची, चचा साहब की बुद्धि मारी गई है। क्या उसके साथ तुम्हारी बुद्धि भी मारी गई? अन्नपूर्णा की अवस्था अपनी आँख से देख कर भी क्या गाँव की एक और लड़की को फाँसी देना चाहती हो? बहन, मैं अबोध बालिका हूँ, तुमको क्या विचार दे सकूँगी? तुम आपही सोच देखो, चचा क्या इस व्याह से सुखी होंगे? तुम जिस तरह अपने शरीर का कुछ मोह न करके चचा की सेवा कर रही हो, थोड़ी उम्र की वधू क्या उनकी वैसी सेवा कर सकेगी? यदि वह स्त्री दुःखदायिनी हुई तो चचाजी की वृद्धावस्था में वह क्लेश तुम्हें अपनी आंखों देखना होगा।"

"यह काम तुम कभी मत होने दो। इस कार्य में मैं कुछ भी सहायता न कर सकूँगी।"

सुमित्रा ने अपनी लिखी चिट्ठी को दो एक बार पढ़ उसे लिफाफ़े में बन्द कर उस औरत के हाथ भेज दिया।

वह स्त्री चिट्ठी लेकर चली गई। इसके कुछ काल के अनन्तर एक लड़की परदे की आड़ से धीरे धीरे हट गई। सुभद्रा ने छिप कर दोनों पत्र आदि से अन्त तक सुन लिये। बड़ी देर तक ग़ौर करके वह मन में बोली—"मैं बड़े घर की बहू हूँगी, सुशीला की माँ बाधा डाल रही है। बाधा डालने से क्या बात रुक सकेगी।"

साँझ को सुधा सुमित्रा की भेट करने आई। सुधा को देखते ही सुमित्रा ने हँस कर कहा—"कहो सुधा, नई चाची को तुमने कभी देखा है?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुधा—"नहीं बहन, नई चाची कौन ?"

सुमित्रा—"तुम यह नहीं जानती तो कुछ नहीं जानती ! अभी जाकर देख लो, वह सुशीला के साथ फुलवारी में खेल रही है ।"

सुधा—"इसका क्या मतलब ? वह तो सुभद्रा है । उसके साथ तुमने चाची का नाता कैसे जोड़ा ?"

सुमित्रा—"मैं क्यों जोड़ूँगी ? परन्तु यह सम्बन्ध बिना हुए न रहेगा । जिसको जोड़ना है जोड़ेगा ।"

सुधा—"बहन, क्या यह तुम मुझ से दिल्लगी तो नहीं कर रही हो ? मैं तो अभी तक इस बात का कुछ भी मर्म न समझ सकी । तुम्हारे मुँह में हँसी रोके नहीं रुकती । तुम्हें मेरे सिर की सौगन्द है, सच सच कहो, क्या हुआ है ?"

सुमित्रा—"हुआ तो कुछ नहीं है, परन्तु सम्भव है, एक मास के भीतर ही हो जायगा ।"

सुधा—"क्या होगा सो साफ़ साफ़ क्यों नहीं कहतीं ?"

सुमित्रा—"अच्छा, कहती हूँ सुनो, यह जो सुभद्रा है, कुछ दिन में हमारी तुम्हारी चाची होगी । चचा उसके साथ ब्याह करना चाहते हैं । ब्याह की बातचीत ठीक हो रही है ।"

सुमित्रा ने सुभद्रा को पुकारा । सुभद्रा दौड़ कर आई और बोली—"क्यों माँ, मुझे बुलाया है ?"

सुमित्रा—"हाँ, तुम्हीं को, इधर आओ, मेरी गोद में बैठो, मैं तुमसे एक बात पूछूँगी ।"

सुमित्रा ने उस बालिका को गोद में बिठा कर उसके कमल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से खिले हुए मुँह को बार बार चूम कर बड़े प्यार से पूछा—"कहो तो सुभद्रा, तुमने मेरे चचा को कभी देखा है ?"

सुभद्रा—"हाँ माँजी, देखा क्यों नहीं है ?"

सुमित्रा—"कब देखा ?"

सुभद्रा—"कल पिछले पहर दिन को जब मैं पोखर के घाट पर खेल रही थी, तारिणी बाबू वहाँ टहलने आये थे।"

सुधा—"तब तो परमेश्वर की कृपा से वर-कन्या की परस्पर देखादेखी भी हो ही गई। अच्छा, कह तो सुभद्रा, चचा ने तुझसे कुछ कहा भी ?"

सुभद्रा—"हाँ, छोटी माँ, तारिणी बाबू ने एक बार चारों ओर देखा, जब उन्होंने देखा, कहीं कोई नहीं है, तब उन्होंने मुझे गोद में बिठा कर बहुत लाड़ प्यार किया।"

सुमित्रा हँसते हँसते लोट गई। पीछे उसने सुधा से कहा—"देखा कल वर-कन्या का परस्पर प्रेमालाप भी हो गया। अब के बुड्ढे जो न करें, क्या सुभद्रा उनकी पोती (पौत्री) की उम्र की नहीं है ? उसके साथ ब्याह का प्रस्ताव ! छिः छिः ! जब यह बात सब लोग जानेंगे तब उन्हें क्या कहेंगे ? हम सब से कोई कुछ पूछेगा तो क्या जवाब देंगी ? क्या सचमुच ही चचाजी इस बुढ़ापे में ऐसा खोटा काम करके लोगों में अपनी हँसी करावेंगे ? अरी सुभद्रा, कह तो, क्या तू मेरे बूढ़े चचा को जी से पसन्द करती है ?"

"हाँ" कह कर सुभद्रा भाग गई। सुमित्रा आप ही आप बोली—"अहा ! लड़की क्या ही भोली है ! ब्याह किसे कहते हैं, यह भी नहीं जानती। संसार का कुछ भी ज्ञान अभी इसे नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। चचा ने जो कल उसे गोद में बिठा कर प्यार किया, इसी से वह उन पर ढुल गई। अहा! लड़की अज्ञान है, पर आप तो ज्ञानी हैं, भला बुरा जानते हैं, दीर्घदर्शी हैं। आप इस अबोध बालिका को दुःख के अगाध समुद्र में क्यों डुबोना चाहते हैं। आप समझदार होकर ऐसा न करें, इसी में कुशल है।"

सुमित्रा ने समझने में कुछ भूल की। लड़की बिलकुल नासमझ नहीं है। वह ब्याह की बात कुछ कुछ जानती है। धन-सम्पत्ति की बड़ी लालसा रखती है, अच्छे अच्छे गहने कपड़ों की ओर उसकी विशेष रुचि है। वह दरिद्रता से छुटकारा पाकर बड़े घर की बहू बनने की बड़ी आशा रखती है।

6561

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौथा परिच्छेद

हम ऊपर कह आये हैं कि तारिणी बाबू जब कोई बात मन में ठानते थे तब सहसा उससे विचलित न होते थे। उन्होंने गोपालचन्द्र के पास एक विश्वासी नौकर भेजा। परन्तु गोपालचन्द्र को उस नौकर से इसके सिवा और कुछ विशेष वृत्तान्त ज्ञात न हुआ कि "नाज़िर साहब किसी कारण से उस पर नाराज़ हैं।" क्यों नाराज़ हैं, यह उस आदमी ने न कहा। तारिणी बाबू क्यों उस पर नाराज़ हुए हैं इसका कोई कारण न जान कर गोपालचन्द्र बहुत भयभीत हुआ। तारिणी बाबू बर्दवान की बड़ी अदालत के नाज़िर थे। गोपालचन्द्र उनकी मातहती में रह कर काम करता था। तारिणी बाबू का बर्दवान में बड़ा नाम था। अपने अफ़सरों के वे बड़े ख़ैरख़्वाह थे। सभी हाकिम हुक्काम उनसे ख़ुश रहते थे। अगर वे गोपालचन्द्र की शिकायत उसके अफ़सर से कर दें तो उसे तुरन्त ठेकेदारी से हाथ धोना पड़े और उसकी रोज़ी पर पानी फिर जाय। इससे गोपालचन्द्र डर कर दूसरे दिन सवेरे गाड़ी भाड़ा करके धर्मपुर गाँव को रवाना हुआ और अपने घर न जा कर सीधे तारिणी बाबू के यहाँ गया। उन्हें प्रणाम कर सामने अपराधी की तरह हाथ जोड़ चुपचाप खड़ा रहा।

तारिणी बाबू ने गोपाल को आते देख क्रोध से मुँह फेर लिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और उससे कुछ न पूछा। गोपाल बड़ी देर तक खड़ा रहा, पीछे विनीत स्वर में यों कहने लगा—"कृपानिधान, मैं चिरकाल से आप की आज्ञा के अधीन हूँ। आप ही के अन्न से मेरा यह शरीर पला है। आप ही की सिफ़ारिश से मुझे रोज़गार मिला है। आप का एहसान मैं कभी भूल सकता हूँ? इस आज्ञाकारी सेवक से क्या अपराध हुआ है, जिससे आप इतने नाराज़ हैं? एक बार कृपा करके मुझसे सब बात कहिए। मुझे जो आज्ञा होगी, मैं उसका अवश्य पालन करूँगा। यह दास क्या आपकी बात से कभी बाहर हो सकता है?"

तारिणी—"नहीं भाई! अब तुम किसी के अधीन नहीं हो। अभी तुम्हारे पास ठेकेदारी के बहुत से काम पड़े हैं, रुपये भी बहुत कमाते हो, अब तुम हमारा कहना क्यों मानोगे? हमारी बात क्योंकर सुनोगे? अच्छा देखा जायगा। साहब से कह कर किसने तुम्हें ये सब ठेकेदारी के काम दिलाये हैं? यह तुम जानते ही हो, परन्तु भविष्य में तुम कैसे ठेकेदारी करोगे, यह भी देखना है।

गोपाल—"आप ही के अनुग्रह और दया से मुझे सब काम मिला है। आप ही मेरे मालिक हैं। क्या यह मैं नहीं जानता? बर्दवान में भी सब लोग यह जानते हैं। मैं आप का अपमान करूँ, यह कभी सम्भव है? आपका जूता ढोने का अवसर मुझे मिले तो मैं अपने को कृतार्थ समझूँ। आपकी बात न सुनूँगा तो किसकी सुनूँगा?"

तारिणी बाबू—नहीं, नहीं, मेरी बात क्या अब तुम्हें रुचेगी?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम अपने घर जाओ। तुम्हारी माँ ने जो मेरा अपमान किया है वह घर जाकर सुनो। उसने झाड़ू मार कर मेरे आदमी को निकाल दिया है। इससे बढ़ कर मेरा अपमान और क्या होगा। तुम्हारे पिता मित्र महाशय मेरा सम्मान करना जानते थे। उनकी विधवा मेरा सम्मान करना क्या जानेगी? विपत्ति के समय अन्न-वस्त्र देकर जिसके मैंने प्राण बचाये, वह मेरा ऐसा अपमान करे? अच्छा देखूँगा, कहाँ का पानी कहाँ जा गिरता है?"

गोपाल—"यह क्या कहा जाता है? मेरी माँ परम दरिद्रिणी है। वह धनाढ्य मल्लिक-वंश का अपमान क्यों करेगी? बात क्या है, साफ़ साफ़ कहिए?"

तारिणी बाबू—"साफ़ साफ़ कहने से क्या अब तुमसे भी अपमानित होना है। नहीं, नहीं, अब उस बात को जाने दो। कहने से क्या होगा। तुम अब बड़े आदमी बने हो, तुम्हारी इज़्ज़त अब बढ़ गई है। मैं छोटे खानदान का आदमी। क्या तुम अब मेरी ओर नज़र उठा कर देखोगे? या मेरे साथ सम्बन्ध करोगे?"

गोपाल—"क्या कहा? आप के साथ सम्बन्ध? इससे बढ़ कर मेरा सौभाग्य और क्या होगा? यह दरिद्र आपके हाथ से एक मुट्ठी भिक्षा पाने में अपनी प्रतिष्ठा समझता है। क्या ऐसा सुअवसर हाथ आवेगा कि हम आपके सम्बन्धी कहलाने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे?"

मीठी बात से देवता भी सन्तुष्ट होते हैं, तारिणी बाबू का चित्त कुछ द्रवित हुआ, उन्होंने अपने नौकर को पुकार कर कहा, "अरे मोहन, तम्बाकू दे जा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(गोपाल की ओर देख कर) बैठो भाई, बैठो, बहुत दूर से आये हो। मालूम होता है, अभी तुम अपने घर भी नहीं गये हो, सीधे यहीं चले आ रहे हो। तुम्हारे जैसे विनीत लड़के को देख कर मेरा मन बहुत प्रसन्न हुआ।"

गोपाल—"जी, नहीं, मैं खड़ा ही रहूँगा, जब तक आप कुछ आज्ञा न देंगे, जब तक मैं आपकी आज्ञा का पालन न करूँगा तब तक मैं न बैठूँगा, और न अन्न-जल ग्रहण करूँगा। तारिणी बाबू के चेहरे पर प्रसन्नता की झलक दिखाई देने लगी। उनका हृदय आनन्द से भर गया, उन्होंने गोपाल का हाथ पकड़ कर बिठलाया और कहा, तुम चिन्ता मत करो, बात कुछ नहीं है तुम्हारे पिता मित्र महाशय के साथ मेरा जैसा प्रेम था वह तो तुम जानते ही हो।"

गोपाल—"जी हाँ, मैं बखूबी जानता हूँ।"

तारिणी बाबू—"विपत्ति के समय उनको सहायता देने वाला इस गाँव में प्रायः कोई नहीं था। वह बराबर मेरे ही पास आते थे। यह भी तो तुम जानते ही हो।"

गोपाल—"हाँ, सब जानता हूँ।"

तारिणी बाबू—"उनकी मृत्यु के अनन्तर तुम्हारी माता को समय समय पर सहायता देकर, बर्दवान में साहिबों के पास तुम्हारी सिफ़ारिश करके तुमको नौकरी दिलाकर और तुम्हारी छोटी बहन को वस्त्र इत्यादि देकर तुम सबों के साथ जो कुछ मैंने भलमनसी की, यह सब बात भी तो तुम जानते ही हो। अपने मुँह से अपनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रशंसा करना ठीक नहीं, किन्तु मैंने मित्र-वंश के लिए क्या नहीं किया, यह भी तुम अच्छी तरह जानते हो।"

गोपाल—"हाँ, जानता हूँ।"

तारिणी बाबू—"कहो तुम्हारी सहायता क्यों न करूँगा। तुम्हारा वंश पवित्र है, तुम्हारा आचरण अच्छा है, तुम्हारा शील स्वभाव अच्छा है। तुम्हारे लिए कुछ न करूँगा, तो क्या अपने नास्तिक भाई के जामाता के लिए या अपने पागल दामाद के लिए करूँगा। हाँ भाई, इस घोर कलिकाल में भी धर्म है, अब भी सूर्य्य पूरब ओर उदित होता है! अब भी तुम्हारे जैसे सद्वंश की उन्नति अवश्यंभावी है।"

गोपाल—"यह आपकी कृपा है।"

तारिणी बाबू—"मेरे मन में इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि मैंने जो कुछ धन सम्पत्ति इकट्ठी की है, जो कुछ मेरे पास रुपये-पैसे हैं, घर-बार, जगह ज़मीन, गहने इत्यादि हैं, ये सब किसको दे जाऊँगा। मेरी लड़की उमा हम सबों को रुलाकर चली गई। मेरी स्त्री भी उसी के शोक से मृत्यु-शय्या पर पड़ी है। मैंने सोच विचार कर देखा, धर्म्मपुर गाँव में मान, मर्य्यादा, कुल, शील और सद्व्यवहार में मित्र-वंश ही श्रेष्ठ है। इसलिए यदि मित्र-वंश के साथ कोई सम्बन्ध स्थिर हो जाय तो जो कुछ मैं छोड़ जाऊँगा वह सब तुम्हारा ही होगा। न तुम्हारा, तुम्हारी बहन का ही सही। वह और तुम क्या दो हो?"

गोपाल बुद्धिमान् था, वह बात चीत के ढँग से तारिणी बाबू का मतलब समझ गया। उसने मन ही मन सब बातों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का फैसला कर डाला। लड़की को पसन्द हो या न हो, इससे क्या? लड़की का जन्म होता है पुरुष को सुख देने के लिए और वंश की उन्नति के लिए। लड़कियों को सुख हो या न हो, उस पर कौन ध्यान देता है? अगर बहन को मल्लिक-वंश में दे डालने से मित्र-वंश की श्री-वृद्धि हो और मर्यादा बढ़े तो यह परम मङ्गल है। प्रकट में कहा—"महाशय, आप जो आज्ञा कर रहे हैं यह तो केवल आपकी कृपा है। इससे बढ़ कर मेरे सम्मान का विषय और क्या होगा? हम सब बड़े ही दीन-दुखी हैं, आप के साथ सम्बन्ध होने से हमारे लिए यह संसार स्वर्ग हो जायगा।"

तारिणी बाबू—"अहा, तुम्हारे सदृश विनीत और मधुरभाषी लड़का आज कल और कोई देखने में नहीं आता। मैं तुमको हृदय से प्यार करता हूँ। मेरे पास जो कुछ धन-सम्पत्ति है, वह सब तुम्हारी ही है। मैं सब धन तुमको देने का संकल्प कर चुका हूँ। तुम्हारे वंश की उन्नति हो, तुम्हारी बहन मेरे घर की गृहलक्ष्मी होकर घर की शोभा बढ़ावे, तुम्हारी माता चिरंजीविनी हो और तुम भी ब्याह करके अपने उजड़े घर को फिर से बसाओ।"

गोपाल बड़ी देर तक सिर हिला कर 'मैं तो, मैं तो,' कह कर आख़िर बोला—"हम तो आप के दास हैं। जब आपकी आज्ञा होगी तभी मेरी बहन आपकी दासी होगी। परन्तु हमारी ऐसी अवस्था कहाँ कि आपके साथ सम्बन्ध करें। पिता के टूटे फूटे घर में हम लोग रहते हैं, मरम्मत न होने के कारण वह मकान खँडहर सा हो गया है। तब जो आपने उजड़े घर को बसाने की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बात कही है, यह क्या बिना आपकी कृपा के हो सकती है ? जब आप ने इन दीन जनों के प्रति दया-दृष्टि करके सम्बन्ध की बात स्वीकार की है तब जिसमें मेरा घर बसे, मेरे पुराने घर का जीर्णोद्धार हो, मैं आपका सम्बन्धी कहा कर लोगों में अपना परिचय दे सकूँ, इसका उचित प्रबन्ध आप अवश्य ही कर दीजिए।"

बुद्धिमान् तारिणी बाबू ने देखा, गोपाल ने इतने दिन बर्दवान में रह कर सिर्फ़ ठेकेदारी का ही काम नहीं किया है, साथ साथ चतुराई भी सीखी है। सांसारिक व्यवहार में वह पूरा पण्डित हो गया है। बहन को बेच कर वह कुछ रुपया हथियाना चाहता है। रुपये की बात निकल आने से नाज़िर महाशय की छाती धड़क उठी। किन्तु साथ ही लड़की का वह देखा हुआ चेहरा भी उन्हें स्मरण हो आया। उस बालिका के अधरामृत पान के लिए वृद्ध की जीभ से लार टपक पड़ी। उन्होंने हास्य से भरे स्वर में कहा—"कहो, कहो, तुम्हारा जो मतलब हो, वह साफ़ साफ़ कहो। जब मैं अपना सर्वस्व तुमको देने ही बैठा हूँ, तब तुम्हारी इच्छा हो आज लो, चाहे दस दिन के बाद लो। मुझे उसमें क्या उज्र है ?"

गोपाल—"आज्ञा हो तो दास कुछ अर्ज़ करे। आप सब जानते ही हैं। मेरी हालत क्या आपसे छिपी है ? मेरा ईंट का घर चारों ओर से गिरा पड़ा है, जो आपके चरणकमल की धूल से पवित्र होगा—उस घर की फिर से मरम्मत कराना होगा। बाग़ की पोखर का भी, जिसमें आप स्नान करेंगे, जीर्णोद्धार करना होगा। मेरे घर में कोई सामग्री नहीं, आपके जाने पर बैठने को आसन दूँगा, उसका भी उपाय नहीं। चौकी, खाट, दरी, बिछौना ये सब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी चाहिएँ। इसके अतिरिक्त एक बात और यह कि आपके समान जामाता पाकर मेरी माता चांदी के बर्तन न रहने से आपको कांसे पीतल की थाली में कैसे खिलावेगी ? आपके साथ सम्बन्ध होने से आपको हम सबों की सम्मानरक्षा का कुछ ख़याल करके चलना होगा। कर्तव्यपालन पर विशेष ध्यान रखना होगा। मेरे जितने बन्धु-बान्धवगण हैं, उन सबों को सन्तुष्ट करना होगा। ये सब बातें क्या आपके सदृश दीर्घदर्शी विज्ञ पुरुष के निकट मेरे समान अज्ञानी लड़के के मुँह से अच्छी लगती हैं ? आप स्वयं विचार कर देखें, मैं आपसे क्या कहूँगा ? पांच हज़ार रुपये से कम में यह सब कार्य सम्पन्न होगा, ऐसा तो नहीं देख पड़ता।"

वैज्ञानिक लोग कहते हैं, पृथ्वी के गर्भ में द्रव पदार्थ भरे हैं, जब भाप की अधिकता होती है तब ज्वालामुखी पहाड़ से फूट कर वह बाहर निकल पड़ते हैं। रुपये का ज़िक्र होने के साथ तारिणी बाबू के पेट का क्रोध खौलने लगा। किन्तु उसको वे किसी तरह दबाये बैठे थे। वे यही सोच कर स्थिर थे कि दस पन्द्रह सौ रुपये के भीतर ही यह काम सम्पन्न हो जायगा। ग़रीब आदमियों के लिए इतना रुपया क्या कम है ? इतने रुपये पर वह ख़ुशी से अपनी लड़की बेच डालेगा। किन्तु जब गोपालु ने पांच हज़ार रुपये की बात सुनाई तब तो तारिणी बाबू की क्रोधाग्नि भड़क उठी। उन्होंने कठोर स्वर में कहा—"क्या कहा तुमने, पांच हज़ार रुपया ? छोटा मुँह, बड़ी बात। बात वैसी ही बोलनी चाहिए जो सब को रुचे। क्या मैं तुम्हारे वंश को नहीं जानता ? तुम्हारे दादा भीख मांग कर मरे हैं, तुम्हारे बाप जन्म भर भीख मांगते रहे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब तुम भी भीख माँगने लगे हो । पाँच हज़ार रुपया तुम्हारे लिए कुछ चीज़ ही नहीं । तुम्हारे वंश में किसने पाँच हज़ार रुपया देखा है ? तू ज़रा सा का लड़का, मैंने ही तुझे पाल पोस कर बड़ा किया है, वही तू आज मुझसे गुस्ताख़ी करने बैठा है ? मेरे सामने ऐसी बात बोलते तुझे कुछ भी लज्जा या भय नहीं हुआ । ऐसे स्वार्थी के साथ सम्बन्ध करना नरक भोगना है । तेरे जैसे कुलाङ्गार के मुँह देखने में भी पाप होता है ।"

नाज़िर महाशय का मिज़ाज गरम देख गोपाल शान्त भाव से उन्हें प्रणाम करके चुपचाप चल दिया ।

कहना बाहुल्य मात्र है, नाज़िर का इस प्रकार बिगड़ना वृथा था । बुढ़ापे में बालिका-विवाह की लालसा होने से क्या मन की गति रोके रुक सकती है ? बूढ़े नाज़िर जब तब पोखर के घाट पर उस बालिका को देखने के लिए जाते थे । देखते ही उनका जी अनुराग से भर जाता था । उसके विशाल नेत्र, टेढ़ी भौं, लाल अधर और काले भँवर से खुले केश देख कर वृद्ध का धैर्य्य लुप्त हो जाता था । उस बालिका का स्वरूप उनके हृदय में अङ्कित हो गया । उसकी छवि से मोहित होकर उन्होंने मन ही मन निश्चय किया— "रुपया यद्यपि मेरे शरीर का लोहू है, तथापि लोहू देकर भी इस कन्यारत्न का लाभ अवश्य करूँगा । मित्रवंश दुर्दान्त है, इसमें सन्देह नहीं । किन्तु किसी ढंग से उस लड़की को एक बार अपने घर ले आ सकूँगा तो सूद समेत असल रुपया उस मूंज़ी से वसूल कर लूँगा । मित्र घराने की ईंट ईंट न बेचवा डाली तो मेरा नाम तारिणीप्रसाद नहीं ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कई दिनों तक लेन देन की बातचीत होती रही। तारिणीप्रसाद की ओर वाले ने दो हज़ार, ढाई हज़ार और अन्त में तीन हज़ार रुपया तक देना स्वीकार किया। परन्तु गोपाल ने कहा—"हम बहुत ग़रीब हैं, तारिणी बाबू हम पर दया न करेंगे तो कौन करेगा?" मन में कहा—"बुड्ढे को अपनी उम्र सूझती ही नहीं, कुछ दिन में काल का कलेवा होगा। बूढ़े वयस में दूलहा बनने का शौक़ हुआ है तो रुपया न गिनेगा। जैसे होगा, मैं उससे बिना पाँच हज़ार रुपया लिये न रहूँगा। जब उसे ब्याह करना मंज़ूर है तब वह नाक रगड़ कर रुपया देगा।"

आख़िर नाज़िर बाबू ने चार हज़ार रुपये तक देना स्वीकार करके अपने दूत से कह दिया—"यदि इतने पर भी वह राज़ी न हो तो सनातनपुर के वसु महाशय के घर में जो लड़की है, वह भी देखने में अच्छी है, उसकी उम्र भी दस बारह वर्ष की है। उसके यहाँ जाकर बातचीत करना। जिसमें इसी महीने में यह काम हो जाय, सो ठीक करके आना।"

गोपाल ने देखा, नाज़िर चार हज़ार रुपये तक तो पहुँच ही गये हैं। अब उनकी सम्मानरक्षा के लिए कुछ उनकी भी बात रख लेना उचित है। इसलिए वह उतने ही रुपये पर राज़ी हो गया। परन्तु विधि-व्यवहार के लिए सौ पचास करके पाँच सौ रुपया उसने और माँग लिया। नाज़िर ने एक दो कर साढ़े चार हज़ार रुपये गिन दिये। गोपाल ने पाँच सौ रुपये में ही ब्याह-सम्बन्धी सब कामों का प्रबन्ध ठीक कर लिया। चार हज़ार रुपया उसने अपने नाम से महाजन की कोठी में जमा कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पाँचवाँ परिच्छेद

र्म्मपुर में चारों ओर धूम मच गई। सब जगह इस बात की चर्चा होने लगी कि नाज़िर बाबू दूसरा व्याह करेंगे। गाँव में जो लड़की सब से अच्छी है उसी को वे अपनी प्राणेश्वरी बनावेंगे। मित्रवंश की प्रतिष्ठा बढ़ावेंगे। मल्लिक वंश को उज्ज्वल करेंगे। देश भर के रईस एकत्र होंगे। दीन-दुखियों को खाना कपड़ा मिलेगा। इस तरह की बात घर, बाहर, गली, रास्ते में सर्वत्र होने लगी।

कृषक लोग मल्लिकजी के घर के पास से होकर जाते समय खड़े होकर दो एक शुभ वार्ता सुन लेते थे तब आगे बढ़ते थे। स्त्रियाँ घाट से पानी लेते समय मित्र महाशय के घर के पास घड़ा रख कर एक बार लड़की को ज़रूर देख लेती थीं।

तारिणी बाबू की बैठक सवेरे से दोपहर दिन तक और दोपहर दिन से पहर रात तक लोगों से भरी रहती थी। कितने ही भाई-बन्धु, कितने ही सलाह देने वाले, समाज के प्रधान व्यक्ति और कितने ही पण्डित गुणी आकर बैठते थे। दिन रात ख़ुशामदी लोगों के साधुवाद से तारिणी बाबू का कमरा गूँजता रहता था और नाज़िर बाबू की प्रशंसा की झड़ी लगी रहती थी। समाज के नेता कहते थे—"यह काम तारिणी बाबू ने बहुत सोच समझ कर किया है। इनके ऐसा विज्ञ, दूरदर्शी कहीं देखने में नहीं आता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लक्ष्मी और सरस्वती दोनों ही की इन पर कृपा है। विद्या और बुद्धि के बल से बड़े बड़े हाकिमों के यहाँ इनका जितना आदर मान है उतना कितने ही राजा और रायबहादुर को भी मिलना दुर्लभ है। इससे बढ़ कर इनकी बड़ाई और क्या हो सकती है? धर्म्मपुर के दीन-दुखियों पर जब कभी कोई आपदा आ पड़ती है तब तारिणी बाबू के सिवा उनकी सहायता करने वाला दूसरा कौन है? तारिणी बाबू चिरंजीवी हों, हमारे समाज को क़ायम रक्खें, और शीघ्र पुत्र का मुख देख कर परम सुख भोगें।"

पण्डितगणों ने सत्य को साक्षी देकर कहा—"तारिणी बाबू की बुद्धि सदा ही धर्म्म में रहती है। आप बड़े ही धर्म्मनिष्ठ हैं। यह काम आपके योग्य ही हुआ है। अच्छा कुल-शील और सुलक्षण कन्या देख कर व्याह की बात स्थिर की है। शास्त्र के अनुकूल काम करके हिन्दू-धर्म्म की रक्षा की है। आज कल जैसा समय है विधर्म्मी लोग क्या नहीं करते हैं। कोई युवती कन्या की खोज में लगा रहता है, कोई विधवा से व्याह करना चाहता है, कोई अपनी जाति को छोड़ कर दूसरी जाति की लड़की से व्याह करता है। छी! छी! ऐसे पतित समाज को तारिणी बाबू का धर्म्माचरण देखकर शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। तारिणी बाबू ने केवल पुत्र प्राप्ति की इच्छा से नौ वर्ष की सुशीला लड़की को स्वीकार करके आज अपनी जाति का नाम उज्ज्वल किया और समाज के गौरव को बढ़ाया।"

तारिणी बाबू के बन्धुगणों ने कहा—"आप नौ वर्ष की बालिका को क्यों अङ्गीकार न करेंगे? तारिणी बाबू की अभी उम्र ही क्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुई है। अभी तो चालीसवाँ वर्ष भी आप का पूरा नहीं हुआ है। यही तो विवाह का उपयुक्त समय है। इनका सुन्दर मुख और सुन्दर शरीर देख कर किस की आँखें तृप्त नहीं होतीं? आपके स्वरूप की समता कोई युवा पुरुष तो कर ले? बहुत दिन तपस्या करने से लड़की ऐसा सुन्दर वर पाती है।"

यह सब बात सुन कर तारिणी बाबू का चेहरा खिल गया। उनका सारा शरीर आनन्द से पुलकित हो गया। वे छिप कर बार बार अपना मुँह दर्पण में देखने लगे। ख़िज़ाब लगाने के कारण उनके पके बाल बिलकुल काले हो गये थे। किसका मजाल कि एक भी पका बाल उनके सिर से बाहर निकाल दे। वे नाई को दूना वेतन देकर रोज़ रोज़ हजामत बनवाते थे। देखने से ऐसा ही जान पड़ता था जैसे अभी मूछ डाढ़ी निकली ही नहीं हैं।

सुनार रोज़ दो तीन बार तारिणी बाबू के घर की फेरी लगा जाता है। पुराना गहना तोड़ कर नया गहना तैयार करने की उसे फ़र्माइश हुई है। उस नये भूषण से प्रेमिक तारिणी बाबू नववधू का अङ्ग विभूषित करेंगे। जब यह बात उनके मन में आती है तब वृद्ध का हृदय आनन्द से नाचने लगता है। वे बालिका के सुन्दर ललाट पर बेनाबन्दी पहनावेंगे। उसकी दोनों बाँहों में बड़े प्यार से बिजायठ पहनावेंगे, उसके नवीन उरोजों के ऊपर चन्द्रहार लटकावेंगे, और उसकी कमर में किंकिणी की शोभा देखकर अपने नेत्र को सफल करेंगे! इस बात को मन में सोचकर वृद्ध का शरीर कण्टकित हो जाता था। मालूम होता है, बूढ़ा प्रेम में पागल हो गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तारिणी बाबू के घर आज लोगों की बड़ी भीड़ है। बन्धु-बान्धवों से कोई जगह ख़ाली नहीं है। दासी और दासगण लाल कपड़े पहन कर दौड़ धूप कर रहे हैं। बाज़ार से टोकरी भर भर कर साग भाजी, बर्दवान से तरह तरह की मिठाई और कलकत्ते से फल मेवे इत्यादि संगृहीत होकर भाण्डार-घर में भरे गये हैं। घर के भीतर दिन रात इन सब चीज़ों का संग्रह हो रहा था। बाहर में दिन रात बाजे बजते थे, और तमाशबीनों की भीड़ लगी रहती थी। सारे गाँव में आनन्द दिखाई पड़ता था।

सुमित्रा और सुधा परस्पर गले लगकर ख़ूब रोई। एक दिन सुमित्रा छिप कर साँझ को चाची के घर गई और उसे मृत्युशय्या पर पड़ी देख बहुत रोई। किन्तु आज आनन्द का दिन है। सभी लोग आनन्द में निमग्न हैं। दुःखिनी का रोना कौन सुनता है? कौन किसे देखता है। ख़ूब ज़ोर से ढोल पीटो, रोशन चौकी बजाओ, ख़ूब हँसो, कूदो, आज बड़ी ख़ुशी का दिन है। आज महामान्यवर बूढ़े नाज़िर बाबू का शुभ विवाह है।

इधर कन्या के घर में भी आज लोगों की कुछ कम भीड़ नहीं है। मित्र-घराना किसी समय गाँवों के बड़े लोगों में गिना जाता था। धर्मपुर में और उसके आस पास के गाँवों में उनके आत्मीय जनों का अभाव न था, बन्धुबान्धवों की कमी न थी। परन्तु सन्ध्या हो जाने पर जैसे पक्षिगण अपने अपने घोंसले में छिप रहते हैं, वैसे ही मित्र-वंश के दारिद्र्य और दुरवस्था के समय बन्धुबान्धवगण अपने अपने घर में जा छिपे। उन लोगों ने एकदम मित्र-परिवार की खोज ख़बर लेना छोड़ दिया। फिर सूर्य्य का उदय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होने से जैसे पक्षी बड़ी ख़ुशी के साथ कलरव करके आकाश को ढक लेते हैं, उसी तरह आज मित्र-परिवार के सौभाग्य-सूर्य का उदय देख चारों ओर से बन्धुवर्ग ने आकर सुभद्रा की माँ के पुराने घर को ढक लिया।

शिवदत्त की माँ सम्बन्ध में सुभद्रा की मौसी होती थी। बड़े धनाढ्य घर में वह ब्याही गई थी। उसके स्थूल शरीर पर सोने चाँदी के ज़ेवर लदे हैं। उसके चेहरे पर प्रसन्नता झलक रही है। इतने दिनों बाद आज उसे बहन का घर याद आया है। वह पालकी करके बहन के घर आई है। घर के भीतर प्रवेश करके वह हँसते हँसते बोली—"बहन, मेरे लिए जैसा शिवदत्त, वैसी ही सुभद्रा है। इतने दिनों तक बेटी सुभद्रा को देखने का अवसर न मिला, रोज़ रोज़ आने को तरसती थी, परन्तु मेरे घर में कामों की इतनी अधिकता रहती है जो कह नहीं सकती, क्या सहज ही मेरा कहीं जाना आना हो सकता है? आज मैं घर के सब कामों को छोड़ छाड़ कर बेटी सुभद्रा को देखने आई हूँ। भगवान् इसे दीर्घायु करे, ससुराल में गृहलक्ष्मी होकर रहे, शीघ्र चाँद सा सुन्दर लड़के का मुख देखे। मल्लिकजी के वहाँ मैं बराबर जाती आती हूँ, बेटी सुभद्रा को कभी कभी अवश्य देख आऊँगी। हम उसे देखने न जायँगी तो कौन देखने जायगा? माँ और मौसी में क्या कुछ भेद है? माँ मौसी बेटी की खोज ख़बर न लेगी तो दूसरे को क्या गरज़ पड़ी है?"

रमेश की माँ सम्बन्ध में सुभद्रा की फूफी होती थी। उसका ब्याह एक सामान्य गृहस्थ के घर में हुआ था। वह देह से दुबली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी। स्वभाव उसका बहुत रूखा था। भाई की मृत्यु होने के बाद वह कभी भतीजे के घर न आई। तथापि सुभद्रा की माँ ने अन्न वस्त्र के कष्ट से दुखी होकर उससे एक बार पाँच रुपया उधार लिया था। वह भी उसने सूद सहित कौड़ी कौड़ी उससे वसूल कर लिया। आज उसी फूफी के रोम रोम से स्नेह टपका पड़ता है। वह बड़े उत्साह के साथ सुभद्रा का बाल बाँध रही है, गहने पहना रही है, और भी कितने ही प्रकार के काम कर रही है।

उसने कहा—"अगर हम तुम्हारा काम न करेंगी तो दूसरा कौन करेगा? हा! आज भैया जीते रहते तो उन्हें कितनी ख़ुशी होती। वे जब कोई काम करते थे, ज़रूर मुझे बुला लेते थे और बिना मेरी राय लिये कोई काम न करते थे। मेरे बिना क्या उनके घर का कोई काम चलता था? भैया जैसे धर्म्मात्मा थे, बेटी सुभद्रा भी ठीक वैसी ही सुधर्म्मा हुई। ऐसी भोली लड़की कहीं देखने में नहीं आती। इसका ब्याह बड़े घर में न होगा तो किसका होगा? बेटी जीती रही तो इसे किसी बात का दुःख न रहेगा। भाँति भाँति के गहने पहनेगी, पालकी पर चढ़ेगी। भगवान् इसका सुहाग भाग बढ़ावें। स्त्रियों को इससे बढ़ कर और क्या सुख है? बेटी सुभद्रा का सुख देख कर हम सब भी सुखी होंगी।"

श्याम की माँ सुभद्रा की चाची थी। उसके पति के साथ सुभद्रा के पिता का ज़मींदारी के सम्बन्ध का झगड़ा बहुत दिनों से चला आता था। सुभद्रा के पिता की मृत्यु के अनन्तर श्याम की माँ ने सुभद्रा की माँ सौदामिनी से उस झगड़े का भरपूर बदला ले लिया। वासिलात की नालिश दायर करके सौदामिनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की एक एक वस्तु नीलाम करा ली। वह अपने लड़कों के हाथ में मिठाई देकर कहती थी, "जाओ, सुभद्रा को दिखा कर खाना।" सौदामिनी बड़ी सहनशीला थी। वह श्याम की माँ का सब अत्याचार चुपचाप सह लेती थी और अपनी अभाग्यता पर रोती थी। परन्तु इस संसार में रुपये की क्या ही विचित्र शक्ति है। सौदामिनी के सौभाग्य का उदय होते ही श्याम की माँ सब शत्रुता भूल गई। फिर तो सौदामिनी के प्रति उसकी मोह-माया उमड़ पड़ी। वह सौदामिनी के घर आकर बोली—"बहन, वह पुरानी बात क्या भूलती है? मेरा और तुम्हारा व्याह एक ही साल में हुआ। मैं और तुम दोनों सगी बहन की तरह रहती थीं। अहा! तब की बात क्या कहूँ। मेरा और तुम्हारा एक मन और एक प्राण था। गोपाल जब तुम्हारे पेट में था तब श्यामलाल का जन्म हुआ। मेरे लिए जैसा श्याम वैसा ही गोपाल, मैं दोनों को बराबर समझती हूँ। भगवान् गोपाल को चिरंजीवी करें। बेटा पढ़ लिख कर बड़ा ही चतुर निकला है। चार पैसा कमाने भी लगा है। वह मित्रवंश का ज़रूर नाम रक्खेगा। बेटी सुभद्रा का बड़े घर में व्याह होता है। बड़े नामी ग्रामी पुरुष की स्त्री होगी। भर पेट सोने का ज़ेवर पहनेगी। सुख से रहेगी, किसी बात का इसे कष्ट न होगा। इसका सुख देख कर हम सबों के नेत्र तृप्त होंगे।"

इस प्रकार आत्मीय लोगों के यत्न, परिचर्य्या, आशीर्वाद और मङ्गलकामना से सुभद्रा की माँ सौदामिनी बड़ी ही .खुश हुई। बन्धुबान्धवों से सुभद्रा का घर भर गया। कितने ही लोगों ने तो बिना बुलाये उसके घर आने की कृपा की। जितनी कृपा अभी वे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोग दिखला रहे हैं, इसके पूर्व यदि इस कृपा की चौथाई भी उस पर दिखलाते तो सौदामिनी भोजन-वस्त्र के लिए सुधा और सुमित्रा का द्वार न झाँकती। सुभद्रा अपनी माँ की अपेक्षा विशेष चतुरा थी, उसकी बुद्धि बाप की ऐसी थी। वह बूढ़ी स्त्रियों के समीप कुछ न बोलती थी। उन सब बूढ़ी स्त्रियों की ममता और प्रीति पगी बातों से उस लड़की की आँखें डबडबा आती थीं। एक दिन वह पोखर के घाट पर आई और आँखें पोंछ कर अपनी सखी सहेलियों के पास ख़ूब खिलखिला कर हँसी। सखियों ने कहा—"क्यों री! बड़े घर में ब्याह होगा, इसकी बड़ी ख़ुशी है, आनन्द की हँसी रोके नहीं रुकती!"

सुभद्रा—"नहीं, सखी, उसके लिए नहीं हँसती।"

सखीगण—"तो किसके लिए हँसती हो, साफ़ साफ़ क्यों नहीं कहती?"

सुभद्रा—"अच्छा कहती हूँ, सुनो—"ये जो मेरी, मौसी, फूफी, और चाची सब आकर इकट्ठी हुई हैं, उनका विशेष अपेक्षाभाव देख कर हँसती हूँ।"

सखी—"हाँ री, हँसी का कारण तो तुमने ख़ूब सोच कर निकाला। हमी से चालाकी! ब्याहशादी में किसके घर नातेदार नहीं आतीं? वे सब तुमको प्यार करती हैं, तुम्हारा भला मनाती हैं, इसमें हँसने की कौन सी बात है?"

सुभद्रा—"नहीं, नहीं, यह बात नहीं है। मौसी और ताई आदि का विशेष यत्न देख कर मुझे एक पुरानी कथा याद आ गई, उसी से मैं एकाएक हँस पड़ी। वह कथा मैं तुमसे कहती हूँ। सुनो।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक गाँव में दो भाई रहते थे। बड़ा भाई अमीर था, छोटा भाई बहुत ग़रीब। इस लिए बड़े भाई की स्त्री की चाल अमीरी से भरी थी। वह ग़रीब देवरानी को किसी त्योहार पर भी न बुलाती न उससे कोई बात पूछती थी। भेंट होने पर उनकी ओर आँख उठा कर देखती तक न थी। उसका ग़रीब देवर बड़े दुःख से समय बिताता था और अपने बाल-बच्चे को दुखी देखकर जब तब रोता था। जब उससे लड़कों का दुःख न देखा गया तब वह घर छोड़ कर रोजग़ार की खोज में चला।

किसी शहर में जाकर उसने नौकरी और बनज करके बहुत रुपया हासिल किया। सात वर्ष के बाद घर आकर उसने पक्का मकान बनवाया, एक सुन्दर तालाब खुदवाया, और कुछ ज़मींदारी ख़रीद की। थोड़े ही दिनों में वह अमीर बन गया और बाल-बच्चों के साथ सुखपूर्वक रहने लगा।

उसकी यह उन्नत अवस्था देख कर जिठानी ने देवरानी को बुला लाने के लिए पालकी भेजी। जब वह जिठानी के घर आई तब जिठानी ने उसे बड़े प्यार से गले लगा कर एक अच्छा आसन बैठने को दिया। एक दासी ने आ कर उसके पैर धो दिये। जब वह मुँह हाथ धो कर बैठी तब जिठानी ने स्वयं चाँदी की थाली और कटोरे में दाल भात और तरकारी तथा तश्तरी में तरह तरह की मिठाई सजा कर उसके आगे ला कर रक्खी। सुवासित जल से भरा चाँदी का लोटा और गिलास उसके पास रख दिया।

वह भोजन की सब सामग्री के चार भाग करके आसन से उठ हाथ धो अलग जा बैठी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिठानी ने कहा—"यह क्या ? तुमने कुछ खाया नहीं। ये चार भाग क्यों ?"

देवरानी ने कहा—"बहन, जिनके लिए तुम भोजन की सामग्री परोस कर लाई हो, उन चारों को बराबर बराबर करके बाँट दिया। यह तो तुम मेरे लिए लाई नहीं थीं।"

जिठानी—"तुम्हारे लिए नहीं तो किसके लिए ?"

देवरानी—"यह एक भाग मेरे नये मकान के लिए, एक भाग मेरे पोखर के लिए, एक भाग मेरी ज़मींदारी के लिए, और एक भाग मेरे सुख के साथियों के लिए। तुमने यह सब देखकर ही आज खाने पीने की इतनी सामग्री तैयार कराई है। उन्हीं सब को यह सब चीज़ दे डालो। यदि आप की इच्छा मुझे कुछ खिलाने की होती तो जब मैं ग़रीबी हालत में एक एक दाने को तरस रही थी, जब मेरे बाल बच्चे भूखों मर रहे थे तब तुम एक दिन भी मुझे या मेरे बाल बच्चों को बुला कर खिलाती।"

जिठानी चुप हो रही। इतना कह कर सुभद्रा फिर हँसने लगी।

सूर्यास्त हुआ। बत्ती जलाई गई। मङ्गलवाद्य बजने लगे। बूढ़ी स्त्रियों के आगमन से आँगन भर गया। युवती स्त्रियाँ एक ओर बैठ कर परस्पर हास-परिहास की बातें करने लगीं।

आज दासीगणों की चहल पहल से सौदामिनी के घर की अपूर्व शोभा का क्या पूछना है। भाँति भाँति के उत्सव मनाये जा रहे हैं। कन्या के अभिभावक गोपाल बाबू बाहर सभामण्डप की तैयारी कर रहे हैं। शामियाना खड़ा कराया जा रहा है। फ़र्श बिछाया जा रहा है। बत्ती जलाई जा रही है। गोपाल बाबू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमर में चादर लपेटे बड़ी मुस्तैदी के साथ सब कामों की देख-भाल कर रहे हैं। भीतर विवाहमण्डप में व्याह का सब सामान ठीक किया जा रहा है। दो एक सुहागिन कन्या के शृङ्गार में लगी हैं। कोई उसे विवाहसमय के भूषण-वसन पहना रही है, कोई शृङ्गार कर रही है। कुमारिका मुँह नीचा किये गम्भीर भाव धारण किये बैठी है उसका हृदय आनन्द से उछल रहा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छठा परिच्छेद

रिणी बाबू सिर पर सेहरा डाले अपने विशाल दीर्घकाय को ले कर हिमालय पहाड़ की तरह अटल भाव से विवाहमण्डप में बैठे हैं। पत्थर के कोयले से काले स्थूल शरीर पर लाल कपड़ा एक अपूर्व शोभा दे रहा है। पचास वर्ष के बूढ़े दूल्हे के माथे पर मौर की शोभा देखने योग्य है। कहाँ गये कविवर कालिदास! वे इस अद्भुत रूप का वर्णन करें; हम इसके वर्णन करने में असमर्थ हैं।

घर के भीतर लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी है। गाँवों के आस-पास के लोग कितने ही बुलाये कितने बे बुलाये आकर इकट्ठे हुए हैं। कायस्थ जाति के प्रायः सभी लोग उपस्थित हैं। घर के भीतर ज्यादा भीड़ औरतों की है। उनके मङ्गलगान और हास्यध्वनि से घर आनन्दमय हो रहा है।

एक नवयुवती झाँकी मार कर सखी से कह रही है, "सखी, यहाँ आओ, देखो, देखो, क्या वही दूल्हा है? अरे दादा! वह तो एक काला पहाड़ ही जान पड़ता है।"

दूसरी सखी बोली—"चुपचुप, ब्याह की रात में दूल्हे को कोई ऐसी बात कहता है? वर क्या देखने में बुरा है? सिर्फ़ रंग काला है, इससे क्या?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहली सखी—"रंग काला है इतना ही! इसके दोनों गाल तो पके बैंगन की तरह सूखे दीख रहे हैं।"

दूसरी सखी—"तुझे दूर से भली भाँति दिखाई नहीं देता। इनके गाल कुछ दिन में रसाल को भी जीत लेंगे।"

पहली—"इसके होंठ ने सुटाई में चिरागदान को भी जीत लिया।"

दूसरी—"तेरी नापसन्दगी से क्या? देखिओ, यही होंठ पाकर सुभद्रा धरती पर पैर न रक्खेगी। एक बार उसे ससुराल जाने दो। उसके सौभाग्य को कौन पावेगा?"

पहली—"बहन! इसकी दोनों आँखें भीतर को धसी हैं।"

दूसरी—"तू चुप न रहेगी। वृथा यह सब बात क्यों बक रही है?"

पहली—"अरे दादा, इस दूल्हे की तोंद कितनी बड़ी है? जान पड़ता है जैसे पानी भरी मशक हो।"

दूसरी—"तू क्यों दूल्हे की इतनी शिकायत कर रही है? सुभद्रा सुनेगी तो उसे रंज होगा। तू नहीं समझती। ऐसा विशाल शरीर देख कर हमारी सुभद्रा सब भूल जायगी।"

पहली—"बहन, यह क्या कहती हो, तुम्हें सूझता नहीं, वर के पैरों में बिवाई फटी है। बुढ़ापे के कारण इसके बदन का चमड़ा सिकुड़ गया है। भला इस बुड्ढे को इस उम्र में ब्याह करने की बात क्यों सूझी है? ज़रा लज्जा भी तो नहीं आती।"

दूसरी—"कुछ दिन में देख लेना, सुभद्रा इन पैरों की कितने यत्न से पूजा करती है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहली—"यह कभी न होगा। सुभद्रा अपने रँगे पैर इसके सिर पर रक्खेगी, यह मान सकती हूँ। मैं सुभद्रा को अच्छी तरह जानती हूँ। वह बाहर से बड़ी सीधी देख पड़ती है, परन्तु उसका हृदय छुरी सा पैना है।"

इतने में वर उठ खड़ा हुआ। मानो लोहे का पहाड़ सीधा खड़ा हुआ। स्त्रियाँ विवाहकालिक व्यवहार करने लगीं। उस समय के व्यवहार का वर्णन वही कर सकती हैं। हम नहीं जानते। औरतें दूल्हे को बीच आँगन में लाकर चारों ओर से उन्हें घेरे खड़ी हैं। उनके साथ हासपरिहास की बातें करती हैं। जिस प्रश्न का उचित उत्तर नहीं पातीं उस पर खिलखिला कर हँसती हैं। जैसे एक विशाल तमाल वृक्ष के चारों ओर छोटी छोटी चिड़ियाँ उड़ती हैं, वैसे ही दूल्हे के चारों ओर स्त्रियाँ घूमती हैं। किसी स्त्री ने उछल कर बड़ी चुटकी के साथ तारिणी बाबू के दोनों कान मल दिये। कोई हँसते हँसते उनकी विशाल तोंद पर दही का छाप लगा कर हट गई। किसी रसीली स्त्री ने दूल्हे की पीठ में हल्दी लगा कर मानो श्याम घन में विद्युत् की शोभा जड़ दी।

इसके अनन्तर व्याह की और भी रीतिरस्में होने लगीं, तारिणी बाबू का हृदय मारे खुशी के नाच उठा। जब यह प्रश्न पूछा गया कि वर कन्या दोनों में अच्छा कौन? तब सुभद्रा के पक्ष वालों ने भी मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया कि वर अच्छे हैं।

इसके बाद वर कन्या एक साथ बैठे; पुरोहित मन्त्र पढ़ने लगे। तारिणी बाबू की मोटी हथेली के ऊपर जब कन्या का कमलविनिन्दक कोमल हाथ स्थापित कर गोत्रोच्चारणपूर्वक कन्यादान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की विधि होने लगी तब तारिणी बाबू का सारा शरीर कण्टकित हो गया। उस समय वधू का मनोहर मुखमण्डल, मोती की बेना-बन्दी से सुशोभित ललाट और ताम्बूलरञ्जित मधुर अधर देख कर बूढ़े का होश जाता रहा।

ब्याह हो जाने के अनन्तर तारिणी बाबू को सब औरतें कोहबर में ले आईं। धर्मपुर की रमणियों को आज तक दूल्हे के वेष में ऐसा बूढ़ा वर देखने का अवसर न मिला था। इससे आज महल्ले भर की स्त्रियों से कोहबर का घर भरा है। सब दूल्हे के साथ मीठा परिहास करके हँसती हैं। एक मोटी सी प्रौढ़ा स्त्री ने तारिणी बाबू को हाथ पकड़ कर बैठाया और कहा—"अहा, आपके विरह से सुभद्रा बिचारी एकदम सूख गई है।" रसिक तारिणी बाबू ने एक बार आँख उठा कर चारों ओर देखा, सैकड़ों नवयुवतियाँ कुतूहलपूर्ण दृष्टि से उनकी ओर देख रही हैं।

कौतुकागार (कोहबर) के रंगरहस्य का वर्णन हम क्या करें? कोहबर के कौतुक का हाल हमें कुछ मालूम नहीं। कहाँ गईं रसिक सुन्दरीगण, उस रहस्य का हाल तुम्हीं सब जानती हो, तुम्हीं कन्या वर के परस्पर मिलन की परिपाटी जानती हो, जो उचित जानो करो। गोवर्द्धन पहाड़ के सदृश दीर्घकाय तारिणी बाबू की गोद में मैना पक्षी सी छोटी सुभद्रा को बिठाओ, हम रुख़सत होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सातवाँ परिच्छेद

ख के सपने की भाँति तारिणी बाबू की छुट्टी के दिन बीत गये। वे अछता पछता कर फिर अपने काम पर बर्दवान चले गये। बीच बीच में वे गाँव आकर नववधू को देख जाते थे और उसके दरस परस से अपने जीवन को सार्थक करते थे।

तीन चार वर्ष इसी तरह कट गये। तारिणी बाबू से अब आफ़िस का काम ठीक ठीक नहीं चलता। बुढ़ापा आ जाने के कारण उनका शरीर दुर्बल हो गया, मन निस्तेज हो गया। कामों में बराबर भूल हो जाती थी। हाकिम उनकी भूल से ख़फ़ा होकर कहते थे—"नाज़िर की उम्र पचास वर्ष से ऊपर हो गई। वह अब पेन्शन लेले इसी में बेहतरी है।" और भी अमलेगान आपस में काना फूसी करके कहते थे, "नाज़िर बाबू का मन तो नई ललना की ओर लगा रहता है, काम करेंगे कैसे ?"

नौकरी शीघ्र छोड़ी नहीं जाती। तारिणी बाबू ने हाकिम की झिड़की और आफ़िस के कार्यकर्ताओं की निन्दा सह कर भी और एक वर्ष काम किया। आख़िर लाचार हो पेन्शन ले घर आकर बैठे। तब सुभद्रा चौदह वर्ष की थी। नई जवानी से उसके अङ्ग की शोभा बेहद बढ़ गई थी। रोम रोम से यौवन का मद टपका पड़ता था। उसके रूप से सारा घर देदीप्यमान हो रहा था। सोने के ज़ेवरों से उसका सम्पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शरीर स्वर्णमय हो रहा था। धानी रङ्ग की साड़ी पहन कर वह रूप-गर्विता घर के भीतर बैठी है। उसे देख रूप के प्यासे वृद्ध तारिणी बाबू ने मन में सोचा, "नौकरी जाय चूल्हे में, अब मैं इस नई अङ्गना को लेकर अपना जीवन सार्थक करूँगा।" नववधू ने सोचा, "अच्छा हुआ जो बुड्ढा घर आ बैठा, अब इसे जो जो कहूँगी, करेगा। इसकी नाक में रस्सी बाँध कर इसे कोल्हू के बैल की तरह घुमाऊँगी। अब यह बुड्ढा मेरे हाथ से कहाँ जायगा?"

उमा की माँ रुग्ण होने के कारण घर का कोई काम-काज नहीं देख सकती थी। दोनों समय यथारुचि भोजन करती थी और बराबर अपने घर में पड़ी रहती थी। सुमित्रा प्रायः नित्य एक बार अपनी बीमार चाची को देखने आती थी। यह नववधू सुभद्रा को बहुत बुरा मालूम होता था। वह सुमित्रा को आते देख मुँह फेर लेती थी और लोगों से कहती थी—"वह जाति से बाहर हो गई है। उन सबों के आचार-व्यवहार बदल गये हैं। उनके बार बार हमारे यहाँ आने जाने से समाज में हमारी निन्दा होगी।"

जो दरिद्र-बालिका कुछ ही दिन पूर्व भूषण-वसन से विहीन होकर सुमित्रा के आँगन में रोज़ ही खेलने को आती थी, जो एक एक दाने को तरसती थी, वह अब बड़े घर की लक्ष्मी बन बैठी। नाते में भी वह सुमित्रा से बड़ी हो गई। उसकी ऐसी अभिमानभरी बात सुन कर सुमित्रा मन ही मन हँसी। चाची के घर जाना आना उसने एक तरह से बन्द कर दिया। उमा की माँ जब कभी बुला भेजती थी तभी जाती थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उमा की माँ के पास एक पुरानी दासी थी। वही उसकी सेवा में दिन-रात हाज़िर रहती थी। बड़ी सौत के ऊपर दासी की इतनी भक्ति देख कर नववधू उस पर बहुत रुष्ट हुई। वह मारे डाह के विशाल नेत्रों में जल भर कर दोनों लाल होंठ कँपाती हुई स्वामी के पास जा कर बोली—"मुझसे अब आपके घर का काम न चलेगा। काम करते करते मेरी हड्डी सूख गई। आपकी बड़ी रानी तकिये पर सिर दिये पड़ी रहती हैं। बिना टहलुनी के उनका काम ही नहीं चलता। आप उन्हीं को ले कर रहिए। वही आपके घर का काम सँभालेंगी। मैं बाप के घर जाती हूँ। विधाता ने जब मेरे नसीब में दुःख भोगना ही लिखा है, तब आप मुझे कहाँ तक सुखी रख सकते हैं?"

इतना सुनते ही वृद्धा दासी उसी दिन निकाल दी गई। उमा की माँ को कोई जल पिलाने वाला आदमी भी पास न रहा।

पड़ोस की स्त्रियाँ नित्य ही उमा की माँ को देखने आती थीं, परन्तु छोटी बहू का मिजाज़ देख कर उन सबों ने भी प्रायः आना बन्द कर दिया। तारिणी बाबू बड़ी बहू को पथ्य-पानी के लिए प्रतिमास कुछ रुपया देते थे। छोटी बहू के सजल नेत्र देख उन्होंने वह भी बन्द कर दिया।

इतना करने पर भी तारिणी बाबू नववधू का मन हस्तगत न कर सके। सुन्दरी सुभद्रा स्वामी से बराबर मुँह फुलाये ही रहती थी, कभी प्रसन्न होकर उनसे बात न करती थी। युवती स्त्री के गर्वास्त्र का प्रभाव सुभद्रा जानती थी। बुद्धिमती सुभद्रा ने सुयोग पाकर उस अस्त्र का प्रयोग किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वृद्ध ने देखा, वर्दवान में साहबों की ग़ुलामी करने की अपेक्षा तरुणी भार्या की सेवा करना कठिन काम है। बूढ़े तारिणी बाबू दिन-रात उसकी सेवा में तत्पर रहते थे, तो भी उसका हृदय न पसीजता था, उसका मान-भङ्ग न होता था। वे उसके मनोविनोदार्थ नया कपड़ा, नया गहना और भांति भांति की शृङ्गारसामग्री देकर उसके चरण-कमलों की पूजा करते थे, तब भी वे उस कमल का पराग-रूपी प्रसाद न पाते थे। ज़मींदारी से तोड़े के तोड़े रुपये लाकर उसे देते थे। यौवनमदगर्विता तरुणी रुपयों को सन्दूक़ में बन्द करके मुँह फिरा कर बैठती थी। पूछने पर कुछ न बोलती थी। कभी बोलती भी तो अभिमान से व्यङ्ग करके—"आप ऊपर के मन से पूछते हैं। मेरा नसीब ही बिगड़ा है, आपका क्या दोष? मुझ पर आप का ज़रा भी मोह नहीं है। हृदय से आप उन्हीं को चाहते हैं। उन्हीं पर आपका पूरा अनुराग है। मुझे आप क्यों इतनी झूँठी मुहब्बत दिखला रहे हैं? मैं ग़रीब की बेटी हूँ। इसी से मेरा इतना अपमान हो रहा है।" इस प्रकार कह कह कर वह आँसू बहाने लगती थी।

बूढ़े तारिणीप्रसाद उसके आँसू पोंछ कर कहते थे, "प्राण-प्रिये, तुम यह क्या कहती हो? तुमको मैं अपने सिर पर रखूँगा। जो तुम कहोगी वही करूँगा। जिसमें तुम ख़ुश रहो वही मुझे स्वीकार है। मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ, तुमसे बढ़ कर मेरी कोई प्रेमपात्रा नहीं।"

सुभद्रा रो रो कर कहती थी—"मैं अबला स्त्री हूँ, क्या करने से मेरा भला होगा, यह मैं क्या जानूँ? इस महल्ले के भूधरमल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की बात आप जानते ही हैं। बुढ़ापे में उन्होंने फिर दूसरा ब्याह किया। थोड़े ही दिन बाद संसार से चल बसे। छोटी बहू को बड़ी बहू के हाथ छोड़ गये। बड़ी सौत उसको उठते बैठते गाली देती है, बात बात में उसे फटकारती है, दिन रात मज़दूरिन की तरह उससे घर का काम करवाती है। भर पेट खाने तक नहीं देती। छोटी बहू सूख कर काँटा हो गई है। भिखारिन की तरह घर घर रोती फिरती है। मेरी भी तो एक दिन वही दशा होगी। क्यों न होगी? मेरा जन्म ग़रीब के घर में हुआ। मैं जन्म ही की दुखिया हूँ। मैं दरवाज़े दरवाज़े भीख न मागूँगी तो कौन मांगेगा? मेरा कर्म्म ही बिगड़ा है, आपका क्या दोष?"

तारणी बाबू—"तुम वृथा क्यों इतना सोच कर रही हो? उमा की माँ की क्या मजाल जो तुमसे कुछ कह सके? तुम उससे क्यों डरती हो?"

सुभद्रा—"आपका मन सीधा है, इसीसे ऐसा कह रहे हैं। उमा की माँ को आप क्या जानेंगे? मैं उसे अब किसी तरह भी नहीं सुहाती। एक बार भी वह मेरी ओर आँख उठा कर नहीं देखती। अभी तो मेरे साथ उसका ऐसा बर्ताव है; कुछ दिन बाद न मालूम वह क्या करेगी?"

इस प्रकार बीच बीच में रो रो कर अपना दुखड़ा सुनाना, दिन रात मान ठान चुप चाप बैठी रहना, कुछ पूछने पर झिझक उठना, सुभद्रा का रोज़ाना काम था। तारिणी बाबू उसकी खुशामद करते करते थक गये, पर उसके हृदय की कठोरता न गई। उसका कर्कश स्वभाव ज्यों का त्यों बना रहा। उनका समझ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बराबर उसके मनाने ही में बीतता था। पर वह सहज में राज़ी होने वाली न थी। आख़िर उसकी बात चीत के ढंग से तारिणी बाबू समझ गये कि उनकी नववधू भविष्य के लिए कुछ अर्थसंचय करना चाहती है। इतनी छोटी उम्र की बालिका के हृदय में यह ज्ञान कहाँ से आया। यह उनकी समझ में न आया। तारिणी बाबू को यह मालूम नहीं कि उनकी गृहिणी का परामर्श देने वाला दीर्घदर्शी परम चतुर गोपालचन्द्र था, जो बर्दवान से बराबर उनके यहाँ आता जाता था और चुपचाप अपनी बहन के साथ सलाह विचार करता था।

यौवनमदगर्विता नववधू का कठिन मान और उसके सजल नयन देख कर मन में धैर्य धर सके—ऐसे वीर पुरुष संसार में बहुत कम हैं। तारिणी बाबू का मन धीरे धीरे द्रवित होने लगा। वे मन ही मन सोचने लगे—"इस ज़िन्दगी का क्या ठिकाना। मेरा भला बुरा होने पर जिसमें कुछ सम्पत्ति छोटी बहू के हाथ में रहे—ऐसा कोई प्रबन्ध कर देना अच्छा है। इसको धन न दूँगा तो किसे दूँगा? क्या अन्त में मेरा सब धन वही पगला दामाद हड़प लेगा? नहीं, नहीं, यह बात न होगी। मैं अपनी प्राणप्रिया सुभद्रा को ज़रूर कुछ दिये जाऊँगा। यदि भगवान् की कृपा से मेरी नई गृहिणी के लड़का होगा तो वह धन उसी को मिलेगा। लड़के को न दिया, उसकी माँ को दिया, बात एक ही हुई।"

इस प्रकार भली भाँति सोच विचार कर वृद्ध बर्दवान गये। वहाँ वकील मुख़्तारों से राय लेकर उन्होंने एक वसीयतनामा लिखा और रजिष्टरी करा कर घर आये। घर आने के साथ उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नई बहू के चरण-कमलों पर पूजा चढ़ाने की इच्छा से उसे हर्ष-गद्‌गद् स्वर से बुला कर वसीयतनामा उसके हाथ में दिया और सोचा, "अबकी बार उड़ती चिड़िया को पिंजरे में फँसाया। इस बार का प्रयत्न तो विफल न होना चाहिए। देखें, अब भी इसका मन पिघलता है या नहीं।"

वसीयतनामा पाकर भी मानिनी नववधू ने एक बार भी नज़र उठा कर उनकी ओर न देखा।

तारिणी बाबू ने कहा—"प्यारी, कुछ बोलती नहीं, चुप क्यों हो रही?"

सुभद्रा नज़र नीची किये ही बोली—"कुछ बोल कर क्या होगा?"

तारिणी—"तुम्हारे हाथ में यह क्या है, जानती हो?"

सुभद्रा—"नहीं।"

तारिणी—"यह वसीयतनामा है।"

सुभद्रा—"जाना।"

तारिणी—"यह दस्तावेज़ बड़ा ही मूल्यवान् है।"

सुभद्रा—"इसे अपने सन्दूक़ में रख लीजिए।"

तारिणी—"मेरी मृत्यु के अनन्तर मेरा विजयपुर ताल्लुक़ा तुम्हारा ही होगा।"

सुभद्रा—"मैं नहीं चाहती"—कह कर उसने दस्तावेज़ उनके आगे फेंक दी।"

तारिणी—"यह क्यों? इतना एतराज़ क्यों?"

सुभद्रा—"एतराज़ काहे का? जिस तरह आप मुझे रक्खे हुए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं, वही मेरे लिए बहुत है। आप इस तरह झूँठी मुहब्बत दिखा कर क्यों मेरा जी जला रहे हैं। मैं दस्तावेज़ की भूखी नहीं हूँ।"

तारिणी बाबू अवाक् हो रहे। वधू आँख पोंछने लगी। वृद्ध महाशय ने दस्तावेज़ उठा कर बलपूर्वक नई जोरू के हाथ में दी। जोरू ने दस्तावेज़ को पुर्ज़े पुर्ज़े करके पैर से कुचल डाला और क्रोध से ऐंठती अटपट बात बोलती हुई वहाँ से चली गई।

रात को छोटी बहू ने कुछ न खाया। घर के किवाड़ बन्द करके सो रही। तारिणी बाबू के सिर पर मानो वज्र गिरा। वे उस घर के दर्वाज़े पर काली-घाट के कँगले की तरह बैठ कर विनती करने लगे। पूरे एक घंटे विनती करने के बाद दर्वाज़ा खुला। नव-वधू ने कहा—"फिर क्यों देह जलाने को आये हो।"

तारिणी बाबू उसके दोनों पैर पकड़ कर बोले—"प्यारी, कहो, मुझ से क्या अपराध हुआ है?"

प्यारी—"अपराध क्या होगा?"

तारिणी—"तो फिर तुमने दस्तावेज़ क्यों फाड़ डाली?"

प्यारी—"कैसी दस्तावेज़?"

तारिणी—"जिसमें मैंने अपना प्रधान ताल्लुक़ा तुम्हारे नाम से लिख दिया था।"

प्यारी—"हाल में जो आपने ज़मींदारी ख़रीदी है, मालूम होता है, वह आप बड़ी बहू को चुपचाप दे डालिएगा। क्यों न दीजिएगा, वे आपके नयनों की पुतली हैं, वे आपके हृदय की अधिदेवता हैं। उन्हीं को सब कुछ दे डालिए। मैं ग़रीब की लड़की हूँ। मैं काँटे की तरह आपकी आँखों में गड़ रही हूँ। मुझे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भिखमंगिन की भाँति घर से निकाल बाहर कर दीजिए। मैं अपनी दरिद्रा माता के पास चली जाऊँगी। मैं पड़ोसियों के घर लौंडी का काम करके दिन काटूँगी, पर आपके घर में न रहूँगी। इतना अपमान! इतनी ठगी! इतना क्लेश! अब मुझसे सहा नहीं जाता।" यह कह कर वह रोने लगी।

तारिणी बाबू बड़े अचम्भे में आ गये। उन्होंने हाल में एक ज़मींदारी नीलाम होते समय ख़रीद की थी, परन्तु यह बात उन्होंने अपनी स्त्री से नहीं कही थी। तो फिर सुभद्रा से किसने यह बात कही? क्या वह भी मुझसे लिखा लेना चाहती है? सर्वस्व इसको दे जाने से सरला (उमा की माँ) की क्या दशा होगा? इस प्रकार भाँति भाँति की चिन्तायें तारिणी बाबू के दुर्बल हृदय को मसोसने लगीं।

चतुर सुभद्रा स्वामी के मन की बात समझ कर और भी उच्च स्वर से रोने और बिलख बिलख कर उनसे कहने लगी—"मुझे छोड़ दीजिए, मैं भीख माँग कर खाऊँगी। मुझ पर जब आपका विश्वास नहीं है तब मैं इस घर में न रहूँगी। पेड़ के नीचे सोऊँगी, सो अच्छा। जिसके ऊपर आपका विश्वास है, जिसके लिए आप दिन रात मरते हैं, उसी प्राणेश्वरी के पास जाइए। मुझे छोड़ दीजिए। मुझ निरपराधिनी को क्यों इस तरह जला रहे हैं। मेरी जान बख़्श दीजिए।" यह कह कर वह कटे कदली-वृक्ष की भाँति धरती पर गिर पड़ी और हाथ पैर फेंकने लगी। देखने से मालूम होता था जैसे उसे हिष्टिरिया (मिरगी) रोग हो गया हो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुभद्रा आवश्यकता आ पड़ने पर बड़े आदमियों के घर की बीमारी की नक़ल करना भी जानती थी।"

उस रात की बातों का विशेष रूप से वर्णन करने में हम अक्षम हैं। एक ओर विषयलोलुप तारिणी बाबू की वह विनय-प्रार्थना, दूसरी ओर तरुणी भार्या का वह निष्ठुर भयङ्कर व्यवहार। आज रास्ते का भिखारी भी यदि तारिणी बाबू की दीन-दशा देखता तो वह दो बूँद आँसू गिराये बिना न रहता। कपट-कुशला सुभद्रा ने एक साथ अश्रुबाण, अभिमानबाण, क्रन्दनबाण, हिष्टिरियाबाण, विनयबाण और प्रेमबाण के प्रहार से वृद्ध के शरीर को जर्जरित कर दिया। उसके हृदय को टूक टूक कर डाला। कभी क्रोध दिखा कर, कभी मीठी मीठी बात सुना कर, कभी हाथ जोड़ कर वह अपना काम निकालने लगी। कलकत्ते के जो सब बड़े आदमी अपनी स्त्री को सर्वस्व दे गये हैं उनके नाम गिनाने लगी। उनके परोक्ष में उनकी स्त्री जिस योग्यता के साथ घर का काम चला रही है, उसकी प्रशंसा करने लगी। क्या सब स्त्रियाँ विश्वासघातिनी होती हैं? कौन ऐसी अधम स्त्री होगी जो स्वामी के परोक्ष में वह उसके धन को बरबाद करके उसके नाम को कलङ्कित करेगी? स्वामी के घर के सिवा कुलीना स्त्री के लिए दूसरा घर संसार में क्या और है? पति ही स्त्री का प्राण होता है, पति ही उसका सर्वस्व है," आदि आदि अनेक बातें कह कर वह बूढ़े तारिणी बाबू को माया-जाल में फँसाने लगी।

सारी रात इसी प्रकार स्वार्थसाधन की लड़ाई होती रही। जब भोर होने के पूर्व पूरब ओर आकाश में कुछ कुछ लालिमा दिखाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देने लगी तब विषयलोलुप तारिणी बाबू परास्त हुए। उन्होंने कहा—"प्रियतमे! तुम मेरे हृदय की सम्पत्ति हो, यह तुच्छ धन अगर मैं तुमको न दूँगा तो किसको दूँगा? मेरे पास जो कुछ धन-सम्पत्ति है, वह तुम्हीं को लिख दूँगा। क्या मेरी ज़मींदारी तुमसे बढ़ कर है?"

तब समरविजयिनी सुभद्रा आँसू पोंछ कर उठी और वृद्ध पति का हाथ पकड़ उन्हें धरती से उठा कर अपनी बग़ल में बिठाया। उनके गले से लग कर बोली—"आप ही मेरे प्राणधन हैं, आप ही मेरे जीवनसर्वस्व हैं, धनसम्पत्ति क्या वस्तु है? जब मैंने आपका प्रेम पाया तब सब कुछ पाया।" तरुणी सुभद्रा की आँखों में आँसू और मन में हँसी थी। वह मन ही मन सोच रही थी, "मित्र-घराने की लड़की कैसी होती है, यह बुड्ढे ने अब समझा! क्या मेरे भाई ने इस बूढ़े का रूप देख कर इसके साथ मेरा ब्याह कर दिया? जिस काम के लिए ब्याहा था, वह आज सिद्ध हुआ।"

एक सप्ताह के भीतर सब कार्य हो गया। तारिणी बाबू ने आजीवन नौकरी करके न्याय किंवा अन्याय से जो कुछ धन हासिल किया था, बाप दादे की और निज की जो कुछ सम्पत्ति थी, सुमित्रा और सुधा के पिता से जो ठग कर ले लिया था, गाँव के लोगों से मामला मुक़दमा करके जो सब ज़मीन जीत कर लेली थी, बर्दवान में सरकारी नीलामी जगह सस्ते दर पर जो सब ख़रीद की थी, वह बिलकुल आज अपनी नई स्त्री के नाम से लिख कर रजिष्टरी के द्वारा पक्की कर दी। चिरपतिव्रता, शोकग्रस्ता, रुग्णा सरला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को नई सौत की दया के ऊपर छोड़ दिया। सुमित्रा और सुधा की दीनता पर भी कुछ ध्यान न दिया।

उमा की माँ सरला ने यह संवाद सुना। वह समझ गई कि कुछ दिन बाद उसे सौत की दासी बन कर रहना होगा, सौत की सेवा करके पेट पालना होगा, इस मर्मव्यथा को वह अधिक दिन न सह सकी। कुछ ही दिनों में वह इस असार संसार से विदा हो गई। अन्तकाल में सुमित्रा और सुधा ने चाची की बहुत कुछ सेवा की। उसकी मृत्यु होने पर वे दोनों उसके गले से लिपट कर खूब रोईं चिल्लाईं।

सपत्नी की अन्त्येष्टि क्रिया होने के अनन्तर सुभद्रा निश्चिन्त होकर घर का काम करने लगी। अब उसके मन में कोई चिन्ता न रही। वह पति की जीवित अवस्था में ही उसकी समस्त सम्पत्ति पर अपना अधिकार जमाने लगी। तारिणी बाबू ने इसमें कुछ रोक-टोक न की। नववधू के किसी काम में बाधा डालने का साहस उस वृद्ध को न होता था।

तारिणी बाबू महल्ले महल्ले घूमते थे, लोगों के साथ लड़ते झगड़ते थे। प्रजा को गाली देते थे। पड़ोसियों पर हुकुम चढ़ाते थे, परन्तु घर आकर वे भीगी हुई बिल्ली की तरह दब कर एक कोने में बैठे रहते थे। सारी सम्पत्ति देकर भी वे तरुणी के हृदय में स्थान न पा सके, उसके अभिमान को भङ्ग न कर सके।

घर से बाहर तक कुल काम सुभद्रा स्वयं देखने लगी। उसका मन्त्री था गोपाल। तारिणी बाबू दोनों वक्त भर पेट खाते थे और बाहर दालान में दिन भर अकेले बैठे रहते थे। कोई उनसे एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बात भी पूछने को न आता था । बाहर अकेले बैठे बैठे जब उनका जी ऊब जाता था तब वे, जिस घर में सरला रहती थी वहाँ जाकर आँसू बहाते और तरह तरह की बातें सोचते थे । परन्तु अब सरला इस लोक में कहाँ, जो उनका आँसू पोछती या दो मीठी बातें कह कर उनको सान्त्वना देती । यह देख कर कोई कोई कहते थे, "इतने दिनों बाद अब बुड्ढे को सरला की मृत्यु पर शोक हुआ है ।" कोई कहता था, "चिरदुःखिनी सुमित्रा को कुछ न देकर सब सम्पत्ति अपनी नई जोरू के नाम से बेल कर देने के कारण वृद्ध को मनस्ताप हो रहा है ।" कोई कहता था, "नहीं नहीं, यह बात नहीं है, तारिणी बाबू अब बूढ़े हुए, उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ है, इसी से अब संसारी कामों में उनका जी नहीं लगता ।"

तारिणी बाबू को बिन्दुमात्र भी संसार से वैराग्य नहीं हुआ था । वे केवल बीती हुई बात को सोच रहे थे और मन ही मन कोई सिद्धान्त स्थिर कर रहे थे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आठवाँ परिच्छेद

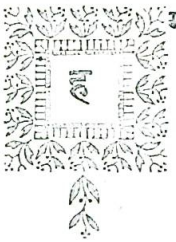

हम इतनी देर तक तारिणी बाबू का वृत्तान्त लिखने ही में उलझे हुए थे, कैसे न उलझते ? धर्मपुर में उनकी बराबरी करने वाला कोई न था। बड़े आदमियों में प्रथम वही गिने जाते थे। बड़ों की सब बातें बड़ी होती हैं। वहाँ सब बड़े लोग ही नहीं, किन्तु सामान्य अवस्था के भी लोग रहते थे। उनके सम्बन्ध में भी दो एक बात लिखना आवश्यक है।

सुमित्रा जन्म ही की दुखिया थी, परन्तु इस दरिद्रावस्था में भी वह बड़े आनन्द से घर का काम चला लेती थी और अपनी दोनों सन्तानों का भली भाँति लालन पालन भी करती थी। लड़की सुशीला की उम्र उस समय बारह वर्ष की थी, उसका रंग साँवला था, पर लावण्ययुक्त था, आँखें बड़ी बड़ी थीं। स्वरूप शान्त और सुन्दर था। बालक सुबोध की उम्र नव वर्ष की थी। वह समीप ही सनातनपुर गाँव की अँगरेज़ी पाठशाला में पढ़ने जाता था। सुबोध यथार्थ में सुबोध और अपने पिता के समान शान्त और सुशील था। सुमित्रा के यही दो सन्तान थे।

सुमित्रा के पति हेमचन्द्र गाँव में रह कर खेती-बारी का काम देखते थे, और घर पर बैठ कर पुस्तकें पढ़ते थे। बाल्यकाल से ही उन्हें अपने धर्म में निष्ठा थी, किन्तु हम सब स्कूल में जो कुछ लिखते पढ़ते हैं उससे हमें अपने शास्त्र की कुछ भी शिक्षा नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलती। यही कारण है कि हम अपने शास्त्र में कोरे के कोरे ही रह जाते हैं। हेमचन्द्र को संस्कृत शास्त्र पढ़ने की बड़ी इच्छा थी।

इस उम्र में उनका संस्कृत-पाठशाला में जाकर कोई शास्त्र पढ़ना बड़ा कठिन था। किन्तु उनके भाग्य से शास्त्र-शिक्षा का एक सुयोग उन्हें मिल गया। सनातनपुर में कुछ दिन से रमानाथ उपाध्याय नामक एक बड़े विद्वान् रहने लगे हैं। अनेक विद्यार्थी उनसे संस्कृत पढ़ने के हेतु नित्य उनके पास जाते हैं। हेमचन्द्र भी पैंतीस वर्ष की उम्र में उनसे कुछ कुछ संस्कृत सीखने लगे। उनके साथ संस्कृत-विद्या की आलोचना करने में हेमचन्द्र का खूब जी लगा।

हेमचन्द्र के साथ क्रम क्रम से पण्डित रमानाथ की बड़ी मित्रता हुई। रमानाथ की उम्र पैंतालीस वर्ष से कुछ ऊपर ही होगी। उन्होंने काशी में रह कर बहुत दिनों तक विद्याध्ययन किया और पश्चिम देश के अनेक तीर्थों का पर्यटन किया है। शरीर उनका अब भी तेजःपूर्ण और बलिष्ठ है। उनके सिर पर जटा थी। वे लम्बी दाढ़ी रखते थे, पीत वस्त्र पहनते थे, और विद्यार्थियों को प्राचीन शास्त्र की शिक्षा देकर समय बिताते थे। उनके दयानाथ नाम का एक पन्द्रह वर्ष का लड़का था। उसने भी पिता के साथ अनेक देश देखे थे। वह भी पिता के समान तेजस्वी और उदार था। कुछ दिन से वह सनातनपुर के स्कूल में अँगरेज़ी पढ़ता और पिता से संस्कृत सीखता था। दयानाथ सुबोध को जी से चाहता था, उसे अपने घर ले जाता था और कभी कभी वह धर्मपुर आकर सुबोध तथा सुशीला के साथ खेलता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुधा विवाह के अनन्तर बराबर शिवचन्द्र के साथ कलकत्ते में रहने लगी। कभी कभी सुयोग पाकर वह अपने गाँव आती थी। शिवचन्द्र एक एक कर विश्वविद्यालय की सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुआ पीछे वह एक अच्छी नौकरी की खोज करने लगा। उसकी इच्छा थी कि विलायत जाकर कोई बड़ी परीक्षा देकर अच्छा पद प्राप्त करे, किन्तु उसके पास इतना धन नहीं जो विलायत जा कर वह वहाँ कई वर्ष रह सके। उसने सुना, देश में भी उच्च परीक्षा देकर अच्छा ओहदा मिल सकता है। इसलिए वह उस परीक्षा की तैयारी करने लगा।

शिवचन्द्र बड़ा ही उत्साही और बुद्धिमान् था। उसका प्रयत्न व्यर्थ न हुआ। थोड़े दिन के परिश्रम में वह "स्टैटुटरी सिविल-सर्विस" की परीक्षा में पास हो गया। जिस वर्ष वह इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ, उसी साल धर्मपुर गाँव में सुधा के एक लड़का पैदा हुआ। सुधा पुत्र का मुख देखकर बहुत प्रसन्न हुई। लड़के की मौसी बड़े यत्न से उसे पालने लगी। पिता पुत्र लाभ से अपने को कृतार्थ मान नौकरी करने के हेतु पश्चिमोत्तर देश को चल दिया।

दो वर्ष तक शिवचन्द्र बाहर ही रहा। इस बीच में उसे एक-बार भी अपने घर आने का अवकाश न मिला। इतने दिन स्वामी से अलग रहने में सुधा को बड़ा ही कष्ट हुआ। पति की जुदाई उसे असह्य हो उठी। वह चुपचाप पति के पास पत्र भेजती थी, बहन के पास बैठ कर आँसू बहाती थी, फिर पुत्र का मुँह चूम कर धैर्य धारण करती थी। शिवचन्द्र इस बार सुधा को साथ ले जायगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दो मास की छुट्टी लेकर वह घर आ रहा है। आज ही उसके धर्म-पुर आने की बात थी। इसी से आज सुधा के हर्ष की सीमा नहीं, इसी से आज वह बार बार उमँग रही है, और बड़े चाव से शृङ्गार कर रही है।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवाँ परिच्छेद

सुमित्रा—"क्यों री सुधा, आज तुम्हारी वेणी का बांधना पूरा होगा या नहीं ? साँझ हो गई, क्या अब भी तुम्हारा केशविन्यास समाप्त नहीं हुआ ? ऐसा बाल बाँधना तो मैंने जन्म भर में नहीं देखा।"

सुधा—"बहन, देखो तो, मैं कितनी देर से इनसे कह रही हूँ।"

किसी तरह बाल बाँध देती। परन्तु बाई जी इतनी देर से क्या कर रही हैं, यह मेरी समझ में भी नहीं आता।

अन्नपूर्णा—"हाँ री ! तुम क्यों न ऐसा कहोगी ? तुम्हारी ननद ही का बड़ा मनोरथ है, तुम तो कुछ चाहती ही नहीं। मैं आ गई इसी से, नहीं तो आधी रात तक भी आज तुम्हारा शृङ्गार नहीं बनता। अच्छा लो, तुम्हारी वेणी बाँधी सी हो गई। अब सोने का फूल दो, वेणी में खोंस दूँ।"

सुधा—"नहीं बाई जी, फूल का कुछ काम नहीं, अब मुझे छोड़ दो, मैं तुम्हारे दोनों पैर पकड़ती हूँ।"

अन्नपूर्णा—"इतना नख़रा दिखलाने की ज़रूरत क्या ? यहीं तो फूल रक्खा है। दो, मैं अभी ठीक से बिठा देती हूँ। बहन सुमित्रा, तौलिया दो तो मैं सुधा का मुँह अच्छी तरह पोंछ दूँ।"

अन्नपूर्णा छोड़नेवाली औरत न थी। उसने सुधा का मुँह अच्छी तरह पोंछ कर, गले में चन्द्रहार, हाथ में कंकण, बाँह में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाजूबंद और काले पाढ़ की रंगीन साड़ी पहिरा कर उसके सम्मुख एक बड़ा आइना रख कर कहा—"अब शिव बाबू घर आकर देखें, उनकी दुलहिन का रूप कैसा है ? कहो सुमित्रा ! इन्द्र की अप्सरा क्या इससे बढ़ कर सुन्दरी होगी ?"

सुधा मारे लज्जा के वहाँ से उठ कर भाग गई । सुमित्रा और अन्नपूर्णा हँसने लगीं ।

सुधा संकोच से भाग तो गई, परन्तु उसे अभी बहुत काम करना बाकी रह गया था । उसने शयनगृह में जाकर बत्ती जलाई उमगते हुए मन से अच्छी तरह झाड़कर बिछौना बिछाया । तकिये के पास चादर के नीचे दो एक फूलों का गजरा छिपा रक्खा डिब्बे भर पान और इलायची सिरहाने रख दी । इत्रदान भी उसने चारपाई के नीचे छिपा कर रख दिया । इस प्रकार सुसज्जित होकर वह किसी के पैर की आहट सुनने की आशा से बार बार दर्वाजे की चौखट से लग कर खड़ी होती थी । अन्नपूर्णा के रहते रसोई का काम किसी को देखना न पड़ता था । वह आप ही सब काम कर लेती थी, तथापि शिवचन्द्र को जो सब वस्तु भोजन की प्रिय थीं, सुधा ने अपने हाथ से वे सब पदार्थ बना कर रख दिये थे ।

जिस समय सुधा थाल में भोजन की वस्तुओं को सजा रही थी, उसी समय माईजी को साथ लिये सुमित्रा आई । माईजी सुधा को देखकर बोली—"बेटी, देखती हूँ, आज तुम बड़ी तैयारी कर रही हो ।" सुधा ने लज्जा से सिर नीचा कर लिया ।

माईजी का परिचय देना आवश्यक है । सुमित्रा और सुधा के साथ उनका कोई सम्बन्ध था या नहीं, नहीं जानते । गाँव के कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घर के साथ उनका क्या सम्बन्ध था, यह भी हमें मालूम नहीं। सिर्फ़ हम इतना ही जानते हैं कि उस बूढ़ी विधवा को गाँव के सभी छोटे बड़े माईजी कहकर पुकारते थे। इसी नाते से उस गाँव के युवक युवतीगण की वे माई जी होती थीं। वे बाल्यावस्था में ही विधवा हो गई थीं, इसलिए उन्होंने कभी स्वामी का घर न देखा। उनका मन स्वच्छ था, हृदय ममता से भरा रहता था।

किसी का बच्चा क्यों न हो, वे उसे देखते ही गोद में उठा लेती थीं। वे सब के घर जाती आती थीं, सभी घर के लड़के उन्हें चाहते थे, सब घर की स्त्रियाँ उन्हें आदर से बिठाकर उनसे दो बातें करती थीं।

माईजी बूढ़ी होने पर भी बड़ी दिल्लगीबाज़ थीं। उनकी बातों में तुर्शी लिये मीठापन था, वे बिलकुल मिसरीपगी बात न बोलती थीं।

आज बहुत दिन के बाद शिवचन्द्र बाबू घर आवेंगे, शिव बाबू को बालकपन में माईजी बहुत प्यार करती थीं, इसी से आज उनके आने की ख़बर पाकर वे उनको देखने आई हैं।

शिवचन्द्र को गाँववालों ने समाज से अलग कर दिया है तो भी माईजी उनपर से अपनी ममता नहीं हटा सकती थीं।

माईजी ने हँसते हँसते कहा—"आज बड़ी तैयारी हो रही है! क्या और किसी का पति परदेश में नौकरी नहीं करता? या विदेश से कोई घर नहीं आता। यह कुछ नई बात नहीं। इसके लिए इतना आडम्बर क्यों? मैं तुम्हारे घर आई हूँ। तुमने मेरी ओर एक बार पलक उठाकर देखा तक नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुधा—"नहीं माईजी, आप जो आईं, यह मैंने न जाना। तैयारी क्या होगी, जल-पान की थोड़ी सी वस्तु बना कर रख दी है। आपही इसे थाली में सजा कर रख दीजिए।"

माईजी—"देखूँ, देखूँ, क्या क्या है? ओहो, चीज़ें तो तुमने बहुत सी बनाई हैं।"

सुमित्रा—"शिवबाबू बड़ी प्रसन्नता से ये सब चीज़ें खायँगे।"

माईजी—"अच्छा, इस कटोरे में क्या है? ओः! मालूम होता है, यह मीठी बड़ी है, शायद तुमने अपने हाथ से बनाई है? यत्न तो तुमने बेशक बहुत किया है, पर देखना, खिला पिला कर पीछे शिवचन्द्र के साथ झगड़ना नहीं।"

सुमित्रा—"क्यों माईजी, यह शिवबाबू से क्यों झगड़ेगी? बहुत दिनों के बाद शिवबाबू घर आ रहे हैं। सुधा उनकी कुछ ख़ातिर न करेगी तो कौन करेगा?"

माईजी—"हाँ, हाँ, ख़ातिर करनी ही चाहिए, बेटी सुधा बड़ी अच्छी है। शिवचन्द्र की सेवा करने में यह कभी आलस्य न करेगी। तो तुम एक बात नहीं जानतीं, आज कल का जैसा समय है, ज्यादा ख़ातिरदारी करने से पुरुष स्त्री के सिर पर सवार हो जाता है। मालूम होता है। तुम सब यह बात नहीं जानतीं?"

सुमित्रा—"नहीं माईजी, यथार्थ में हम सब यह बात नहीं जानतीं, आप समझा कर कहिए न।"

माईजी—"कहने से क्या होगा, जब तुम मेरी उम्र की होगी तब आपही सब जानोगी। मैं सब के घर जाती हूँ, बहुत बातें देखती हूँ। इसी से कुछ शिक्षा मिली है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुमित्रा—"जो शिक्षा आपने पाई है, वह हम सब को भी दीजिए। आप न बतावेंगे तो कौन बतावेगा ?"

माईजी—"अच्छा, सुनो, कहती हूँ, तुम सब जो लड़के लड़कियों के व्याह के पीछे पागल बनी रहती हो, छोटी उम्र में लड़की का व्याह करके बड़ा हर्ष मानती हो, इसमें एक बात मैं तुम से पूछती हूँ, वह अबोध लड़की व्याह किसे कहते हैं यह भी नहीं जानती, दूल्हे को प्रेमपाश में फांसना वह विचारी क्या जानें! दूल्हा सयाना रहा तो दुलहिन को वह बिल्ली की तरह खिलाता है। बस, बूढ़ा की बात सुन कर तुम सब हँसने लगीं, लो मैं जाती हूँ।"

सुमित्रा—"नहीं माईजी, अब न हँसूँगी, सच कहती हूँ। मैं आपके पैरों पर गिरती हूँ। जो बात आप कह रही थीं, कहिए।"

माईजी—"क्या कहती थी ? लड़के लड़की के व्याह की बात। लड़की जब समझदार हो, तब उसे व्याहना चाहिए। एक न एक दिन जिएगी तो उसका व्याह हो होगा, उसके लिए तुम सब इतनी आतुर क्यों होती हो ? सुनो, आज कल का समय दूसरा है, बिना बहुत भड़क दिखाये, बिना बहुत बक झक किये क्या किसी औरत का गुज़ारा किसी घर में हो सकता है ? जो स्त्री जितनी सीधी होती है, वह पुरुष के द्वारा उतनी ही अपमानित होती है। इस संसार में सात्विक लोगों का निर्वाह होना कठिन समझो। मेरे महल्ले के चौधरीजी को जानती हो न ? उनके बेटे के दो लड़के हुए हैं, चौधरी की स्त्री बराबर बीमार रहती है, तो भी उन दोनों बच्चों को दिन भर बग़ल में दबाये घर का काम-धन्धा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करती है, घर आँगन झाड़ बुहार कर लीपना, बर्तन मलना, पानी लाना और रसोई करना आदि सारा काम उसी को करना पड़ता है। बिचारी को दम लेने की फ़ुरसत नहीं मिलती। उस पर भी वह दो चार गाली खाये बिना नहीं रहती। बाबू को ज़रा गरम दूध मिलने में देरी हुई तो फिर गाली गलौज! और हाँ, गाली कुछ ऐसी वैसी नहीं। गाली सुन कर हम सब को कान में उँगली देना पड़ता है। उनकी स्त्री बड़ी सुशीला है, दिन रात उनकी सेवा में हाज़िर रहती है, तो भी वह उठते बैठते गाली सुनती है। समझीं, भोली भाली होने से अन्त में यही दशा होती है। पुरुष उसकी जान लेने को तैयार हो जाता है। इस लिए कहती हूँ, बहुत सीधी मत बनो; बहुत सीधापन किस काम का; ज़रा रोबदार होना सीखो और लड़की का ब्याह छोटी उम्र में न करो, नहीं तो तुम्हारी लड़की बिल्ली की बिल्ली ही बनी रहेगी।"

माईजी की बात सुन कर फिर सब हँसने लगीं। सुमित्रा ने कहा—"माईजी, क्या सब मर्द वैसे ही होते हैं?"

माईजी—"नहीं, मैं यह नहीं कहती कि सब वैसे ही होते हैं। स्त्रियाँ भी तो सब भोली भाली ही नहीं होतीं। लालाजी की जोरू कैसी उड़नहार औरत है। स्वामी को ठीक भेड़ बना कर रक्खा है। जो वह कहती है वही करता है। वह उठने कहती है तो लाला उठता है, बैठने कहती है तो बैठता है। उसकी बात क्या कहने योग्य है। ललाइन के डर से लाला थरथर काँपता रहता है, तो भी क्या वह उसे दो चार खड़ी खोटी सुनाने से बाज़ आती है? बाबू बिचारे क्या करेंगे, कोल्हू के बैल की तरह आँख कान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर पट्टी दिये बहू का हुक्म सिर पर चढ़ाये, दिन भर घूमते रहते हैं। साबाश ! औरत हो तो ऐसी ! देखती नहीं ? कैसे पति को मुट्ठी में लिये रहती है। कैसी चतुराई से उसने पति को वश में कर लिया है। मजाल क्या जो पति उसके ख़िलाफ़ कुछ बोले या कोई काम करे।"

सुमित्रा—"क्या इस प्रकार स्वामी के सिर चढ़ना अच्छा है ? इसमें क्या सुख है ? जब पति और पत्नी का मन एक न हुआ तब सुख क्या ? देखिए न, चचाजी का घर क्या था और अब क्या हो गया !"

माईजी—"हाँ बेटी, यह तो तुम ठीक कहती हो। तारिणी बाबू का घर तो घर ही था। उसने सोने का घर उजाड़ कर मिट्टी का कर दिया। सरला को कभी एक बात बढ़ कर बोलते न सुना। ऐसी भली स्त्री को पाकर ही तुम्हारे चचा ने उसे पैर से ठुकरा कर दूर फेंक दिया। हाय ! हाय ! बूढ़े तारिणी बाबू ने उसकी सब दुर्दशा कर डाली, जला जला कर उसे मार डाला। वह बिचारी मारे विषाद के मर ही गई। पति से त्यक्त होकर क्या सती स्त्री जीवित रह सकती है ? निर्बल की हार और बली की जीत सब दिन से होती आई है। सती स्त्री का त्याग अब हृदय में कैसा पिरा रहा है ? वही तारिणी बाबू हैं जो साँड़ की तरह महल्ले महल्ले अकड़ते फिरते थे, सब पर हुकूमत चढ़ाते थे, अब अपने घर पर हुकूमत करें तो देखूँ। इस बहू से भी तो कोई लड़का न हुआ। अब एक शादी और करें न ? इनकी क्या ताक़त है जो अब दूसरे ब्याह का नाम लेंगे। छोटी बहू इनकी बड़ी ज़बरदस्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। उसने इनका गला दबा कर इनकी सारी सम्पत्ति अपने नाम से लिखा ली है। अच्छा किया, खूब किया। वह क्या ऐसी वैसी औरत है? उसकी अक्ल को वे बूढ़े क्या पावेंगे? अभी उसने क्या किया है। उनकी सज़ा और दिन दिन करेगी। ऐसी ज़बरदस्त स्त्री न मिलने से क्या पुरुष सीधा हो सकता है?"

सुमित्रा ने हँसते हँसते पूछा—"माईजी, छोटी चाची सुभद्रा ने जो काम किया है, वह क्या अच्छा है? वैसा काम करने से क्या सुख? पति-पत्नी में ऐसा भाव किस काम का?"

माईजी—"सुभद्रा ने अच्छा किया या बुरा—यह मैं क्या कहूँ? इस काम को अच्छा कौन कह सकता है? बुढ़ापे में जब उनको नई जोरू करने का शौक़ हुआ तब जो न हो सो कम! संसार की यही रीति है। चिरकाल से यही होता आया है। सुख की बात क्या कहती हो? सुख किसी में नहीं है। न स्वामी के अधीन होकर रहने में सुख है, न उसे अपने अधीन बना कर रखने में सुख है। तो इस संसार में जो जितना ज़बरदस्त है, उसका उतना आदर मान है। मैं बुड्ढी हुई, बहुत दिनों से यही देखती आती हूँ। तुम सब पढ़ी लिखी हो। तुम्हारी समझ कैसी है, यह मैं क्या जानूँ?"

सुधा मुस्कुरा कर बोली—"माईजी, मेरी बहन हेम बाबू की सेवा टहल करती है और वे भी उसे जी से चाहते हैं। बहन तो नाज़ नख़रा करना नहीं जानती।"

माईजी—"लो, उनकी बात तुम क्या ले आईं? हेम बाबू तो बड़े साधु हैं। सुमित्रा भी एक भोली भाली स्त्री है। इन दोनों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की बात छोड़ दो। अच्छा, तुम्हीं कहो, ऐसे सीधे सादे मिज़ाज के आदमी संसार में कितने होंगे ? मैं जहाँ तक जानती हूँ, संसार में दुर्जनों की ही संख्या अधिक है। जो सज्जन हैं, उन्हीं पर सब आफ़त है। तुम पुरुषों की बात क्या पूछती हो ? वे लोग रुपया पैसा कमाते हैं, बाप-दादे की धन-सम्पत्ति के मालिक हैं, आमद ख़र्च सब उन्हीं के हाथ में है। वे पाँव पर पाँव दिये बैठे रहते हैं। और स्त्रियों से हमेशा दासी की तरह घर का काम कराना चाहते हैं। स्त्री मानो उनकी ख़रीदी हुई लौंडी है। इस लिए बहू यदि मिज़ाज की कुछ कड़ी न हो, वह अपने को ज़रा रोबदार न बनाये रहे, तुम्हारी चाची सुभद्रा की तरह ज़बर्दस्त न हो तो दिन भर घर का काम करते करते और उस पर भी पति की घुड़की खाते खाते उसके प्राणों पर आ पड़े। इसी लिए कहती हूँ, बेटी ! कुछ तेज़ मिज़ाज हो, कुछ कठोर हो, कुछ झिझकना सीखो, कुछ रोब दिखाना सीखो, तभी मानमर्यादा से रहोगी। जब तुम अपना मतलब निकालना सीखोगी, अच्छे कपड़े, गहने और रुपये पैसे अपने हाथ में करना सीखोगी, अपने पति के ऊपर कुछ हुकूमत कर सकोगी तभी मैं तुमको असल स्त्री समझूँगी। अगर तुमने मतलब निकालना न सीखा तो तुमने स्त्री का जन्म लेकर क्या किया ?"

सुमित्रा—"अगर मतलब निकालने जाकर सब बात बिगड़ जाय ?"

माईजी—"जिसे रसोई बनानी आती है, उसके हाथ की रसोई क्या ख़राब हो सकती है ?"

सुमित्रा—"माईजी, मैंने इतनी ही कम उम्र में कि तना ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नुक़सान होते देखा है। इस स्वार्थ के झगड़े से कितने ही घर उजड़ कर श्मशान हो गये हैं। पति और पत्नी दोनों में एक यदि कुछ सह ले तो घर कभी नहीं बिगड़ सकता है, परन्तु उतना सह न करने से गृहस्थी का सब सुख मिट्टी में मिल जाता है। अधिक प्रपञ्च करने का फल उलटा होता है। जहाँ स्त्री मायाविनी है वहाँ कुशल नहीं। अपना किया दोष पीछे अपने ही सिर पर आ पड़ता है।"

माईजी—"यह रसोई बनाने वाले का दोष है। दाल में जितना नमक पचे उतना ही डालना चाहिए, ज़्यादा डालने से तो वह ख़राब होगी ही। तो इससे क्या दाल रींधना ही न चाहिए? तुम तो एक अच्छी रसोई बनाने वाली हो, अन्दाज़ से नमक मसाले डाल कर दाल रींधो, देखो, कैसी अच्छी होती है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दसवाँ परिच्छेद

त के क़रीब आठ बजे शिवचन्द्र बाबू घर पहुँच गये। दो वर्ष के बाद वे घर आये हैं, इस लिए उनको देखने के लिए आज महल्ले भर के लोग उमड़ पड़े हैं, उनका घर लोगों से भरा है। हेमचन्द्र इतने दिन बाद अपने प्रिय साढ़ू शिवचन्द्र को देख कर बड़े ही आनन्दित हुए। अन्यान्य सखा और बन्धुगणों ने भी बड़ी प्रीति के साथ शिवचन्द्र को अभिवादन किया। गाँव के वृद्धगण, जिन्होंने शिवचन्द्र को समाज से अलग कर दिया था, उन्होंने भी आज उच्चपदाधिष्ठित विशेष योग्यतावान् शिवचन्द्र को दूल्हाजी कह कर सम्मानित किया और बड़ा स्नेह दिखलाया। शिवचन्द्र सब का यथायोग्य सम्मान करके माँ के घर गये। माता को साष्टाङ्ग प्रणाम किया। माता के पैर की धूल सिर में लगाई। माता ने शिवचन्द्र के माथे पर दोनों हाथ रख प्रेमाश्रु भरी आँखों से उन्हें आशीर्वाद दिया।

उन्होंने माँ के पास बड़ी देर तक बैठ कर उनका कुशल पूछा। शिवचन्द्र की मां अत्यन्त वृद्धा होने के कारण घर का कोई काम-काज न देखती थीं। वे नित्य प्रातःस्नान करके दोपहर तक पूजा-पाठ करती थीं, उसके बाद कुछ जलपान करके विश्राम करती थीं. फिर सायंकाल का नित्यकृत्य करके हविष्य भोजन के अनन्तर परमेश्वर का नाम लेकर सो रहती थीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिवचन्द्र को जब सब ने समाज से बाहर कर दिया था; त
उनकी माता के हृदय में बड़ा ही दुःख हुआ था; किन्तु उनके गु
ने सान्त्वना देकर कहा—"आप कुछ सोच न करें, ब्राह्मण, पुजारी
आप के घर आवे चाहे न आवे, इससे कोई हानि-लाभ नहीं। आ
जिस नियम-निष्ठा से नित्य पूजा करती हैं, उसी नियम से करत
रहें। पुजारी की सहायता की कोई आवश्यकता नहीं। एकाग्रम
से भगवान् के गुण रूप का ध्यान करना ही उनकी यथार्थ पूज
है। मन कहीं रहा तो अक्षत फूल चढ़ाने ही से क्या? भगवा
की पूजा में मुख़तारनामे की ज़रूरत नहीं होती।"

शिवचन्द्र की माता जाह्नवी ने गुरुदेव के परामर्श को हृदय
ग्रहण किया और तदनुसार ईश्वर की आराधना करने लगीं। उन
पुण्य प्रताप से शिवचन्द्र ने सब परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर अच्छ
नौकरी पाकर आज विदेश से आकर माता के चरणों पर मस्त
रखकर प्रणाम किया।

सुमित्रा और अन्नपूर्णा ने शिवचन्द्र के पास बैठकर स्नेह भ
गद्गद् स्वर में कितनी ही बातें पूछीं, कितने ही अपने मन
सद्भाव प्रकट किये। शिवचन्द्र ने भी उन दोनों के साथ स्नेह
पूर्वक यथेष्ट सम्भाषण किया। पास ही सुधा बड़ी देर से घूँघट डा
गोद में बच्चे को लिये खड़ी थी। शिवचन्द्र ने उसकी गोद से बाल
को लेकर बड़े प्यार से उसका मुख चूमा। सुधा की आँखों
आनन्द के आँसू उमड़ आये।

राजा महाराजों के स्वागत के लिये शहर शहर, गाँव गाँ
में धूम मच जाती है, घर घर उत्सव मनाया जाता है। पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सच्चरित्र धर्मात्मा शिवचन्द्र के स्वागत के लिये आज उनके छोटे से घर में जो आनन्द और स्नेह की तरङ्गें उछल रही हैं उनकी समता क्या वह महोत्सव कर सकता है ? ऐसा सच्चा स्नेह, ऐसी पवित्र प्रीति इस संसार में संयोग से ही देखी जाती है।

शिवचन्द्र ने बहुत देर के बाद हाथ मुँह धोया। सुधा ने बड़े यत्न से जलपान की वस्तु लाकर उनके आगे रख दी। जलपान करके शिवबाबू फिर हेमचन्द्र के साथ बाहर दालान में आकर एकत्रित बन्धुवर्ग के साथ वार्तालाप करने लगे। उन्होंने गाँव के सब लोगों का कुशल पूछा। दरिद्र और विपत्तिग्रस्त लोगों की दुर्दशा पर खेद प्रकट करके उनको यथासाध्य सहायता देने की प्रतिज्ञा की। सबके उपकारार्थ जहाँ पोखर और कुएँ की आवश्यकता थी वहां पोखर, कुवाँ खुदवाने का संकल्प किया। फिर से सड़क और घाट की मरम्मत करा देने का आशय प्रकट किया। रोगियों के लिए एक खैराती दवाख़ाना खोलने की प्रतिज्ञा की। जो दरिद्र बालक फ़ीस न दे सकने के कारण स्कूल में न पढ़ सकते थे, उन्हें अपने पास से फ़ीस देना स्वीकार किया। इसके अनन्तर किसी किसी ने अपने लड़कों के लिए पुस्तक की आवश्यकता बताई। किसी ने पितृश्राद्ध के लिए कुछ सहायता चाही। किसी ने घर छाने के लिए बाँस-खपरे की व्यग्रता दिखलाई। शिवबाबू आज दो वर्ष बाद घर आये हैं, इससे उन्होंने किसी को विफल-मनोरथ न किया। सब को यथासाध्य सहायता देने का वचन दे कर सन्तुष्ट किया।

रात डेढ़ पहर से कुछ ऊपर बीत चुकी। भोजन की सब सामग्री तैयार थी। हेम और शिव भोजन करने को बैठे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुमित्रा हाथ में पंखा ले उन दोनों के सामने बैठी। अन्नपूर्णा रसोई बनाने में बड़ी प्रवीणा थी। उसने भाई को यथेच्छ भोजन करा कर तृप्त किया।

इसके बाद स्त्रियों का खाना पीना हुआ। आधी रात बीत गई तब हेम और सुमित्रा दोनों अपने घर को गये। सुमित्रा जाने के पूर्व शिवचन्द्र का हाथ पकड़ कर उन्हें उनके शयनगृह के द्वार तक पहुँचा कर बोली—"जाइए, अब आप अपने धन की जाँच पड़ताल कीजिए, हम जाती हैं।" शिवचन्द्र ने घर में प्रवेश करके देखा, लड़का चारपाई पर नींद से सोया है, पास ही एक स्टूल पर मोमबत्ती शमादान जल रहा है। चारपाई की पाटी पकड़े पूर्णयौवना, पतिप्राणा सुधा लज्जा से सिर झुकाये नीचे बैठी है।

उन्होंने कुछ देर तक यह अपूर्व शोभा देखी। बत्ती के स्वच्छ प्रकाश में उन्होंने निर्निमेष नेत्र से हृदय के सर्वस्व रत्न को देखा। पश्चात् धीरे धीरे सुधा के पास आकर उस कोमलाङ्गी प्रेमविह्वला बाला को छाती से लगा कर बड़े प्यार से उसके दोनों होंठ चूमे।

सुधा ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। आनन्द से बेसुध हो वह कोमल बाहुलता पति के गले में डाल कर प्रेमपूर्वक लिपट गई। उसने पति का गाढ़ालिङ्गन करके बहुत दिनों की विरहव्यथा को शान्त किया। सुधा का हृदय मारे खुशी के फूल उठा। उसकी दोनों आँखों में आनन्द के आँसू उमड़ आये।

शिवचन्द्र ने रेशमी रूमाल से उसके आँसू पोंछ कर बार बार उसके कमल समान सुन्दर नयनों को चूम कर कहा—"प्यारी, मैं तुम्हारी जैसी रमणीरत्न को पाकर इस संसार में अपने को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विशेष भाग्यवान् समझता हूँ। तुम्हारी जैसी पतिप्राणा स्त्री पाकर मेरा जीवन सार्थक हुआ। वह घर बिना दिये के उँजला रहता है, जिस घर में तुम्हारी सी सच्ची प्रीति वाली स्त्री रहती है। स्वदेश, विदेश, सुख, दुःख, शोक, सन्ताप सब में तुम्हीं मेरे हृदय की मणि हो, तुम्हीं मेरे नयनों की पुतली हो, तुम्हीं मेरी गृह-लक्ष्मी हो।

सुधा कुछ उत्तर न दे सकी। उसने स्वामी के प्रेमपुलकित मुख की ओर प्रेमाश्रुभरी दृष्टि से देखा और स्वामी के हृदय पर मुख रख कर आँसू बहाने लगी।

पतिप्राणा सुधा को यदि मन की बात शब्दों द्वारा प्रकट करने का सामर्थ्य रहता तो वह अवश्य अपने पति से कहती—"प्राण-नाथ, आपने मुझ दरिद्रिणी को अपने हृदय में स्थान दिया, इस दुःखिनी के लिए, कितनी निन्दा और कितने कष्ट सहे। मैं आपकी रत्न कैसी, मैं जब तक जिऊँगी आपकी दासी होकर रहूँगी, जन्म जन्म इसी पवित्र पद की सेवा करूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग्यारहवाँ परिच्छेद

ईजी—"क्यों री सुधा, तू अब तक सोई रही है ?"

सुधा—"नहीं माईजी, मैं तो उठी बैठी, आप इतने सवेरे··· ?"

माईजी—"हाँ, सवेरे शिव को एक बार देखने आई हूँ। अच्छा, यह लो, कल रात में एक ग्वालिन एक छछिया दही दे गई थी, वह शिवबाबू के लिए लेती आई हूँ।"

सुधा—"यह क्या माईजी ? अधिक आदर यत्न करने से पुरुष माथे जो चढ़ेंगे।"

अन्नपूर्णा—"माईजी का स्वभाव ही ऐसा है। दूसरी स्त्री को मानिनी बनने को सिखाती हैं और आप दूसरों को आराम पहुँचाने के लिए दिन रात हैरान रहती हैं, इन्होंने इसी परोपकार व्रत में अपनी सारी ज़िन्दगी बिता दी। दूसरे का दुःख आपसे देखा नहीं जाता। चौधरीजी के घर की खोज ख़बर आप न लेतीं तो उनकी स्त्री क्या अब तक जीती। उसके घर का आधा काम माईजी जाकर कर आती हैं। लालाजी जब बीमार हुए थे तब माईजी पाँच सात दिन तक बराबर उनके पास बैठी रहीं, एक बार भी अपने घर न आईं। सरला के अन्तकाल में यदि माई जी न रहतीं तो कौन उनकी सेवा करता ? ये दिन रात का कुछ विचार न कर जी जान से रोगी का यत्न करतीं। महल्ले के लड़के तो माईजी को देखते ही ख़ुशी से नाचने लगते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इनकी कृपा से दही और गुड़ प्रायः किसी घर वाले को ख़रीदना नहीं पड़ता ।"

माईजी—"क्या करूँ बेटी, जब किसी को बीमार देखती हूँ तब उसकी सेवा करनी ही पड़ती है। कहो सुधा, कल रात में कुछ मान वान ठाना था ? दो एक रूखी बातें सुनाईं ? इतने दिन बाद विदेश से आये हैं, कुछ देर मुँह फेर कर तो तुम ज़रूर बैठी होगी, कुछ रोष भी अवश्य ही दिखलाया होगा ?"

सुधा—"नहीं माईजी, यह सब करना मैं भूल गई ।"

माईजी—"तुम किस मुल्क की औरत हो ? ज़रा मुँह फुला कर बैठने ही से दो एक ज़ेवर हाथ लग जाता। यह तुमसे न हो सका। ख़ैर, यह तो बताओ तुम्हारे लिए कुछ ज़ेवर लाये हैं ?"

सुधा—"माईजी, मैं नहीं जानती। यह पूछना मैं भूल गई ।"

माईजी—"शिव, शिव ! क्या तुम एक बार ऐसी अबोध तो नहीं हो, बालिका भी नहीं, एक लड़के की माँ हो चुकी पर अभी तक तुमने कुछ लेने का ढङ्ग नहीं सीखा ? क्या इसी तरह तुम पति की सुहागिन बनोगी ? इसी तरह घर का काम चलाओगी ? इतने दिन विदेश में रह कर नौकरी की, रुपया पैसा ढेर कमाया होगा। वह क्या हुआ ? इसकी भी तुमने कुछ खोज की ? तुमने कुछ खोज न की ! तुमने चाँद सा सुन्दर मुँह लेकर क्या किया ? तुम्हारे नाम से कुछ रुपया बैंक में जमा कर देते—यह तुमने उनसे कहा था ?"

सुधा हँसते हँसते बोली—"माईजी, मैं यह कहना भी भूल गई ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माईजी—"बेटी, तुम सब भूल गईं ? अच्छा, अब न भूलना। जब तक आसन कुछ भारी न करोगी तब तक कुछ न पाओगी। अब मैं एक बार तुम्हारी नई चाची के घर जाती हूँ। वह तो अपना मतलब निकालने में बड़ी उस्ताद है।"

इस तरह बातें हो रही थीं, उसी समय शिवचन्द्र बाबू उस घर में आये। माईजी को देखकर वे कुछ सोचकर बोले—"माईजी, तुम बड़े सवेरे आईं, मैं आज एक बार तुम्हारे घर जाने की बात सोच रहा था। बल्कि निश्चय कर चुका था कि आज किसी वक्त ज़रूर तुमको देखने जाऊँगा।"

माईजी—"नहीं बेटे ! तुम क्यों जाओगे, मैं ही रोज़ रोज़ आकर तुम्हें देख जाऊँगी। कल साँझ को मैं आई थी, तुम्हारे आने में रात होते देख मैं चली गई। भगवान् तुमको दीर्घायु करें। जितने मेरे सिर में बाल हैं तुम उतने वर्ष जिओ। तुम्हारी कामना सफल हो, परमेश्वर तुम्हारा कल्याण करें। अहा ! आज यदि तुम्हारी सास जीती होती तो शरद ऋतु के पूर्णचन्द्रमा के समान सुन्दर जमाई को देखकर उसकी आँखें तृप्त होतीं।"

माईजी ने आँचल के कपड़े से आँखें पोछीं। कुछ देर बाद वह हँस कर बोली—"अच्छा, इतने दिन बाद आये हो, कहो, बहू जी के लिए कौन कौन गहने लाये हो ? तुम्हारी घरवाली बड़ी सीधे स्वभाव की है। वह बिचारी कुछ छल-प्रपञ्च करना नहीं जानती, इससे उसे ठग लेना ठीक नहीं। यह कुछ नहीं बोलती है तो क्या इसी से यह कुछ न पावेगी ? मैं इसी के लिए कमर बाँध कर तुमसे झगड़ा करने आई हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिवचन्द्र ने हँस कर कहा—"पहले तुम कि पहले बहू ? यह कहकर वे जो माईजी के लिए टसर की साड़ी लाये थे, वह उनके आगे रख दी ।

माईजी की आँखों में फिर जल भर आया । वह बोलीं, "बच्चे, यह क्यों ? मेरे लिए ऐसा वस्त्र लाने की क्या ज़रूरत थी ? मैं अब बूढ़ी हुई । तीन पन बीत गया, चौथा बाक़ी रह गया है । मुझे इस दुनिया में अब कै दिन रहना है । मैं ऐसी अच्छी साड़ी लेकर क्या करूँगी ? तुमको माईजी का स्मरण था, इसी से माईजी प्रसन्न होकर मन से आशीर्वाद देती है । भगवान् तुमको सदा सुखी करें। किन्तु देखो, बच्चा शिव, मेरे लिए फिर कभी ऐसा फ़ज़ूल ख़र्च न करना ।"

शिवचन्द्र को घर में आते देख सुधा डेढ़ हाथ का घूँघट लटका कर कोने में जाकर खड़ी हुई । उसने न मालूम अन्नपूर्णा के कान में क्या कहा । अन्नपूर्णा ने हँसकर माईजी से कहा—"भाभी कहती है, माईजी टसर की साड़ी ले लें, और भी मायाजाल फैला कर जो ले सकें, लें, नहीं तो पुरुषों के निकट उनकी कुछ क़दर न रहेगी ।"

शिवचन्द्र हँसकर बोले—"क्या माईजी ने किसी को माया-मन्त्र की शिक्षा दी थी ? माईजी की भाँति यदि सब कोई सब के साथ प्रेम दिखलाते, सुखदुःख में सहानुभूति प्रकट करते तो यह संसार स्वर्ग के तुल्य हो जाता ।"

माईजी के जाने के बाद गाँव की जितनी बूढ़ी स्त्रियाँ थीं, सब शिवचन्द्र को आशीर्वाद देने आईं । इसके अनन्तर सुधा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की चाची, मौसी, दादी आदि सब की सब शिवचन्द्र को देखने आईं। समाज के नियमानुसार इन सब ने सुधा और शिवचन्द्र को अलग कर दिया था, सभी ने इनके यहाँ आना जाना और खाना पीना बन्द कर दिया था। परन्तु इनका निष्कलङ्क निर्मल चरित्र, इनकी असीम लोकोपकारिता, इनकी उदारता और सत्कार्य-कारिता किसी से छिपी न थी। गाँव के आबालवृद्ध सभी इनकी प्रशंसा करते थे, यही कारण है कि आज बालक, वृद्ध और वनिताएं सभी समाजबन्धन को तोड़कर धर्मपुर के गौरव स्वरूप शिवचन्द्र को देखने आईं। शिवचन्द्र भी सब के साथ हुलस कर मिले। उन्होंने अपने प्रिय भाषण से सब को सन्तुष्ट किया। वृद्धगणों को प्रणाम करके धोती चादर आदि वस्त्र दिये, बालकों को खिलौने और प्रारम्भिक शिक्षा की पुस्तकें दीं। बन्धुबान्धवों को कुशलवार्ता पूछ कर पान इलायची दी। छोटी छोटी लड़कियों के हाथ में एक एक रुपया दिया। जो लोग शिवचन्द्र से मिलने आये, सभी उनके शिष्टाचार से प्रसन्न हो उन्हें धन्यवाद देकर अपने अपने घर गये।

भोजन करके शिवचन्द्र सारे दिन घूम घूम कर सब के घर गये, और सब की भेट की, शत्रु मित्र का कुछ विचार न किया, सब के साथ जी खोल कर मिले। आख़िर साँझ को तारिणी बाबू के घर भी गये। तारिणी बाबू ने उनका आदर-सत्कार किया, परन्तु उनके जाते समय तारिणी बाबू की गर्विष्ठ नवयौवना गृहिणी ने मुँह फुला कर कहा—"नौकरी मिली है तो कोई इनकी नौकरी छीनने थोड़े ही जाता है, जाकर अपनी नौकरी करें, मेरे यहाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इनके आने जाने का क्या काम ? जो जाति से बाहर हो गया, जिसने कुल का धर्म त्याग दिया, उसके सम्पर्क से मेरा घर अपवित्र होगा, ऐसे विधर्मी के साथ मैं सम्बन्ध जोड़ना नहीं चाहती।"

सन्ध्या समय घर आकर शिवचन्द्र कुछ जल-पान करके ठाकुर महाशय के घर गये। ठाकुर महाशय गाँव में बड़े वृद्ध थे, किन्तु अब भी शरीर से वे बलिष्ठ थे। हाथ में लाठी ले महल्ले महल्ले घूमते थे। घर घर की ख़बर रखते थे, उनका चेहरा रोबदार था, परन्तु वे बड़े हास्यप्रिय थे। गाँव की स्त्रियाँ उनसे बहुत संकोच करती और डरती थीं। वे जिधर टहलने को जाते थे उधर लड़कों की भीड़ उमड़ पड़ती थी, परन्तु स्त्रियाँ उन्हें देखकर भागती थीं।

ठाकुर रामप्रसाद शिवचन्द्र को बालकपन से ही बहुत प्यार करते थे और वह जब जब गाँव को आता था, वे उसको देखने जाते थे।

गरमी के मौसम में सन्ध्या समय दालान के उसारे में एक चौकी पर ठाकुर महाशय अकेले बैठे हैं। मन ही मन पूर्व का वृत्तान्त सोच रहे हैं। उनके मुँह में जो बात आती थी बोल देते थे परन्तु हृदय उनका बड़ा ही स्वच्छ था।

शिवचन्द्र को देख कर रामप्रसाद हृदय से पुलकित हो कर बोले—"आओ, भाई आओ, बहुत दिनों में आज तुम को देखा, कहो, थे तो तुम अच्छी तरह ?"

शिव०—"आपकी कृपा से अच्छे हैं।"

रामप्रसाद—"तुम्हारी माता कुशलपूर्वक हैं ? अन्नपूर्णा भली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भाँति हैं ? और मेरी वह प्यारी पतोहू प्रसन्ना है ? छोटा बच्चा भला चङ्गा है ?"

शिव०—"आपके आशीर्वाद से सब अच्छे हैं।"

ठाकुर—"इतने दिन तुम पश्चिम प्रान्त में क्या करते थे ? उस देश का जलवायु कैसा है ?"

शिवचन्द्र—"मैं रोज़गार कर रहा था, विहार की आबहवा अच्छी है ? परन्तु इस देश की तरह वहाँ भी सर्वत्र मैलेरिया ज्वर फैला है। इस बुरी बीमारी से देश की बड़ी दुर्दशा हो रही है।"

ठाकुर—"तुम क्या कहोगे, हम पहले ही से जानते हैं। पश्चिम प्रदेश बड़ा ही अच्छा है। काशी, प्रयाग जैसा ही धर्म-स्थान है, वैसा ही शरीर के अंश में भी विशेष लाभदायक है।"

शिवचन्द्र—"सुना है, काशी, प्रयाग, दिल्ली और आगरे तक मैलेरिया ज्वर व्याप्त है। क्या जानें, पंजाब तक यह बीमारी पहुँच गई हो तो कोई आश्चर्य नहीं। मैं दो वर्ष से बराबर विहार में ही था; वहाँ तो मैलेरिया का विशेष प्रकोप है। परन्तु इस दो वर्ष के भीतर भाग्य की बात है कि मुझे एकबार भी ज्वर न हुआ।"

इस प्रकार ठाकुर महाशय के साथ बड़ी देर तक भाँति भाँति की कथा-वार्ता होती रही। कभी पश्चिम देश की, कभी नौकरी की, कभी धर्मपुर की आलोचना होने लगी। ठाकुर ने पूर्वकाल की नौकरी की कितनी ही गप्पें कहीं, पूर्वकाल की कितनी ही घरेलू रीति नीति की बातें कहीं। किस तरह अफ़सरों को वश में रखना होता है, किस तरह जोरू को अपने वश में रखना होता है, यह भी कहा। यह सब बात कहते कहते उन्होंने पूछा—"तुम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अभी किस मतलब से छुट्टी लेकर आये हो ? क्या मेरी पतोहू को साथ ले जाना चाहते हो ? यह न होगा ? मैं अपनी पतोहू को न जाने दूँगा ।"

शिवचन्द्र—"जब तक आपकी आज्ञा न होगी तब तक मैं अपने कुटुम्बियों को कैसे ले जा सकूँगा ?"

ठाकुर—"मैं कैसे आज्ञा दे सकता हूँ ? तुम सब कालेज के पढ़े हो, बहू को सिर चढ़ा कर रक्खोगे, अपनी नौकरी खोओगे, और पीछे फ़ज़ीहत में पड़ोगे ।"

शिव—"ठाकुर साहब, फ़ज़ीहत में क्यों पड़ूँगा ?"

ठाकुर—"पड़ोगे नहीं तो क्या ? क्या बहू के बिना तुम्हारा कोई काम न चलेगा ? क्या वह कोल्हू के बैल की तरह तुम्हारी आँखों पर पट्टी बाँध कर आप एक जगह बैठी रहेगी और तुम्हें चारों ओर घुमावेगी ? उन दिनों तो ऐसी रीति न थी, उन दिनों का व्यवहार ही कुछ और था ।"

शिव०—"क्या व्यवहार था ? कहिए न ? मैं भी दो एक पुरानी बात सुन लूँ, कुछ पुरानी रीति सीख लूँ ।"

ठाकुर—"सुनो, तब की बात ही कुछ और थी, उस ज़माने में बहू पैर पर पैर चढ़ाकर बैठो न रहती थी । वही घर का सब काम करती थी । खूब तड़के उठ कर घर आँगन में झाड़ू देना, चौका देना, बर्तन मलना, कूटना पीसना, रसोई बना कर पुरुषों को भोजन कराना, बालबच्चों को खिलाना, पिलाना, ये सब काम करके तब वे अपने मुँह में जल देती थीं । बिना काज किये क्या बहू पक्की गृहिणी हो सकती है ? तब की सास बहू को गृहिणी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बनाना जानती थी। तुम सब कालेज के पढ़े वैज्ञानिक हो, उस ज़माने की बात क्या जानो ?"

शिव०—"सुनते हैं, पुराने समय में सास कभी कभी अधजली लकड़ी से बहू के हाथ पैर झुलसा कर घर का काम सिखाती थी, दो दो दिन तक उसे बिना दाना पानी के घर में बन्द करके शिक्षा देती थी।"

ठाकुर—"हाँ, हाँ, यह कुछ बुरी बात नहीं। कुछ शिक्षा देनी ही चाहिए। बिना शासन के क्या संसार का काम ठीक ठीक चल सकता है ? क्या तुम सब घोड़ा गाड़ी नहीं हाँकते ? गाड़ी हाँकते समय घोड़े की रास ज़रा खींच कर रखने से घोड़ा मज़े में चलता है। रास ढीली होने से घोड़ा जिधर न जाने को उधर ही जाता है। तुम्हारे हाथ की रास जैसी ढीली देखता हूँ, उससे जान पड़ता है, मेरी पतोहू कदाचित् राह छोड़ कुराह चल पड़े।"

शिवचन्द्र ने हँस कर कहा—"खो क्या घोड़ा है ? क्या वह अपना कर्तव्य नहीं जानती ? उसे क्या घोड़े की तरह मुँह में लगाम डाल कर घुमाना होगा ?"

ठाकुर—"हाँ भाई ! कर्तव्य सभी जानते हैं, तो भी मुँह में लगाम रहने से अर्थात् नियम की पाबन्दी रहने से काम बहुत ठीक चलता है। तुम्हीं जो यह सरकारी नौकरी करते हो, कहो तो कैसा कड़ा नियम है ? अगर सरकार ज़रा भी असावधान हो तो उसके सभी काम बिगड़ जायँ। वह अपने हाथ की बागडोर को कभी ढीली होने नहीं देती।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिवचन्द्र—"सरकार ने हम सब को वेतन देकर नौकर रक्खा है, नौकर की तरह काम लेती है। बहू क्या हमारे घर की नौकरानी है? काम तो सभी को करना उचित है। हम सब बाहर का काम करते हैं, वे घर का काम करती हैं। इससे क्या उनके साथ दासी की तरह व्यवहार करना उचित है?"

ठाकुर—"यह देखो! यह कालेज के शिक्षित लड़कों की बोली है। किसी के ऊपर किसी काम का भार देने से जैसा काम होता है वैसा क्या यों ही छोड़ देने से होता है? सभी लोग स्वतन्त्रता चाहते हैं। संसार की यही रीति है। जब किसी के हाथ कोई काम देगे, उस पर कड़ी निगाह रक्खोगे, तभी तुम्हारा काम जैसा चाहिए होगा। तभी तुम सोलह आना काम ले सकोगे।"

शिव०—"अगर बिना भार दिये ही न सोलह आना, बारह आना घर का काम चले और उसके साथ साथ कुछ प्रेम भी पाया जाय तो क्या हर्ज है?"

ठाकुर—"कालेज के विद्यार्थी की बोली सुनो! अरे बाबू! कुछ काम का बोझ न देने से न तुम उससे कोई काम ले सकोगे, न प्रेम का सुख ही भोग सकोगे। शायद तुम नहीं जानते हो, स्त्रियों को मैना पक्षी की तरह सोने की रस्सी में बाँध कर बिठा रखने से क्या उनकी इज़्ज़त बढ़ती है, या उसमें कुछ विशेष प्रेमभाव पाया जाता है? नहीं, कदापि नहीं। अगर तुम ऐसा समझो तो तुम्हारा ख़याल ग़लत है। तुम अच्छी तरह आँख पसार कर चारों ओर देखो, जिस घर की स्त्री पाँव पर पाँव दिये बैठी रहती है, उस घर का कोई काम ठीक ठीक नहीं चलता। जिस घर का पुरुष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वभाव का कड़ा होता है, हरेक काम पर ध्यान रखता है, खूब काम लेना जानता है, किसी काम में कुछ त्रुटि होने से स्त्री का शासन करता है, स्त्री से घर का कुल काम करा कर घर पर अपना पूरा आधिपत्य जमाये रहता है। देखोगे, उसी घर की स्त्री अधिक यत्नशीला होती है, उसी के घर की सब वस्तु हिफ़ाज़त से रहती है, उसी घर का सब काम समयानुसार होता है। उसी घर की रसोई भी अच्छी बनती है और उसी घर की स्त्री पतिभक्ति करना जानती है। स्त्रियों का प्रेम पके आम की तरह किसी पेड़ में नहीं फलता है। जो पुरुष कुछ शासन कर सकता है, मिज़ाज का कुछ कड़ा होता है, कुछ स्वार्थी होता है, उसकी ओर स्वभावतः स्त्रियों के चित्त का अधिक झुकाव होता है और स्त्रियों के चित्त की यही वृत्ति है।

शिवचन्द्र ने हँसते हँसते कहा—"दादाजी, एक देश में एक राजा था। वह कहता था, आटा जितना ही ज्यादा गूँधोगे, रोटी उतनी ही नरम होगी। स्त्रियों को जितना कुचलोगे, उनका मन उतना ही मुलायम होगा। क्या दादाजी का भी यही मत तो नहीं है?"

ठाकुर—"तुम्हों कहो न, क्या खूब महीन पीसे मयदे की पूरी मुलायम नहीं होती? गरमागरम आलू की तरकारी के साथ मुँह में देने ही से गल जाती है। अच्छा, कहो तो, बहूजी रसोई बनाना जानती है?"

शिव०—"हाँ, कुछ जानती है, अपनी बहन से सीखा है।"

ठाकुर—"अच्छी बात है। और काम भी उसे सिखलाओ,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोनों वक्त उससे घर का काम कराओ, तभी वह होशियार होगी। मिज़ाज को ज़रा कड़ा रखने से बहू डर कर रहेगी। आँख दिखाते रहने से बहू यत्न करना सीखेगी। देखते नहीं हो ? जिस घर के पुरुष को रात में नींद नहीं आती, उस घर की स्त्री पैर दबाना सीखती है। और जिस घर के पुरुष उदररोगी होते हैं उस घर की स्त्री के हाथ की रसोई अच्छी बनती है।"

शिव०—"दादाजी, यह तो बड़ी मुश्किल है! बहू को पैर दबाना सिखाने के लिए नींद रोकना, और रसोई सिखाने के लिए उदररोगी बनना होगा।"

ठाकुर—"नहीं, यह मैंने एक बात कही है, पेट-रोगी बनने की ज़रूरत नहीं। ज़रा गरम मिज़ाज होने और नज़र कड़ी रखने ही से बहू, बहू की तरह रहती है, नहीं तो वह पुरुष के सिर पर सवार हो जाती है। अधिक मृदु स्वभाव होने से घर का काम ठीक ठीक नहीं चलता। हम लोग कुत्ते बिल्ली को पालते हैं, उन्हें केवल दूधभात खिलाने और बिछौने पर सुला रखने ही से शिक्षित नहीं बना सकते। बीच बीच में उन पर दण्ड-प्रहार करने से वे भयभीत रहते हैं और अदब मानते हैं।"

शिवचन्द्र—"जो लोग स्त्रियों को कुत्ते बिल्ली की तरह देखते हैं वे उनके साथ उसी तरह का खोटा व्यवहार करते हैं, किन्तु जो उन्हें सम्मान के योग्य समझते हैं, वे उनको और ही रीति से वश में लाने का यत्न करते हैं।"

ठाकुर—"यही तो कालेज के पढ़े लिखे नवयुवकों की समझ है। सम्मान क्या वस्तु है ? सम्मान से क्या होता है ? क्या उसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से पेट भरता है ? किसी तरह काम लेना चाहिए। जो कुछ है सो काम है। यह संसार काम ही के ऊपर चल रहा है। बिना काम के कोरे सम्मान से क्या हो सकता है ? अच्छा, कहो तो चौधरीजी का लड़का जो उस महल्ले में रहता है उसको तुम जानते हो ?"

शिवचन्द्र—"हाँ, जानता हूँ।"

ठाकुर—"वह कैसा पक्का लड़का है ! बहू को कैसी होशियार बना रक्खी है। ठीक मैना पक्षी की तरह उसे पढ़ाया है। चौधरीजी का लड़का जो हुक्म देगा, बहू वही करेगी, चूँ तक न बोलेगी। कोई इस तरह की तालीम दे तो देखूँ ? मैंने कई बार देखा है, माघ महीने के जाड़े में उसकी बहू थर थर काँपती हुई, चार बजे रात को घाट पर बैठ कर बर्तन मल रही है, जेठ मास के ठीक दोपहर की कड़ी धूप में बच्चे को गोद में लिये और बग़ल में कलसी दबाये कुएँ से पानी लाने के लिए जा रही है। स्वामी के स्नान-भोजन के उपरान्त बच्चों को खिला पिला कर जब सुला लेती है तब अपने मुँह में पानी डालती है। इसी को कहते हैं हिन्दू घर की स्त्री ! चौधरी के लड़के ने बहू को कैसी अच्छी तालीम दी है ! क्या मजाल कि वह नवयुवती कुछ बोले, सम्मान किसे कहते हैं वह विचारी जानती तक नहीं।"

शिव०—"बहू को इस तरह शिक्षा देना क्या उचित है ? इस में न तो स्त्री सुख से रहती है न पुरुष ही।"

ठाकुर—"स्त्री को और सुख क्या ? पुरुष के हाथ से दो चार धौलधप्पर खाने ही में उसको सुख है। इस तरह बहू को सुशिक्षित करने से पुरुष को कैसा सुख मिलता है वह मैं क्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहूँ ? चौधरी के लड़के को बिछौने से उठते न उठते उसके लिए गरम दूध तैयार रहता है—"टहल कर घर आते न आते उसकी स्त्री पैर धोने के लिए पानी लिये खड़ी रहती है। स्नान होते न होते उसके लिए गरम रसोई तैयार रहती है। इसमें ज़रा भी इधर उधर हो तो ! हाथ मुँह धुलाने के अनन्तर पान लाने में कुछ विलम्ब तो हो, भोजन के अनन्तर बिछौना झाड़ कर बिछाने में कुछ विलम्ब तो हो ? बहू का सामर्थ्य क्या, जो इन सब कामों में वह विलम्ब तो करे ? बहू का सामर्थ्य क्या जो इन सब कामों में वह कुछ विलम्ब कर सके। जिस दिन किसी काम में कुछ गड़बड़ हुई, उस दिन समझ लो, बहू के सात पुरखों का उद्धार हो गया, उस दिन बहू को निर्जला एकादशी का फल मिले बिना न रहेगा। एक दिन बहू का जी अच्छा न था, रसोई बनाने में कुछ देर हो गई, चौधरीजी के बेटे ने चिल्ला कर कहा, अगर महारानी साहबा के घर का काम अकेले नहीं चलता, काम करने में इतना कष्ट होता है तो एक और महारानी लाने की व्यवस्था की जायगी। यह सुन कर बहू मूर्च्छित होकर गिरी और रोने लगी। उसके दूसरे दिन उसने दो घड़ी रात रहते रसोई चढ़ा दी। समझे बाबू, इसी तरह बहू पक्की गृहिणी बनाई जाती है। हमारे हिन्दूघरों की यही रीति है—"तुम कालेज के शिक्षित, यह सब रीति क्या जानोगे ?"

शिव०—"चौधरीजी की पतोहू अकेली घर का इतना काम करके और इस प्रकार स्वामी की सेवा करके अब तक जीती है। इससे बढ़ कर उसकी प्रशंसा और क्या होगी ?"

ठाकुर—"चाहे जो हो, उसे काम करना ही होगा। सुना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है, बहू शरीर से बहुत दुबली पतली हो गई है और बराबर बीम रहा करती है। पोखर से पानी लाते समय उस दिन वह चक्र खा कर गिर पड़ी थी, सीढ़ियों पर चढ़ते समय वह हाँफने लगत है। एक दिन रसोई बनाते समय उसे मूर्छा आ गई थी, तब भ काम जारी का जारी ही रहा। काम बन्द होने का कोई उपा नहीं। सुनते हैं, चौधरी का लड़का कहता है, एक बहू मरेगी तो फिर दूसरी बहू आवेगी"। परन्तु ठीक समय पर जो गरम दू की व्यवस्था है, वह नहीं रुक सकेगी। बहू सूख कर काँटा हो गई है, उसे देख कर लोग यही कहते हैं कि वह अब बहुत दिन न जिएगी। चौधरी का लड़का छिपे तौर से इधर उधर दूसरे व्याह का पैगाम भेज रहा है। चौधरी का लड़का हृदय का बड़ा ही प्रौढ़ है, अगर यह बहू मर जायगी तो छः महीने के भीतर फिर दूसरी बहू को सिखा पढ़ा कर तैयार कर लेगा।"

शिवचन्द्र दादाजी के साथ कुछ मधुर आलाप करने आये थे, शोकसंवाद सुनने की इच्छा से न आये थे किन्तु चौधरी के घर की बात सुन कर उनकी आँखों में आँसू भर आये। उन्होंने रूमाल से अपनी आँखें पोंछ डालीं। वे उस लड़की को बाल्य-काल से ही जानते थे, उन्होंने बाल्यावस्था में उसके साथ एकत्र रह कर खेल किया, उसका विवाह होते देखा, इसके अनन्तर क्रमशः उसके दो सन्तान होने की बात सुनी। दो वर्ष से विदेशस्थ होने के कारण उसका कुछ हाल उन्हें मालूम न हुआ था। आज ठाकुर रामप्रसाद के मुँह से यह सब बात सुन कर उनके मन में बड़ा दुःख हुआ। बड़ी देर तक वे चुपचाप रहे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पीछे धीरे धीरे बोले—"दादाजी, स्त्री का अनादर करना या उसे कष्ट देना हिन्दूधर्म नहीं, हिन्दू आचार भी नहीं। आज कल के स्वार्थी लोग स्वार्थसुख की इच्छा से हिन्दूधर्म की दुहाई देते हैं। बकवृत्ति वञ्चक-गण लोगों को ठगने के मतलब से देशीय आचार की दुहाई देते हैं, हृदयशून्य निर्दय लोग स्त्रियों के प्रति कठोर आचरण करके पुरानी आर्यरीति की दुहाई देते हैं। जो लोग स्वार्थसाधन के लिए देशाचार की दुहाई देते हैं, विलासपरायण होकर धर्मशास्त्र की दुहाई देते हैं और आत्मसुख के लिए अबला कोमलाङ्गी स्त्रियों के प्रति निर्दयता दिखलाते हैं, निष्ठुर आचरण करते हैं, वे न आर्य हैं, न हिन्दू हैं, उनके स्पर्श से धर्मपरायण हिन्दुओं की जाति जा सकती है। स्वार्थपरता प्रवञ्चना, और निर्दयता हिन्दू आचार नहीं है—सच्चा हिन्दूधर्म उदार, श्रेष्ठ और निःस्वार्थ है। केवल कितने ही नाममात्र के कुलीन, जात्यभिमानी, दुष्ट दुराचारियों ने स्वार्थ-सुख के लिए झूँठ मूठ सनातनधर्म का ढोंग रच कर सच्चे हिन्दूधर्म को कलङ्कित कर दिया है। इसलिए जो सच्चे हिन्दू हैं, जो हृदय से हिन्दूधर्म की रक्षा चाहते हैं, उनका मुख्य कर्तव्य यही है कि सामाजिक दोषों को दूर कर हिन्दू धर्म को निष्कलङ्कित करें।"

शिवचन्द्र की बात सुनकर ठाकुर रामप्रसाद कुछ न बोले। वे मन ही मन हिन्दूधर्म की आलोचना करने लगे। शिवचन्द्र उन्हें प्रणाम कर अपने घर आये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बारहवाँ परिच्छेद

धर्मपुर के समीप ही सनातनपुर नाम का एक बड़ा विस्तृत गाँव है। किसी समय वहाँ हज़ारों लोग बसते थे। किन्तु वर्दवान के मैलेरिया ज्वर से गाँव उजड़ सा गया है। तथापि वहाँ अब भी पाँच छः सौ घर वर्तमान हैं, जिनमें क़रीब एक सौ घर भले मानस, कई एक घर तेली, कुम्हार, लुहार, बढ़ई और जुलाहे आदि व्यवसायी लोग रहते हैं और अवशिष्ट घर छोटे क़ौम की किसान प्रजाओं के हैं। प्रतिदिन सवेरे गाँव में पैंठ लगती है, जहाँ चारों ओर से भाँति भाँति की चीज़ें बिकने को आती हैं। इसके अतिरिक्त वहाँ कई एक स्थायी दुकानें भी हैं। एक अँगरेज़ी स्कूल है, जिसमें ७०, ८० लड़के पढ़ते हैं। और एक हिन्दी पाठशाला है, जिसमें व्यवसायी और इतर जाति के सैकड़ों लड़के शिक्षा पाते हैं।

सनातनपुर के ज़मींदार तिवारी जी का घर पुराना है। पाँच छः पुरुखों से उनकी ज़मींदारी बहुवंशी होने के कारण बँट गई है। उसके कई टुकड़े हो गये हैं। आपस में ज़मींदारी बँट जाने पर, जैसी कि पुरानी रीति है, तिवारी जी के वंशजों में आपसी झगड़े के कारण कई एक मामिले मुक़द्दमे हो गये, और अब भी उसकी इतिश्री नहीं हुई है। इस झगड़े के पीछे उनमें कई एक हिस्सेदार बँट गये, उनकी सारी ज़मीन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीलाम हो गई। कोई कोई तो एकदम दरिद्र हो जाने के कारण गाँव छोड़ कर अन्यत्र जा बसे हैं और बर्दवान या कलकत्ते में नौकरी करके परिवार का पोषण कर रहे हैं। जो नौकरी करने में असमर्थ हैं वे दरिद्र होने पर भी किसी तरह गाँव में रह कर अपना निर्वाह कर रहे हैं। कोई कोई शरीफ़ जो मामले मुक़दमे से बचे हैं वे अब भी अपनी ज़मींदारी का अंश क़ायम रख कर सुख से समय बिता रहे हैं। उनकी जगह ज़मीन यथास्थित है, आमदनी भी पूरी है। बीच बीच में कोई मुक़दमा दैवयोग से आ पड़ता है तो वे सब उसकी कुछ परवा भी नहीं करते। आपसी झगड़े को वे जहाँ तक होता है, पंचायत के द्वारा निबटा लेना अच्छा समझते हैं।

वंशजों की जैसी अवस्था बीत रही है, पुरानी ज़मींदारी और मकान की भी वैसी ही अवस्था है। ईंट की पुरानी चहार दीवारी के भीतर एक पुरानी इमारत है, जो किसी तरफ़ टूट टूट कर गिर रही है, किसी तरफ़ उसकी मरम्मत हो रही है। सदर फाटक दिन रात खुला रहता है। पहले की तरह अब पहरा नहीं दिया जाता। दरवान की जगह ख़ाली पड़ी रहती है। घर के सामने की फुलवाड़ी इस समय जंगली पौधों से भरी है। घाट-बँधे पोखर की भी वही दशा है, मरम्मत न होने के कारण उसका जल बिगड़ गया है, सम्पूर्ण पोखर में सेंवार छा गया है।

पुराने मकान में अधिक रुपया ख़र्च करके मरम्मत कराना किसी को पसन्द नहीं, इसी से उसकी अवस्था ऐसी शोचनीय हो गई है। किन्तु कितने ही हिस्सेदारों ने अपनी अपनी नई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बैठक अलग अलग बनवाई है, जिनके पास जितना विभव है तदनुसार उन्होंने नया घर या नया कमरा बना लिया है। उ हिस्सेदारों में किसी का घर तो महज़ मामूली है और किसी क घर प्रासाद का सामना कर रहा है।

इस प्रकार सनातनपुर की ज़मींदारी कई हिस्सों में बट गई उसके कई हिस्सेदार हो गये। उनकी अवस्था भी भिन्न भिन्न है तथापि उनके घर की मर्यादा अब तक वैसी ही बनी है। सब लोग उन्हें आदर की दृष्टि से देखते हैं। वे सब सनातनपुर के तिवारीजी के नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध हैं, और उस हाते के भीतर रहने वाले तिवारियों में क्या धनी क्या दरिद्र सभी सब जगह सम्मानित होते हैं। लड़के लड़कियाँ सब मिला कर प्रायः सौ से ऊपर लोग उस प्राचीन हाते के भीतर निवास करते हैं, कोई तो उस पुराने टूटे फूटे घर के अन्दर हैं और कोई अपने नये मकान के भीतर। कोई राजसी सुख भोगता है, प्रजाओं के साथ नीति का वर्ताव करता है और कोई प्रजा के ऊपर अत्याचार करके ज़बरदस्ती उसके छप्पर पर से कोहड़ा तोड़ लाता है तब उसकी गृहिणी तरकारी बनाती है। किसी घर की स्त्री अपने हाथ से बर्तन मलती और पानी लाती है। किसी घर की रमणी हीरे मोतियों से जड़े हुए स्वर्णभूषण धारण करके अपने पति के मन को मोहित किये रहती है। इस प्रकार भिन्न भिन्न अवस्था होने पर भी देश विदेश सर्वत्र सनातनपुर के नामी ज़मींदार तिवारी जी के वंशधरों का आदर होता है। उनका प्रतिष्ठित घर अब भी पूर्ववत् आदरणीय माना जाता है।

इस बहुवंशी तिवारीजी के घराने में आज कल कामिनीकान्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही सर्वप्रधान हैं। इनके पिता बड़े बुद्धिमान् थे। उन्होंने छल, बल और कौशल से कितनों को ठग कर तथा कुछ रुपयों से ख़रीद कर ज़मींदारी के कई एक छोटे छोटे टुकड़े अपने हाथ में कर लिये। आख़िर वे उस मौज़े के चार आने के मालिक हुए। उनके पुत्र कामिनीकान्त बाबू ने अपनी बुद्धि और प्रभाव से और भी तीन आना बढ़ाया। इसलिए अब वे सात आने के मालिक कहलाने लगे। उनके पिता नलिनीकान्त ने उनको कलकत्ते के विद्यालय में शिक्षा दिलाई थी। धनाढ्य ज़मींदारों के बालक जैसे पढ़े लिखे होते हैं वे भी वैसे ही हुए। इसके साथ साथ उन्होंने अमीरी चाल भी सीखी। पिता की मृत्यु के अनन्तर कामिनीकान्त ने अपने हिस्से के मकान और कमरे को अच्छी तरह सजाया। चँदोवा, परदा, झाड़, कण्डील, तसवीर, पंखा, संगमर्मर के टेबुल, गद्देदार आराम कुरसी, ग़लीचे आदि अनेक सजावट की चीज़ों से उनका नया कमरा अपूर्व शोभा पाने लगा। मकान के सामने एक बाग़ीचा लगाया। उसके बीच में एक छोटा सा तालाब खुदवाया, जिसके चारों घाट पत्थर से बँधवा दिये। चारों घाटों पर संगमर्मर की मूर्ति दर्शकों के चित्त को आकर्षित कर रही थी। बाग़ के भीतर एक नाचघर भी बनवाया। उसमें कभी कभी साहबों को भोज देते थे और कभी कभी कलकत्ते की प्रसिद्ध वेश्या को बुला कर नचाते थे। कलकत्ते में बराबर उनका जाना आना होता था, इससे कलकत्ते के कितने ही सुसभ्य बन्धुगण भी कभी कभी उनके इन्द्र-भवन में आकर स्वर्गीय सुख लूटते थे।

कामिनीकान्त बाबू जैसे विलासप्रिय थे वैसे ही प्रतापी भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थे। प्रजागण उनका नाम सुनकर काँपते थे, थोड़े अंशवाले पट्टीद उनका अत्याचार सहते थे, हिस्सा पाने वाली अबलायें उन अपमानित होकर अपने घर जाकर रोती थीं। तिवारीजी के अन्यान घरों के बालक-बालिकागण उनको देखते ही डर कर भागते थे हाकिम हुक्काम के यहाँ उनका बड़ा नाम था। पुलिस उनसे डरत थी। गाँव के बूढ़े लोग कहते थे, "कई वर्ष पूर्व आपस में दंगा फ़साद होने के कारण तिवारीजी के किसी लड़के का ख़ून हो गय था, किन्तु उसकी लाश नहीं पाई गई। पुलिस पता लगाते लगा थक गई पर ख़ून साबित न कर सकी।

इस परिच्छेद के अन्त में इतना और कह देना आवश्यक कि कामिनीकान्त बाबू की उम्र इस समय लग भग पचास वर्ष की होगी तब भी उनके शरीर के तेज और कान्ति में कुछ विशेष अन्त नहीं पड़ा है।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेरहवाँ परिच्छेद

क दिन साँझ को कामिनीकान्त बाबू अकेले बाग़ में टहल रहे थे। ऐसे समय में सहसा एक दीर्घकाय (लम्बा) जटाधारी उनके सामने आ खड़ा हुआ। जटाधारी ने कामिनी बाबू को आशीर्वाद दिया। पश्चात् वह उनका प्रासाद, बाग़, नाचघर आदि बड़े ग़ौर से देखने लगा।

कामिनीबाबू ने पूछा—"आप कौन हैं?"

रमानाथ—"मैं एक विद्वान् ब्राह्मण हूँ। काशी और नवद्वीप आदि स्थानों में कई वर्ष तक मैंने संस्कृत-शास्त्र पढ़ा है, अब इस पुत्र को साथ ले कर वङ्गदेश में आया हूँ। नाम मेरा रमानाथ उपाध्याय है।"

कामिनी बाबू—"यहाँ आप कब आये? यहाँ आने का क्या उद्देश है?"

रमानाथ—"मैं इस गाँव में आज ही आया हूँ। कुछ दिन आप के यहाँ रह कर विद्यार्थियों को पढ़ाऊँगा। मुख्य उद्देश मेरा यही है। सुना है, इस प्रसिद्ध राजभवन में अनेक अतिथि अभ्यागत आश्रय पाते हैं, इसलिए यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं भी किसी टूटे फूटे घर में आपके आश्रयवर्ती होकर कुछ दिन विश्राम करूँ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामिनी बाबू—"आपके इस प्रस्ताव से मैं अत्यन्त प्रस हुआ। विद्वानों को आश्रय देना मेरे वंश की रीति है।"

रमानाथ—"आपके स्वर्गीय पिता पण्डितों का विशेष आद करते थे।"

कामिनी बाबू—"आप मेरे स्वर्गीय पिता को कैसे जानते हैं?

रमानाथ—"उन्हें कौन नहीं जानता? वे बहुत द्रव्य ख़ करके सदावर्त देते थे, दीन दुखियों पर दया रखते थे। काशी भी उनका नाम छिपा नहीं है।"

कामिनी बाबू—"आपकी बातों से मुझे बड़ी ख़ुशी हुई जब आप इस गाँव में आये हैं तब मैं आशा करता हूँ, आप कु दिन यहाँ रह कर मेरे घर को पवित्र करेंगे।"

रमानाथ—"रहने की इच्छा से तो मैं आया ही हूँ। आ आपकी जैसी कृपा हो।"

कामिनी बाबू—"आप अपनी पसन्द का कोई घर चुन लें और उसमें पुत्रसहित निवास करें। इससे मैं अपने को अनुगृही समझूँगा। मेरा एक नौकर आपके रहने का सब प्रबन्ध ठीक क देगा।"

रमानाथ और उनके पुत्र दयानाथ ने उस विशाल प्राची भवन के नीचे के एक टूटे से घर में रहने को स्थान पाया। सन्ध्य समय कुछ जलपान करके धरती में कम्बल बिछा कर दोनों बाप बेटे सो रहे।

दूसरे दिन सवेरे तिवारीजी के घर के सब लोगों ने सुना पश्चिम देश से एक बड़े महात्मा साधु आये हैं। बाबू लोग एक ए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर उनके दर्शन को आये और उनके साथ दो चार बातें करके प्रसन्न हुए। स्त्रियाँ पोखर से आते समय घड़े को बग़ल में दबा कुछ देर तक खड़ी होकर महात्मा को देख गईं। लड़के सब दूर ही से जटाधारी महात्मा का दर्शन करके जिधर तिधर भागे। दो एक दिन के बाद फिर संयोग हो से कोई उनके दर्शन को आता। स्त्रियाँ आपस में कहने लगीं, "वह न साधु है न संन्यासी है, हाथ देखना नहीं जानता, इससे वह ज्योतिषी भी नहीं। वह पश्चिम देश का कोई एक पण्डित है। जान पड़ता है वह एक पाठशाला खोलने की इच्छा से यहाँ आया है। देखती हूँ, दिन रात पोथी लिये बैठा रहता है और अपने लड़के को पढ़ाता है। अहा! लड़के का मुँह कैसा सुन्दर है, मानो सोने का चाँद है।"

उस ज़मींदार घराने में योगमाया नाम की एक अधेड़ विधवा थी। वह जब तब पण्डितजी की सेवा टहल कर जाती थी। योगमाया का, बाल्यावस्था में, इस प्रशस्त घर में बड़े समारोह के साथ व्याह हुआ। उसका ससुर इस ज़मींदारी का एक प्रधान हिस्सेदार था। लोग कहते हैं, उसके व्याह होने के कुछ ही दिन बाद उसका ससुर मर गया। इसके अनन्तर उस हतभागिनी का पति भी शीघ्र ही स्वर्गवासी हुआ। अनाथ विधवा की ज़मींदारी पर दीगर हिस्सेदारों ने दख़ल कर लिया। तबसे वह असहाय विधवा उस विस्तीर्ण श्वसुर-कुल में दासी की तरह रह कर दुःख से समय बिताने लगी। दोनों समय भर पेट उसे खाने तक को मिल जाता है। परन्तु वह अपमान का भोजन उसे विषवत् जान पड़ता है। लोगों के भर्त्सना-वाक्य वह चुप चाप सह लेती है; किसी से कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं कहती। जब जो कोई काम करने को कहता तभी उसक काम कर देती है, पानी ला देती है, बर्तन मल देती है, और घ आँगन लीप-पोत देती है। उसने तीस वर्ष इसी तरह वैधव्य अवस्था में बिताये। शरीर उसका दुबला है, परन्तु मुख की शोभा अब भी म्लान नहीं हुई है, दोनों नेत्र अब भी वैसे ही कोमल और शान्तिभाव से भरे हैं। दोनों बाँहें कमलनाल से खिन्न होने पर भी लावण्ययुक्त हैं। अब भी उसके सर्वाङ्ग में अच्छे कुलशील का माधुर्य भरा है। उसने तीस वर्ष कष्ट से बिताये हैं और भी कितने ही वर्ष इस तरह बिता कर संसारी दुख से छुटकारा पावेगी। वह मन ही मन ऐसी आशा कर रही थी और परमेश्वर का नाम जप रही थी।

जिस दिन सन्ध्या समय उपाध्यायजी उस ज़मींदार के घर आये थे उसी दिन योगमाया उनको देखने आई थी। उपाध्याय को दयालु, शान्त और उन्नत मूर्तिमान् देख कर और उनके पुत्र दयानाथ का अत्यन्त सुन्दर, प्रशान्त और तेजःपूर्ण मुख देख कर उसके हृदय में ममता उत्पन्न हुई। उसने अपने मन से उपाध्याय का घर झाड़ बुहार कर साफ़ कर दिया, पानी ला दिया और आवश्यकीय सब वस्तुओं का प्रबन्ध कर दिया। उपाध्याय ने बड़ी देर तक उस दुबली दुःखिनी की ओर देखा। उसकी दीन दशा देख उनकी आँखों से आँसू टपक पड़े। उन्होंने उससे पूछा—"देवी! देखता हूँ, तुम बड़ी दयालु हो। दरिद्र के प्रति तुम्हारा हृदय अत्यन्त सदय है। तुमने मेरी बहुत सेवा की। भगवान् तुम्हारा उपकार करेंगे। इस जीवन में तुमने अधिक कष्ट पाये; किन्तु अब तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कष्ट का शीघ्र अवसान होगा। दुःखरात्रि का अन्त हो कर शीघ्र ही सुखसूर्य का उदय होगा।

तब से योगमाया उपाध्याय की बराबर सेवाशुश्रूषा करने लगी। वही उनके पाक का सब प्रबन्ध कर देती थी। उपाध्याय अपने हाथ से रसोई बनाते थे। रात में कम्बल बिछा कर बाप बेटे सो रहते थे। चारपाई पर न सोते थे और दूसरे का बिछौना भी वे व्यवहार में न लाते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौदहवाँ परिच्छेद

थोड़े ही दिनों में सनातनपुर और उसके आस प
के गाँवों में रमानाथ उपाध्याय का नाम
गया। वे योगी, संन्यासी नहीं हैं, हाथ देख
नहीं जानते, तन्त्रविद्या भी नहीं जानते, कि
हिन्दूशास्त्र में उनकी असाधारण योग्यता
विद्या के प्रचार में उनका विशेष उत्साह है, शास्त्र की व्याख
करने में वे बृहस्पति के समान पण्डित हैं। प्रातःकाल में स्ना
करते समय जब वे उच्च स्वर से वेदगान करते हैं, तब स्त्रियाँ घ
सिर से उतार उन्हें कोई देवता का अवतार मान प्रणाम करके च
जाती हैं। दोपहर को जब वे पेड़ के नीचे विद्यार्थियों के बीच बै
कर वेद, वेदान्त, और न्यायशास्त्र आदि की व्याख्या करते हैं त
स्कूल के लड़के अपना अपना पाठ छोड़ कर उनकी व्याख्या सुन
को आते हैं। साँझ को जब वे अपने पुराने टूटे घर पर महाभारत
रामायण, या पुराण के शिक्षाप्रद उपाख्यान कहते हैं तब गाँव के
वृद्धगण उस अमृतधारा का पान करके अपने जीवन को धन्य
मानते और अपने अन्तःकरण को पवित्र करते हैं।

आस पास के गाँव के लोग जब अवसर पाते थे तब उपाध्या
की अमृतकथा सुनने आते थे। हेमचन्द्र प्रायः नित्य ही सन्ध्य
समय धर्मपुर से उनके पास आते थे। शिवचन्द्र जब घर आये त
एक दिन साँझ को वे उनको भी सनातनपुर ले आये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उपाध्याय जी अपने घर के सामने एक बड़े विशाल वृक्ष के नीचे कम्बल बिछा कर बैठे हैं, उनके कई एक शिष्य और मित्रगण उनके पास बैठ कर शास्त्र की बात सुन रहे हैं। पहले उन्होंने उच्च-स्वर से दो एक वेदमन्त्र का गान किया। जो शिष्यगण गाना जानते थे, उन्होंने गाने में गुरु का साथ दिया। गाँव के घर घर में वह मधुर शब्द सुन पड़ा। माता की गोद में सोये हुए बालक भी उस सङ्गीत को सुन कर मुस्कुराने लगे।

इसके बाद वेदान्त की व्याख्या, वेदान्त के गम्भीर अर्थ की उन्होंने काशी में जिस तरह शिक्षा लाभ की थी, वेदान्त के उपास्य देव परब्रह्म का अचिन्त्य रूप और तत्त्व जैसे जाना था, उपनिषद के सारभूत उपाख्यानों का सरल अर्थ जो कुछ जैसे सीखा था, उसी तरह उसकी व्याख्या करने लगे। सत्य-काम उपाख्यान का अर्थ, नाचिकेतोपाख्यान का अर्थ, और मैत्रेयी उपाख्यान आदि अनेक शिक्षाप्रद उपाख्यानों का अर्थ कहते, श्रोताओं को समझाते बुझाते पहर रात बीत गई। श्रोतागण एकाग्रमन से उस अमृतकथा को सुनने लगे। उस अमृतमयी वाणी ने सबके हृदय को धर्मज्ञान और पवित्र भाव से आप्लावित कर दिया।

इसके अनन्तर सबों ने एक स्वर से वेद के उत्पादक ईश्वर और उपनिषद के प्रतिपाद्य परब्रह्म का स्तुतिवादन किया। स्तुतिवादन शेष होने पर सभा भङ्ग हुई। सब लोग परस्पर यथायोग्य अभि-वादन कर अपने अपने घर गये।

शिवचन्द्र बड़ी देर तक मौनभाव से बैठे रहे। सभास्थ सब लोगों के चले जाने पर उन्होंने रमानाथ उपाध्याय के पैरों पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मस्तक रख कर कहा—"गुरुदेव! आज आपके मुँह से जो शिक्ष की बात मैंने सुनी, वह पिता के मुँह से भी न सुनी, स्कूल में भ कभी न सुनी और न कभी कार्यक्षेत्र में ही ऐसी शिक्षा पाई। हमा देश में ऐसी विद्या, ऐसी उच्च शिक्षा का शास्त्र रहते भी हम सब विदेशियों से शास्त्रशिक्षा पाने के लिए लालायित रहते हैं! आप कुछ दिन स्थिर होकर यहाँ रहें, अपने सदुपदेश से लोगों को उत्साहित करें, कुरीति और अविद्यारूपी अन्धकार को दूर कर हमारे सच्चे सनातनधर्म्म को प्रकाशित करें। सनातन विद्या का प्रचार करें, सनातन नीतिशास्त्र की शिक्षा देकर सब को सुशिक्षित करें। आप हतोत्साह न हों। आपका यह उद्यम अवश्य सार्थक होगा। कुप्रथा से पीड़ित म्रियमाण जाति आपकी संजीवनी कथा से फिर लहलहा उठेगी।"

युवक का उत्साह देखकर उपाध्याय के नेत्र में जल भर आया। उन्होंने शिवचन्द्र का हाथ पकड़ कर कहा—"शिव, तुम मुझको नहीं जानते, मैं तुमको जानता हूँ। तुमने जो सब धर्म के कार्य किये हैं उन्हें जानता हूँ। तुम्हारे प्रशंसनीय उत्साह और उद्योग भी जानता हूँ। तुम्हारे सदृश उपकारी लोगों के रहते देश का सदा मङ्गल है।"

इसके बाद उपाध्याय हेम और शिव को अपने घर के भीतर ले गये।

योगमाया उपाध्यायजी के घर में चौका दे रही थी। बाहरी दो आदमियों को घर के भीतर आते देख योगमाया हट गई। उपाध्याय ने कहा—"देवी, हटने की कोई आवश्यकता नहीं,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हेम बाबू और शिवचन्द्र मेरे छोटे भाई के बराबर हैं। थोड़े दिन में तुम भी इन्हें भली भांति पहचानोगी। आज ये मेरे ही यहां कुछ भोजन करेंगे। तीन जगह आसन पानी रक्खो। योगमाया ने वैसा ही किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

शिवचन्द्र—"आज आपकी शास्त्र-व्याख्या सुन कर मेरे हृदय में नई आशा का संचार हुआ। यह नई शिक्षा कब इस देश में जारी होगी ?"

उपाध्याय—"शिवचन्द्र ! यह शिक्षा नई नहीं है। हमारे शास्त्र जितने दिनों के हैं, वेद जितने दिनों के हैं, यह शिक्षा भी उतने दिनों की है। इन दिनों साधारण मनुष्यों ने अज्ञानता के कारण इस पवित्र प्रथा को खो दिया है और भूल कर कुपथ का अवलम्बन किया है। यदि तुम कभी काशीपुरी में जाओगे तो देखोगे विश्वेश्वर के मन्दिर में अब भी पण्डितगण वेदपाठ करते हैं, जिसके श्रवण से पाप नाश होता है और धर्म होता है।"

शिव०—"मैं कभी काशी नहीं गया हूँ, किन्तु सुना है, वहाँ अब भी वेद-वेदाङ्ग की खूब चर्चा होती है। परन्तु शास्त्र का तत्त्व जानने वालों की संख्या कम है। हमारे देश में, आप ही कहिए, शास्त्र का मर्म जानने वाले कितने हैं ?"

उपाध्याय—"बहुत कम। इसी से हमारे प्राचीन आचार-विचार, धर्म, नीति आदि सभी ने विकृतरूप धारण किया है। तुम तो भिन्न भिन्न देश का इतिहास जानते हो, क्या तुम नहीं जानते कि जिस देश में अज्ञानी और मूर्खों की संख्या अधिक होती है उस देश का आचार बिगड़ जाता है ? ज्ञान का विकाश होने से फिर क्रमशः देशाचार का सुधार होता है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव०—"मैं यह जानता हूँ, संसार में इस तरह की घटना अनेक वार हुई है। किन्तु हमारे देश में क्या कुरीति का सुधार होगा ? हमारे देश में असली शास्त्र का प्रचार कौन करेगा ? जो लोग शास्त्र के ज्ञाता हैं, जो सर्वसाधारण को शास्त्र की शिक्षा दे सकते हैं, वे लोग स्वार्थपरता के कारण किसी को असली बात नहीं बताते। ऐसी अवस्था में हतभाग्य देश में शास्त्रज्ञान के प्रकाश का क्या उपाय है ?"

उपाध्याय—"जो शास्त्रज्ञ हैं वे स्वार्थी नहीं हैं, और न वे शास्त्र की बात किसी से छिपाते हैं। शास्त्रवेत्ता राजा राममोहनराय उपनिषदशास्त्र का अनुवाद करके भारतवासियों के हाथ में अर्पित कर चुके हैं। विद्याविशारद पण्डित ईश्वरचन्द्र समुद्रतुल्य शास्त्र का मथन करके समाज के पुनः-संस्कार से अपने पवित्र जीवन को बिता रहे हैं। सुना है, अब भी कलकत्ते में विद्वद्वर बङ्किमचन्द्र महाभारत की पुण्यकथा से स्वदेशवासियों को उदार शिक्षा दे रहे हैं। इन सबों का उपदेश, इनका कार्य, इनकी चेष्टा अवश्य फलवती होगी। किन्तु ऐसे असाधारण पण्डितों की बात छोड़ दो। समीचीन शास्त्र का प्रकाश करना प्रत्येक शिक्षित मनुष्य का कर्तव्य है, जिससे जितना हो सके उसे उतना ही करना योग्य है। तुम पूछते हो, शास्त्र का प्रकाश कौन करेगा ? तुम प्रकाश करोगे, हेम बाबू प्रकाश करेंगे, मैं प्रकाशित करूँगा। जो देशानुरागी है, देश के सच्चे भक्त हैं, उनसे जितना ही हो सकेगा प्रकाश करेंगे। इसी तरह धीरे धीरे सब देशों में शास्त्र का समीचीन प्रचार होगा, अज्ञानता दूर होगी, कुरीति और कुप्रथा उठ जायगी। उत्साही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

युवक ! तुम पूछते हो, यह कार्य किसके द्वारा सम्पादित होगा क्या युद्ध के समय सेनापति पूछता है कि कौन विजयलाभ करेगा भाई ! आगे बढ़ो, प्रतिज्ञा से विचलित न हो, अवश्य ही विजय लाभ करोगे। इस कार्य में राजा का मुख देखने की ज़रूरत नहीं राजपुरुषों का इसमें अधिकार नहीं, न वे इसमें कुछ हस्तक्षेप करन चाहते हैं। हिन्दुओं में सनातन-शास्त्र का प्रचार होना हिन्दुओं क ही कर्तव्य है।"

शिव०—"आपके मुँह में घी शक्कर पड़े। आपकी बात सफल हो। किन्तु इस युद्ध में आपकी तरह के मनुष्य योग देंगे ? दो एक शास्त्र के पारदर्शियों ने ब्राह्मण का यथार्थ गुण वर्णन किय है, शास्त्रीय शिक्षा का प्रचार किया है, हिन्दू-जाति के ऐक्य-साधन और उन्नति-साधन का विशेष यत्न किया है। किन्तु सहस्रों विद्वान स्वार्थसाधन के निमित्त शास्त्रज्ञान को संदूक़ में बन्द कर रक्खा है। वे अपनी प्रभुता को यथास्थित रखने के लिए हिन्दू जाति को अवनत, विभिन्न और दुर्बल रखने का प्रयास करते हैं।"

उपाध्याय—"शिव, तुम शिक्षित हो, इतिहास के ज्ञाता हो, क्या तुम नहीं जानते, कि स्वार्थी मनुष्यों का प्रयास उनके जीवन के साथ ही समाप्त हो जाता है, और जो लोग निस्वार्थ हैं उनकी चेष्टा फलवती होती है। स्वार्थरहित बुद्धदेव के उद्यम का फल आज तक इस संसार में देदीप्यमान है, जिन स्वार्थी लोगों ने उनके मत का निरोध किया था, वे कहाँ गये, क्या हुए, उनके कर्म का फल ही कहाँ है ? यूरोप के निःस्वार्थ लूथर की चेष्टा फलवती हुई है। जिन सहस्र सहस्र पादरी पुरोहितों ने उनका विरोध किया था, उन्हें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौन जानता है ? छोटे छोटे भुनगों के झुंड की तरह क्षुद्र स्वार्थी लोगों की चेष्टा कराल काल के विशाल हृदयरूपी दीपक-राशि में विलीन हो जायगी । राममोहन, ईश्वरचन्द्र और बङ्किमचन्द्र आदि निःस्वार्थ पुरुषों की चेटा फलप्रसविनी होगी, उनकी चेष्टा से अवनत हिन्दूजाति उन्नत होगी, हिन्दूशास्त्र की शिक्षा से ज्ञानलाभ करेगी ।"

शिवचन्द्र—"हिन्दू-जाति विशेष कर शास्त्र-शिक्षा से ज्ञान लाभ करें—यह आपका अभिप्राय है ? "

उपाध्याय—"हाँ, हिन्दू मात्र को शास्त्र-शिक्षा का अधिकार है, सभी हिन्दू इस महती शिक्षा का लाभ करें, जनसाधारण की शिक्षा के अतिरिक्त उन्नति का दूसरा कोई उपाय नहीं । पूर्व में क्षत्रिय वैश्य सभी को शास्त्रशिक्षा में समान अधिकार था, अब वही क्षत्रिय वैश्य हैं जो शास्त्रशिक्षा से वञ्चित होने के कारण अपने कर्तव्य को भूल गये हैं । उसी क्षत्रिय वैश्य जाति को तोड़ मरोड़ कर तुमने उसके सैकड़ों प्रभेद बना डाले ! तुम्हारे पैतृक अधिकार को किसने हड़प लिया ? प्राचीन शास्त्र के अनुसार शूद्र का अर्थ है अनार्य । यदि तुम अनार्य हो तो हम कैसे आर्य हुए ? और तुम यदि आर्य हो, यदि तुम द्विज के सन्तान हो तो आर्यशास्त्र स्वरूप पैतृक धन अर्थात् मौरूसी जायदाद तुम्हारे पास से कौन छीन सकता है ?"

शिव०—"तो इतने दिन से यह शास्त्रज्ञान केवल ब्राह्मणगणों ने अपने अधीन करके क्यों रक्खा ?"

उपाध्याय—"तुम लोग क्षत्रिय-वैश्य की सन्तान हो कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपनी मौरूसी जायदाद को भूले हुए थे, इसी कारण ब्राह्मण तुम्ह
उस संचित धन को इतने दिन से अपने हाथ में रक्खे हुए थे
जब तुम बेख़बर सोये थे तब ब्राह्मणों ने जगे रह कर उस शास्त्र
धन की रक्षा की। जब तुम वेदवेदाङ्ग को भूल गये, तब ब्राह्मण
ने सहस्र वर्ष के अनन्तर सहस्र वर्ष पर्यन्त वेदवेदान्त को कण्ठ
करके शास्त्र की रक्षा की। स्वाधीनता, पराधीनता, शोक, सन्ता
के समय भी ब्राह्मण उस धन की रक्षा करते रहे। भारतवर्ष
जब ज्ञान-दीपक बुझ गया था, अविद्या के घोर अन्धकार में सब
लोग मुँह की खा रहे थे, तब ब्राह्मणों के हृदय में वह दीप अक्षु
ण्णभाव से बल रहा था। आर्य देश में जब आर्यों की क्रिया और
उनकी रीति नीति लुप्त होने लगी, तब ब्राह्मण जाति में वह
पवित्र आचरण, वह रीति, वह क्रिया-कलाप जीवित था। अब
इतने दिनों पर तुम सब की आँखें खुली हैं, अपने पैतृक धन की
खोज की है तो ख़ुशी से अग्रसर होकर उस धन पर अधिकार
करो, और जिन अनार्य और इतर जातिसमूह ने हिन्दूधर्म और
सभ्यता का ग्रहण किया है, उन्हें भी इस शास्त्र-धन का कुछ अंश
देकर उन्नत करो।"

शिव०—"आपकी उदारताभरी बात सुन कर मेरा हृदय
आनन्द से परिपूर्ण हो गया। आपकी यह भारत-हितैषिणी वासना
पूरी हो। सब प्रदेश के सभी हिन्दू जब एकत्र हो कर एक ही
आचार्य पुरोहित की शिक्षा से एक ईश्वर की उपासना करेंगे तब
हम सब में एकता होगी, हमारा बल बढ़ेगा, साहस बढ़ेगा। भग
वन्! आपने यह अपूर्व मन्त्र कहाँ सीखा, किसने आपको सिख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाया। यह जानने की बड़ी इच्छा होती है। कई महीनों से आपका यश चारों ओर सुनाई देता था, किन्तु आज मैंने जो आपके पवित्र उद्देश का परिचय पाया, उससे मैं बड़े अचम्भे में पड़ गया हूँ। इस लिए मैं चाहता हूँ कि आपके महान् जीवन का कुछ वृत्तान्त सुनूँ।"

उपाध्याय—"मेरे जीवन का वृत्तान्त बहुत साधारण है, यदि तुम सुना चाहते हो, तो भोजन के उपरान्त सुन लेना।" योगमाया ने उन तीनों के भोजनार्थ आसन पानी रख दिया और सब सामान ठीक कर दिया। दयानाथ ने जो कुछ सामान्य भोजन बनाया था, वह लाकर उन सब के आगे परोस दिया, जब तीनों व्यक्ति भोजन कर चुके, तब बालक दयानाथ भी पिता के पत्ते पर जो कुछ झूँठा बच रहा था, खाकर पास वाली दूसरी कोठरी में पढ़ने को चला गया।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोलहवाँ परिच्छेद

मानाथ ने इस प्रकार अपना जीवन-वृत्तान्त कह
आरम्भ किया—

मैं एक धनाढ्य का बालक था, किन्तु अट्ठारह व
की उम्र में एक विषम संकट में पड़ कर मैं स
खोकर तीर्थ भ्रमण को चल दिया। अनेक तीर्थों का दर्शन कर
अन्त में काशी आया, और वेद-वेदान्त पढ़ने की इच्छा से वह
बहुत दिनों तक रह गया।

काशी में अनेक वेदविज्ञ पण्डित हैं, उनमें मेरे गुरु को स
कोई प्रधान करके मानते थे। वेद पढ़ना, और पढ़ाना यही उनके
मुख्य कर्म थे, इस कारण दूर दूर देश से अर्थात् द्राविड़, महाराष्ट्र
राजपूताना, और काश्मीर से शिष्यगण उनके पास वेद पढ़ने आते
थे। उन्होंने मुझे भी शिष्यभाव से ग्रहण किया। यह मेरे गुण से
नहीं, केवल उनके अनुग्रह से ही मुझे प्राप्त हुआ।

नौ वर्ष तक मैंने उनसे वेद पढ़ा। इतने दिनों में काशी के
अनेक धनाढ्य वणिक् महाजनों से मेरा परिचय हुआ। वे सब
मुझे दरिद्र, अनाथ विद्यार्थी समझ कर मुझ पर दया करते थे।
मैं कितनों ही के घर जाने आने लगा, कितने ही लोगों का कृपा
भाजन बना, कितने ही लोग मुझे आत्मीय की तरह स्नेह भी
दिखलाने लगे।

पञ्जाब देश का कृपालसिंह नामक एक क्षत्रिय अपने कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्त्रियों के सहित काशी-सेवन कर रहे थे, और मुझे अपनी सन्तान की भाँति चाहते थे। विद्यार्थी का प्रयोजन ही कितना? बहुत थोड़ा! परन्तु वह मेरा प्रयोजन जान कर नहीं, केवल अपने उदार भाव से मुझ पर दया करते थे, और जिस वस्तु की मुझे आवश्यकता देखते थे, देते थे। ब्रह्मचारी के भेस में जब मैं उनके घर जाता था, उनकी गृहिणी मुझे पुत्रवत् जान कर मेरी ख़ातिर करती थी। मैं भी उसे माँ कह कर पुकारता था। उनकी छोटी लड़की भी मुझे बहुत चाहती थी।

कालक्रम से कृपालसिंह अपनी एकमात्र लड़की को छोड़ इस असार संसार से चल बसे। तब मेरा पढ़ना समाप्त हुआ था। मैंने एक स्वतन्त्र पाठशाला खोल कर कई एक विद्यार्थी इकट्ठे किये। काशी में कृपालसिंह का कोई आत्मीय न था, उनकी विधवा पत्नी मेरे ही मठ में आकर रहने लगी। उसके पास जो कुछ थोड़ा धन था वह उसने मेरे हवाले कर दिया। इसी तरह एक वर्ष बीत गया।

कृपालसिंह की वह एकमात्र लड़की मुझे हृदय से चाहने लगी। मुझ पर उसका स्नेह दिन दिन बढ़ने लगा। उसकी निराश्रय अवस्था, शान्त मूर्त्ति और निश्छल स्नेह देख कर मेरा भी उस पर अनुराग उत्पन्न हुआ। क्रमशः बालिका के अङ्ग में यौवन के चिह्न दिखलाई देने लगे। मैं अब अपने मन का भाव छिपा न रख सका। उस लावण्यमयी सुलक्षणा बालिका के साथ विवाह करने का प्रस्ताव किया। उस समय मेरी अवस्था अट्ठाइस वर्ष की और बालिका की उम्र तेरह वर्ष की थी।

उपाध्यायजी कुछ देर तक चुप रहे। शिवचन्द्र ने पूछा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"आपने ब्राह्मण होकर क्षत्रिय-बालिका के साथ व्याह करने क
प्रस्ताव कैसे किया ?"

उपाध्याय—"यह रीति हमारे प्राचीन शास्त्र के विरुद्ध नहीं
है। क्या यह तुमने नीति-विरुद्ध कार्य समझा ?"

शिव०—"नहीं महाराज ! मैं ऐसा नहीं समझता। मैंने स्वयं
विधवा के साथ व्याह किया है। शायद यह आप को मालूम
नहीं है।"

उपाध्याय—"यह बात मुझे मालूम है। तुम अपनी माता से
पूछना। रमानाथ उपाध्याय ही ने उस विवाह की व्यवस्था दी
थी। मैं काशी से कभी कभी बङ्गदेश में आता था। तुम लोगों का
वृत्तान्त मैं कुछ कुछ जानता हूँ।"

शिवचन्द्र विस्मित हो रहे—"ये रमानाथ उपाध्याय कौन
हैं !" उपाध्याय फिर अपना वृत्तान्त कहने लगे।

"कृपालसिंह की विधवा मुझे धर्म्मपरायण और विद्वान् समझती थी। मैंने जब इस विवाह को धर्मसंगत कह कर बार बार उससे अनुरोध किया तब वह मेरे प्रस्ताव पर सम्मत हुई। उसके ज्ञाति-कुटुम्ब का काशी में ऐसा कोई न था जो इस कार्य में बाधा डालता। मेरे बन्धु-बान्धवों ने मुझे बहुत धिक्कारा। मेरी पाठशाला उखड़ गई। आख़िर मैं नववधू और उसकी माता को लेकर काशी से भागने को बाध्य हुआ। किन्तु यह कार्य अनुचित वा शास्त्र विरुद्ध हुआ, ऐसा तो नहीं जान पड़ता। हेम बाबू का मत इस विषय में क्या है—यह मैं जानना चाहता हूँ।"

हेमचन्द्र—"आपने निराश्रय क्षत्रिय-बालिका के साथ विवाह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करके अपनी दया, अपना पुरुषार्थ और अपनी धर्मप्रियता दिखलाई है ।"

उपाध्याय—"तुम्हारे सदृश सच्चरित आदर्श पुरुष का ऐसा विचार होना ही सम्भव है । बहन सुमित्रा जब अनाथा थी, दरिद्रावस्था में थी तब तुमने उसके साथ व्याह करके अपनी उदारता दिखाई थी । बहन सुमित्रा से पूछना—बाल्यावस्था में रमानाथ उपाध्याय ने उसका हाथ देख कर भविष्य-फल कहा था ।"

हेमचन्द्र विस्मित हो मन ही मन सोचने लगे, "रमानाथ उपाध्याय कौन हैं ?"

कुछ देर के बाद उपाध्याय फिर बोले—"हेमचन्द्र ! तुमने अनाथा बालिका के साथ व्याह किया था, किन्तु वह तुम्हारी स्वजातीया थी । मेरी भाँति दूसरी जाति की लड़की के साथ व्याह करने से क्या तुम्हारे मन में कुछ ग्लानि न होती ?

हेम०—"कुछ भी नहीं ।"

उपाध्याय—"तुम्हारे परिवार में यदि कोई भिन्न जाति के साथ विवाह-सम्बन्ध करे तो क्या तुम उसकी कुछ निन्दा न करोगे ?"

हेम०—"नहीं ।"

उपाध्याय—"अगर स्वयं तुम्हारी इस तरह की अवस्था हो तो क्या ऐसा काम करने को राज़ी होगे ? तुम्हारी शान्तहृदया, सुलक्षणा, सुशीला नाम की जो बारह वर्ष की लड़की है, उसका अन्यजातीय सत्पात्र वर के साथ विवाह करने में क्या तुमको किसी तरह का उज्र न होगा ?"

हेमचन्द्र इस प्रश्न से विस्मित हुए । पीछे उन्होंने कहा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"गुरुदेव ! यदि वर योग्य हो तो इस कार्य में मैं कुछ आपत्ति न करूँगा ।"

उपाध्याय ने हँस कर कहा—"तुम चिन्तित न हो ! मैं अभी तुम्हारी बेटी सुशीला के साथ अपने पुत्र के व्याह का प्रस्ताव नहीं करता । केवल तुम्हारा मन जानने के लिए मैंने यह प्रश्न तुम से किया था ।"

कुछ देर तक सभी चुप रहे । पीछे हेमचन्द्र ने कहा—"आप के जीवन-वृत्तान्त का शेषांश सुनने की बड़ी उत्कण्ठा हो रही है। आपकी गृहिणी और सास इस समय कहाँ हैं ?"

उपाध्याय ने एक लम्बी साँस लेकर कहा—"मेरा वृत्तान्त तो अब प्रायः समाप्त हुआ । मेरे जीवन का अब कोई विशेष अवलम्ब न रहा । मेरे व्याह के दो वर्ष बाद पौत्र का मुख देख कर मेरी सास सुरलोक को गईं । इसके बाद मैंने बेटे और सहधर्म्मिणी को लेकर पन्द्रह वर्ष तक मथुरावास किया । वहाँ बड़े सुख से मेरा समय व्यतीत होता था । प्रति दिन प्रातःकाल यमुना की पवित्र धारा में स्नान करके अनन्त महिमापूर्ण गायत्री मन्त्र का जप करके सूर्यदेव की आराधना करता था और सायंकाल यमुना के घाट पर बैठकर शिष्यों को उपनिषद् का अर्थ सिखाता था । मैं अपने प्रिय पुत्र को घर पर संस्कृत भाषा पढ़ाता था और वहाँ के स्कूल में अँगरेज़ी पढ़ने को भेजता था । स्नेहमयी भार्या के यत्न से मैं अपने उस छोटी सी पर्णकुटी में स्वर्गीय सुख का अनुभव करता था । वह जब से इस संसार से विदा हो गई तब से मेरा मन विरक्त हो गया । मैं पुत्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को साथ लेकर देश देश घूमता हूँ। कहीं मेरे चित्त को विश्राम नहीं मिलता।

उपाध्याय की आंखों से दो बूँद आंसू टपक पड़े। हेमचन्द्र और शिवचन्द्र शीघ्र ही उनसे आज्ञा लेकर धर्मपुर को लौट आये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सत्रहवाँ परिच्छेद

रमानाथ उपाध्याय की नई प्रथा के अनुसार शास्त्रप्रचा की बात लेकर गाँव में अनेक प्रकार के आन्दोलन होने लगे। जितने मुँह उतनी बातें होने लगीं। जिसकी जैसी समझ थी वह उपाध्याय के मत पर वैसी भली बुरी सम्मति प्रकट करने लगा। जो तत्त्वदर्शी विद्वान् थे वे रमानाथ के पाण्डि की प्रशंसा करने लगे। जो मोटे ख़याल के आदमी थे, जो केवल नाम मात्र के पण्डित थे, वे रमानाथ को विच्छिन्न कहकर गाली देने लगे। दूसरों का कुछ उपकार करके जिनके हृदय में आनन्द होता है, उन्होंने रमानाथ की सहायता की। जिनकी वृत्ति केवल दूसरों की निन्दा करके दो पैसा कमाने की थी, जो दुष्ट लोगों के मन को बहलाने के लिए पराई निन्दा करते फिरते थे, उनकी जीविका जगी। वे अभागे जहाँ तहाँ रमानाथ की निन्दा करके चार पैसे कमाने लगे। शास्त्र-शिक्षा के द्वारा देशीय लोगों का हृदय उन्नत करना, चरित्र का सुधार और कुरीति का निवारण करना जिनका उद्देश्य था, वे रमानाथ के साथ सहानुभूति करने लगे। जो लोग गाँव की तथा देश की उन्नति चाहते थे वे रमानाथ की उच्च शिक्षा से प्रसन्न हुए। जिन्हें देश की वा समाज की धर्म-विषयक उन्नति होने से एकाधिपत्य उठ जाने की आशङ्का थी, वे रमानाथ की धर्मसम्बन्धी उन्नति देख कर बेहद गाली देने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस प्रकार महल्ले महल्ले में उपाध्यायजी के विषय में आन्दोलन होने लगा। इसके साथ साथ अभद्र लोग उनकी निन्दा भी करने लगे। जिससे उनपर लोगों की अश्रद्धा उत्पन्न हो, इस तरह की बातें अपने मन से गढ़ कर निन्दकगण उपाध्याय के विरुद्ध उनके शास्त्रप्रचार में बाधा डालने लगे। हेमचन्द्र और शिवचन्द्र के साथ उपाध्यायजी की जो कथा-वार्ता हुई थी वह तिवारीजी के घर के किसी किसी ने परदे की ओट में रह कर सुनी थी। उन्होंने उपाध्यायजी के ऊपर अनुग्रह करके इस बात को सर्वसाधारण में ज़ाहिर कर दिया कि उपाध्यायजी अन्यजातीया के साथ व्याह करके अपनी जाति खो चुके हैं। ये जातिभ्रष्ट होकर यहाँ के निवासियों का सर्वनाश करने आये हैं; धर्मपुर के हेसबाबू की लड़की के साथ अपने पुत्र का व्याह करना चाहते हैं। एकाएक रात में जैसे किसी गाँव में आग लगने से आकाशमण्डल रक्तच्छटा से दीप्त हो उठता है वैसे ही धर्मपुर और सनातनपुर उपाध्याय की निन्दा से प्रज्वलित हो उठा। घर घर उनके लोकविरुद्ध व्यवहार की चर्चा होने लगी।

सनातनपुर के साधारण ब्राह्मण और पण्डितों ने इन्हें कपटाचारी और अधार्म्मिक कहकर यथेष्ट निन्दा की। प्राचीन सम्प्रदाय के लोग यह कहकर कि प्राचीन हिन्दूधर्म का नाश हो रहा है, आक्षेप करने लगे। नवीन सम्प्रदाय ने आर्यधर्म्म के विरुद्ध आचार पर अँगरेज़ी भाषा में अनेक तर्क-वितर्क किया। तिवारीजी के घर की स्त्रियाँ क्षत्रिय-बालिका के प्रणय-लोलुप उपाध्यायजी की हँसी उड़ाने लगीं। धर्मपुर के रामप्रसाद ठाकुर ने हुक्का पीते पीते कहा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"यह और कुछ नहीं है, स्त्रियाँ दिन पर दिन बड़ी स्वतन्त्र हो रह हैं। उसी का यह फल है!"

अभिमानिनी सुभद्रा वेणी बाँधती बाँधती बोली—"सुनत हूँ, सुशीला की माँ पछाँही बाभन के लड़के के साथ अपनी इक लौती बेटी सुशीला को व्याहेगी? अरे! वह तो बाभन नहीं चण्डाल है। वह ऐसा काम न करेगा तो कौन करेगा? उन स को धर्म अधर्म का ज्ञान ही क्या है? अगर सुमित्रा हिन्दूधर्म जानती होती तो क्या अपनी विधवा बहन का व्याह करती?"

चौधरीजी का बुद्धिमान् बेटा मोहनलाल व्याह की बातचीत करने वाली एक स्त्री के साथ कुछ गप्प कर रहा था और नई बहू को घर लाने की बात सोच कर मनही मन उमंग रहा था। इसी समय पण्डित रमानाथ की बात सुन कर वह एकाएक देश का हित साधन करने को विवश हुआ और उसी घड़ी हुक्का हाथ में लिये समाज के रक्षार्थ दलबल जुटाने को बाहर निकला।

इधर एक अर्धवयस्का, रूखे केशवाली, सूखे हृदय की पंडाइन छत के ऊपर बैठ कर नाइन से पैरों में महावर लगवा रही थी! वह नाइन के मुँह से रमानाथ के भंडपन की बात सुन कर क्रोध से सापिन की तरह फों फों करने लगी। वह होठों को कंपाती हुई बोली—"अब जाति-धर्म सब गया! अब के पुरुषों को न मालूम क्या सूझा है! आज आवे तो एक बार घर, मैं उसे बिना शिक्षा दिये न रहूँगा।" उस दिन उसके पति पण्डाजी जब रमानाथ उपाध्याय के यहाँ से घर आये तब पण्डाजी ने पण्डाइन के मुँह से जो अमृतवाणी सुनी उसके वर्णन में हम अक्षम हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्रमशः यह बात ज़मींदार कामिनीकान्त बाबू के कान तक पहुँची। हिन्दूधर्म की रक्षा के लिए वे ज्यादा सिरखपी नहीं करते थे, किन्तु वे उस गाँव के प्रसिद्ध ज़मींदार थे। यदि वे हिन्दू आचार का पक्ष न लेते तो कौन लेता? इसलिए उन्होंने अपने अधीन कर्मचारी को आज्ञा दी, "उपाध्यायजी से जाकर कहो, उनके रहने से हमारे घर की चारों ओर शिकायत हो रही है और हमारे धर्मपरायण देशाचारप्रचारक पवित्र वंश में भी कलङ्क लग रहा है। इसलिए वे यहाँ से चले जायँ।"

तेजःपूर्ण रमानाथ से यह बात किसी को कहने का साहस न हुआ। तिवारीजी के घर के लोग जहाँ तहाँ कहते थे, कानाफूसी करते थे, किन्तु उपाध्याय के मुँह पर कोई कुछ न बोलता था। आख़िर उस घर के एक पुराने नौकर ने एक दिन उपाध्यायजी के पास जा, अनेक वार्तालाप के अनन्तर किसी तरह दाँत से जीभ को दबा कर अपने स्वामी की आज्ञा सूचित की। रमानाथ सुनकर हँसे। उन्होंने घर न छोड़ा।

ज़मींदार कामिनी बाबू अपनी आज्ञा को व्यर्थ होते देख अत्यन्त क्रुद्ध होकर पागल की तरह अंटसंट बकने लगे। उनकी कठोर आज्ञा पाकर दुर्जयसिंह, रुद्रसिंह, अर्जुन दुबे, और बलदेव चौबे आदि मुशटंड सिपाही हाथ में लाठी ले रमानाथ के घर के सामने जाकर शोर गुल मचाने लगे। किसी ने उनके घर से कम्बल खींच कर फेंक दिया, किसी ने मिट्टी का घड़ा तोड़ फोड़ दिया। बाबू साहब के नौकर इस प्रकार वीरता दिखा कर चले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गये । रमानाथ फिर कम्बल बिछा कर पोथी पढ़ने बैठे । दयाना नया बर्तन ख़रीद लाया ।

योगमाया सन्ध्या समय आसन पानी देते समय रोने लगी इस दुःख-घटना-पूर्ण जीवन में उसने इस महात्मा के सिव और किसी के मुँह से प्रायः मीठी बात न सुनी थी । उपाध्या के बालक के भिन्न और किसी को वह पुत्रवत् समझ कर प्यार न करती थी । अब ये शीघ्र यहाँ से चले जायँगे, सुन कर योगमाय चुपचाप आँसू बरसाने लगी ।

रमानाथ उसके मन का भाव समझ गये । उन्होंने कहा— "योगमाया ! तुम बड़ी दुखिया हो, तुम्हें इस दुःख में छोड़ कर मैं न जाऊँगा, तुम निश्चिन्त रहो ।"

योगमाया—"इस घर की मालकिन स्त्री ने हुक्म दिया है । कल उनके नौकर आपको घर से बलपूर्वक बाहर कर देंगे ।"

रमानाथ—"मैं तो तुम्हीं को इस घर की स्वामिनी जानता हूँ ।"

योगमाया—"महाराज ! मैं किसी समय इस घर की मालकिन थी, अब तो अनाथिनी, असहाया हो कर समय बिता रही हूँ । अब मुझमें वह योग्यता कहाँ ? अब मेरी वह सम्पत्ति कहाँ ?"

रमानाथ—"यह घर तुम्हारे ससुर का है, तुम्हारे पति का है, तुम्हीं इस घर की स्वामिनी हो ।"

योगमाया कुछ न बोली । वलयशून्य दोनों कृश हाथों से मुँह ढँक कर वह बड़ी देर तक चुपचाप रोई । उसका शरीर कांप रहा था । उसके मन में न मालूम किस एक अपूर्व भाव का उदय हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहा था। वह कुछ बोलना चाहती थी, परन्तु उसके मुँह से एक भी शब्द न निकला। कुछ देर के बाद साहस करके बोली—"मैं अबला स्त्री, सम्पत्ति की बात क्या जानूँ।"

रमानाथ—"मैं तुम्हारी सम्पत्ति की बात जानता हूँ। मैं तुम्हारी उस सम्पत्ति की रक्षा करूँगा।"

योगमाया—"कामिनीकान्त बाबू का प्रभुत्व और प्रताप बहुत चढ़ा बढ़ा है। आप उनके विरुद्ध मेरी सम्पत्ति की रक्षा कैसे कर सकेंगे? किंवा मेरी ही रक्षा कैसे करेंगे?"

रमानाथ—"दुर्बलों की रक्षा करना हमारा धर्म है। धर्म के अनुष्ठान में ईश्वर सहायक होते हैं। वे अवश्य हमारी सहायता करेंगे।"

योगमाया—"तो आप जो उचित समझें करें। मैं। मैं अबला हूँ, आपकी आश्रिता हूँ। आप मेरे देवता हैं।"

रमानाथ—"कुछ चिन्ता नहीं। तुम एक बार कामिनीकान्त की गृहिणी से जा कर कहो—उपाध्याय उससे एक बात कहना चाहते हैं, जिस पर उसके पति का मङ्गल, अमङ्गल दोनों निर्भर हैं!"

योगमाया ने यह संवाद कामिनी बाबू की गृहिणी को सुनाया। सुन कर उसके मन में कुछ भय हुआ। उसने उपाध्याय को बुला भेजा।

रमानाथ ने कामिनी बाबू की स्त्री सुलोचना से कहा—"एक दरिद्र पण्डित ने आपके इस विशाल भवन में आश्रय लिया है, उसको भगा देना क्या आपको उचित है?"

सुलोचना—"बाबू ने ऐसा ही करना उचित समझा है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रमानाथ—"क्या इस इतने बड़े राजभवन में इस दीन अ के रहने को एक घर नहीं ?"

सुलोचना—"घर की कमी नहीं है।"

रमानाथ—"क्या इस अभ्यागत को दोनों समय भोजन दे भारी जान पड़ता है ?"

सुलोचना—"भोजन देना क्यों भारी जान पड़ेगा ? अन्न भण्डार भरा है।"

रमानाथ—"तो यह ग़रीब क्यों भगाया जा रहा है ?"

सुलो०—"उसका कुछ और ही कारण है। आपके रहने गांव में बड़ा आन्दोलन हो रहा है। हम सब की बड़ी नि हो रही है। हम सब देशाचार कुल-व्यवहार के अनुसार चल हैं। आप इस धर्म के विरोधी हैं इसी से मालूम होता है गृ पति ने ऐसा हुक्म दिया है।"

रमानाथ—"देशाचार को मैंने बिगाड़ा है या मुन्ना बीबी ने ?

सुलोचना चुप हो रही। वह मुन्नाजान नाम की एक मुस मानिन वेश्या की बात जानती थी। उसने चुपके से आंखों आँसू पोंछ डाले।"

रमानाथ—"तो यह उपद्रव क्यों ?"

सुलोचना—"बाबू की ऐसी ही आज्ञा है।"

रमानाथ—"दरिद्र के सताने से क्या बाबू का मङ्गल होगा ?

सुलोचना संकुचित हो कर बोली—"मैंने भी बाबू से यह कहा था, परन्तु उन्होंने मेरी बात न सुनी।"

रमानाथ—"आप उनसे एक बार और समझा कर कहें कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग़रीब पर अत्याचार करने से मनुष्य का बड़ा ही अमङ्गल होता है।"

सुलो०—"मैंने कहा था, उन्होंने उस पर ध्यान न दिया।"

रमानाथ—"तो आप उनसे एक बात पूछिएगा, कमलाकान्त नाम का एक हिस्सेदार ज़मींदार इस घर में रहता था, क्या बाबू साहब उसको नहीं जानते?"

सुलोचना काँप उठी। इस प्रश्न का कुछ उत्तर न दे सकी।

रमानाथ—"आपने उसको देखा था?"

सुलोचना—"हाँ, देखा था, तब मैं विवाहिता होकर नई ही यहाँ आई थी।"

रमानाथ—"वे कहाँ गये? आपको मालूम है?"

सुलोचना—"बहुत दिन हुए, उनका परलोक हो गया।"

रमानाथ—"आप जानती हैं, किस तरह उनकी मृत्यु हुई?"

सुलोचना फिर काँप उठी।

रमानाथ—"किस तरह उनकी मृत्यु हुई, यह तो आपने सुना होगा?"

सुलोचना—"मरे मनुष्य की चर्चा से क्या फल?"

रमानाथ—"तो बाबू से कहिएगा, दरिद्र को दुःख देने से क्या फल? पाप का परिमाण अधिक होने ही से प्रायश्चित्त आरम्भ होता है।"

सुलोचना के साथ रमानाथ की जो जो बातें हुई थीं, योगमाया ने एक ओर खड़ी होकर सब सुनीं। उस दिन साँझ को योगमाया रमानाथ के भोजन के समय न आई। आधीरात को यदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रमानाथ उठ कर देखते तो देख पाते कि वह हतभागिनी योगमा
उनके सिरहाने बैठ कर आँसू बहा रही है।

प्रातःकाल जब योगमाया पानी ले कर आई तब उपाध्याय
मुस्कुरा कर कहा—"ज़मींदार बाबू के घर के लोग सब तो
सज्जन हैं। न मालूम रात में किसने आकर इस ग़रीब ब्राह्मण
झोली और बक्स को खोल कर उलट पलट दिया है?"

योगमाया सिर नीचा करके चुप हो रही। कुछ देर के
बोली—"इस घर के लोगों की तो कभी बदनामी नहीं सुनी
आपकी किसी दासी ने आपकी चीज़ों को उलट पलट कर
होगा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अट्ठारहवाँ परिच्छेद

मिनीकान्त बाबू की नाराज़गी से सब को विश्वास हो गया कि उपाध्यायजी कल सवेरे यहाँ से ज़रूर चले जायँगे। किन्तु कल होने पर इसका फल उलटा ही देखा। उपाध्यायजी की सेवा के लिए कामिनी बाबू का ख़ास नौकर सवेरे ही से दौड़ धूप कर रहा है। उपाध्यायजी के खाने के लिए दूध, मक्खन, मिसरी और मेवे मौजूद हैं। उनकी आज्ञा के पालन के लिए एक दरवान उनके द्वार पर खड़ा है। सुलोचना की ख़ास दासी उपाध्यायजी के घर को झाड़ बुहार रही है, और उसकी ख़ास रसोई बनाने वाली रसोई पानी का प्रबन्ध कर रही है।

तिवारीजी के हाते के भीतर वाले पोखर के घाट पर आज बड़ी जमघट लगी है। स्त्रियाँ आपस में तरह तरह की गप्पें उड़ा रही हैं। आज उनके आलाप का अन्त नहीं है। खेद का विषय है कि किसी समाचार-पत्र का कोई संवाददाता उस घाट पर मौजूद न था और न कोई नया लेखक उस घाट की कथा-वार्ता का "शौर्ट हैन्ड रिपोर्ट" लिखने को तैयार था। यदि तैयार रहता तो 'ललनागण-चरित्र-समालोचना' नामक अपूर्व उपन्यास लिख कर भारतीय पाठक-वृन्द को तृप्त कर सकता।

सब के पहले उस घाट पर एक झुंड नवीन स्त्रियों का आया। वे सब की सब पायज़ेब झमकाती गहनों के बोझ से लदी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अठखेलियां खेलती, हँसती, झमाझम करती हुई घाट पर इकट्ठी हुईं। उन सबों में कुसुमकुमारी बड़ी रसिका और प्र थी। उसने कलसी को नीचे रख कर अभिनय की प्रथम प्रस्ता की:—

सुनो सखी इतने दिन बाद, पण्डितजी का मिटा विषाद
इस से बढ़ क्या होगा भाग, रानी का उन पर अनुराग।
जो पहले सुनते थे गाली, थे, कर देने को घर ख़ाली
बड़ी बहू क्या विचारती हैं, स्वामीजी कह पुकारती हैं।

वसन्तकुमारी—"चुप रहो सखी फिर ऐसी बात न बोलो बड़ी बहू के साथ ठट्ठा करती हो! सुनेगी तो सिर मुड़ा कर से बाहर कर देगी।"

कुसुम०—"इसमें ठट्ठे की कौन बात है? बड़ी बहू की दा उनके घर का काम कर रही है। रसोइया, रसोई बनाने की फ़िक्र लगा है। बड़ी बहू उपाध्याय के ऊपर ढुल न पड़ी है तो क्या

राजकुमारी—"नहीं री नहीं, यह बात नहीं है। बड़ी बहू ऊपर एक बड़ा भारी संकट आने को था, वह उपाध्यायजी पूजापाठ से कट गया, इसी से उनका इतना आदर हो रहा है।"

हेमकुमारी—"नहीं, यह बात नहीं है। तुम न कुछ जानती न कुछ सुनतीं। जो तुम्हारे जी में आता है बोल देती हो। ज़मी दार बाबू का कोई ग्रह बिगड़ा था, इसी से उनकी घरवाली ने क संध्या समय उपाध्यायजी को बुला भेजा था।

स्वर्णकुमारी—"सुनो, सुनो, मैं कहती हूँ, उपाध्याय औषध करने को बुलाया था।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुसुमकुमारी—"कैसी औषध ? क्या बड़ी बहू को इस उम्र में फिर लड़का पैदा करने की इच्छा तो नहीं हुई है ?"

स्वर्णकुमारी—"तू बड़ी बोलने वाली है, चुप न रहेगी। वह और ही तरह की दवा चाहती है।"

सभी ने कुतूहलवश पूछा—"कहो, कहो, कैसी दवा ?

स्वर्णकुमारी—"बड़ी बहू के एक शत्रु है। उसका विध्वंस करने की औषधी ! अब सुना ?"

सभी ने पूछा—"कौन ? कौन उसका शत्रु है ?"

स्वर्णकुमारी—"अच्छा, कहती हूँ सुनो। कलकत्ते में एक मुसलमानिन है, उसका नाम है मुन्नाजान। उसी को मारने का उपाय ! मेरे लड़के की धाय छिप कर सब बातें सुन आई है। उपाध्याय ने कहा है, वे उस मुसलमानिन के उच्चाटन का शीघ्र ही कोई मन्त्र-प्रयोग करेंगे।"

नवयुवतियों के जाते न जाते अधेड़ स्त्रियों के एक झुंड ने आकर उस घाट पर घड़े रक्खे।

मातङ्गिनी—"आज का रंग कुछ और ही देखने में आता है। क्या हुआ है ? कुछ जान नहीं पड़ता !"

तरङ्गिणी—"हुआ है क्या ! हमारी योगमाया का भाग्योदय हुआ है।"

मातङ्गिनी—"सो क्या ? क्या हुआ है बहन ? सो खुलासा कहो।"

तरङ्गिणी—"होगा क्या ! कल योगमाया उपाध्याय को बड़ी बहू के पास ले जाकर बहुत रोई कलपी है। उसने हाथ जोड़ कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा है कि उपाध्याय को घर से बाहर कर देने पर वह उ
झोली कम्बल लेकर वैष्णवी बन उनके साथ साथ घूमेगी।"

मातङ्गिनी—"बहन, तुमने तो ऐसी बात सुनाई जो सुन
कलेजा काँप उठा। बड़े अनर्थ की बात है। चालीस वर्ष
बूढ़ी वैष्णवी होकर गाँव गाँव में घूमेगी। कलियुग में जो न
सो आश्चर्य!"

सुभाषिणी—"मेरी बात भी सुनो। ये जो धर्मपुर के दोनों
आते हैं—हेम बाबू और शिवचन्द्र बाबू—सुनती हूँ, शिव बाबू
विधवा विवाह किया है, वह विधवा हेम बाबू की साली
उन्होंने उपाध्यायजी से कहा है, "विधवा-विवाह शास्त्र-सम्म
है।" यह सुन कर हमारी योगमाया मारे खुशी के नाच उठी
इसी से वह स्वामीजी की इतनी सेवा-शुश्रूषा करती है। उन
चौका-बर्तन करती है, पानी ला देती है, और भी कितना क
काम कर देती है।"

विलासिनी—"नहीं री नहीं, तुमने असल बात नहीं सु
है। सभी एक स्वर से बोल उठीं—"अच्छा, तुम्हीं कहो, क्
हुआ है?"

विलासिनी—"होगा क्या! इस महात्मा के लड़के के स
हेम बाबू के लड़की के ब्याह की सब बात ठीक हो गई है।"

सुन कर सब आश्चर्य करने लगीं, बोलीं "यह बात सच
नहीं मालूम होती! हो भी तो क्या आश्चर्य है।"

रामेश्वरी—"भला यह कैसे हो सकता है? उपाध्यायजी
बाभन, हेम बाबू हैं कायथ, इन दोनों में ब्याह शादी कैसे होगी!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुभाषिणी—"बाभन कौन है? उसने तो अपना जातिधर्म सब गवाँ दिया। ऐसे बाभन का मुँह फूँक दे!"

सब कहने लगीं—"अरे दादा! हम सब तो यह न जानती थीं। सुनती थीं, पण्डित, पण्डित, पण्डित का कर्म ऐसा!"

इस प्रकार अधेड़ स्त्रियाँ आपस में गप्पें लड़ा पानी भर कर अपने अपने घर गईं।

इसके बाद बूढ़ी स्त्रियों का एक दल उस घाट पर आ पहुँचा। वे सब भी कलसी रख उन्हीं बातों की आलोचना करने लगीं।

श्यामसुन्दरी—"देखती हूँ, आज उपाध्यायजी की बड़ी ख़ातिर हो रही है।"

रामसुन्दरी—"अभी क्या हुई है? दिन दिन और ख़ातिर होगी।"

श्यामसुन्दरी—"यह क्यों? कुछ कहो तो मैं भी सुनूँ।"

रामसुन्दरी—"तुम कुछ नहीं जानतीं तो सुनो, चुपके चुपके सुन लो। बड़ी बहू जानेगी तो हम सब को झाड़ू मार कर घर से बाहर कर देगी।"

श्यामसुन्दरी—"हाँ, बहन, चुपके से कहो, क्या हुआ है?"

रामसुन्दरी—"अच्छा, कहती हूँ, इस ज़मींदार बाबू के मकान में जो एक लड़का ख़ून हो गया था, सो क्या तुम नहीं जानतीं? यह बात क्या तुमने कभी नहीं सुनी?"

देवसुन्दरी—"हाँ, हाँ, यह बात क्या आज कल की है? इसको बीते आज तीस वर्ष हुए। मेरी बेटी विलासिनी का उसी साल व्याह हुआ था। यह बात कैसे भूल सकती है? उस दिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की बात याद आने से अब भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मुझे इसका पूरा भय था कि अब मेरी लड़की का व्याह न होगा। व्या की बात भी न उठेगी। सब काम बन्द हो गया। बाजा रोक दि गया। किसी को नेवता तक न दिया गया। चुपचाप लड़की शादी हुई। शादी में कुछ भी रौनक़ न होने पाई। मुझ हतभागि के मन की सब आशा मन ही मन में रह गई। बहन, यह मे फूटे कपाल का दोष था!"

शिवसुन्दरी—"अरे बाबू! वही बात याद न रहेगी? वैशा महीने में वह दुर्घटना हुई थी। मेरे गोपाल का उसी महीने अन्नप्राशन था। यह बात क्या मैं कभी भूल सकती हूँ? मेरे नन्हे गोपाल के अन्नप्राशन का सब उत्सव बन्द हो गया। मैं किसी को भली भाँति भोजन न करा सकी।"

भुवनसुन्दरी—"हाँ बहन, यह बात कुछ कुछ मुझे भी याद है। उसी महीने में मेरी बड़ी बहू का प्रथम सीमन्त कर्म था। उसमें हमने सभी कुटुम्बियों के घर की स्त्रियों को नेवता देक बुलाया था। बड़े उत्साह से सब मेरे घर आई थीं। जिस दिन उत्सव था, उस दिन ख़बर आई कि बड़ा अनर्थ हो गया है। कमला बाबू का ख़ून हो गया है। सुन कर सब के होश उड़ गये। सर्वत्र शोक की घटा छा गई। मेरी बड़ी बहू को तो बार बार मूर्छा आने लगी। मेरा सब मनोरथ मिट्टी में मिल गया। हाय! उस दिन जो मुझे विषाद हुआ था सो अब तक नहीं भूलता। किसने खाया, कौन भूखा रहा, इसकी भी सुध मुझे न रही। भगवान् किसी को ऐसा दुख न दे।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रामसुन्दरी—"ठीक कहती हो बहन, लड़के का नाम कमलाकान्त ही था। अहा! देखने में कैसा सुन्दर था।"

देवसुन्दरी—"राम राम! ऐसे लड़के का भी कहीं ख़ून हुआ है? हाय हाय! वह लड़का था कि देवता था। मुझे देख कितना आदर करता था। मेरी विलासिनी को ठीक बहन की तरह प्यार करता था।"

शिवसुन्दरी—"बहन, उसकी बात याद आने से अब भी आँखों में आँसू उमड़ आते हैं। कमला बाबू मेरे नन्हे गोपाल को कितना गोद खिलाता, हाथ में लड्डू देकर कितना ही प्यार करता था! अहा! ऐसे सुन्दर लड़के पर किसने छुरी चलाई?"

भुवनसुन्दरी—"बहन, मेरे तो प्राण निकले जाते हैं। अब इसकी चर्चा न करो। इस बात को यहीं ख़तम कर दो। कमला को मैं अपने बेटे के बराबर मानती थी। मेरी बड़ी बहू देवर का रिश्ता लगा कर उससे कितना ही ठट्ठा किया करती थी। वह भी उसे अपनी भाभी की तरह मानता था। बर्दवान से नये क़िस्म का कपड़ा, गहना, मेवे और मिठाई आदि कितनी ही चीज़ें बड़ी बहू के लिए भेजता था। मेरी बड़ी बहू के सन्तान होने की बात सुन कर वह बड़ा ही ख़ुश हुआ था। हाय हाय! बाबू मेरे बच्चे का मुँह भी तो न देखने पाये!"

रामसुन्दरी—"पुलिस उस ख़ून का कुछ भी पता न लगा सकी। सुनती हूँ, लाश को रातों रात जला कर ख़ाक कर दिया। इतने दिन तो कोई इस बात पर कुछ न बोला। क्या उपाध्यायजी मन्त्रबल से उसी बात को फिर जिलाना तो नहीं चाहते हैं? बड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाबू साहब बहुत डर गये हैं। इसीसे उपाध्याय की इतनी .खुशाम होने लगी है।"

इसी तरह सारे दिन सनातनपुर के घर, बाहर, गली-कूचों बड़ी बहू, उनके पति, योगमाया और उपाध्यायजी के चरित्र व बात लेकर भाँति भाँति की समालोचना होने लगी।

सन्ध्या समय दयानाथ ने पिता से कहा—"मालूम होता है बड़े सरकार आज हम लोगों के ऊपर दयालु हुए हैं। आप साथ उन्होंने आज मित्र का सा व्यवहार किया है।"

रमानाथ—"बेटा दयाराम! तुम भूलते हो, आज बाबू साह हमारे परम शत्रु होकर खड़े हुए हैं, .खूब सतर्क रहना।"

दयानाथ—"सो क्या? उन्होंने हम सब के भोजन के लि अनेक प्रकार की सामग्री भेजी है। हमारी सेवा के लिए नौक भेजे हैं।"

रमानाथ—"ख़बरदार! उनके भेजे हुए आहार का स्पर्श न करना। उनके नौकर चाकर हमारी सेवा के लिए नहीं, पहरा देने के लिए आये हैं।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्नीसवाँ परिच्छेद

जिस दिन रमानाथ सुलोचना से भेंट करके मर्म की बात कह आये उसके दूसरे दिन से कामिनीकान्त बाबू का दर्शन लोगों को अलभ्य सा हो गया। वे बराबर घर के भीतर रह कर न मालूम क्या सोचते रहते थे। अपने विश्वासपात्र भृत्यों को बर्दवान और कलकत्ते भेजते थे, रोज़ रोज़ उनके पास कितने ही गुप्त पत्र आते थे और वे भी उन लोगों के पास पत्र भेजते थे। उनके नौकर सब जहाँ तहाँ कहने लगे—"हमारे मालिक का दिमाग़ ख़राब हो गया है। वे दिन रात किसी घोर चिन्ता में डूबे रहते हैं। स्वभाव उनका ऐसा चिड़चिड़ा हो गया है कि वे बात बात में गाली बकते हैं। उनके घर की दासियाँ कहती थीं, मालिक का शरीर सूख कर आधा हो गया है।"

इस प्रकार दो तीन मास बीतने पर धर्मपुर से ख़बर आई, "बूढ़े तारिणीबाबू का देहान्त हो गया और यह भी ख़बर आई कि तारिणीबाबू ने मृत्यु के पूर्व ही रमानाथ उपाध्याय को बुला भेजा था। उपाध्यायजी वृद्ध के घर में सारी रात बैठे रहे। सुधा इस बार शिवचन्द्र के साथ पूरब गई है। शिव बाबू की उधर ही तबदीली हुई है। इसलिए सुमित्रा अकेली बड़े चचा की सेवा में हमेशा हाज़िर रहती थी। सुभद्रा को सुमित्रा का आना जाना पसन्द नहीं, परन्तु बाबू की म्रियमाण अवस्था देख उसने मुँह खोल कर कुछ न कहा, भीतर ही भीतर कुढ़ती थी। तारिणी बाबू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के मृत्युकाल में रमानाथ उनके पास मौजूद थे। कदाचित् उन्हों स्त्री के नाम से जो विल (वसीयतनामा) लिखा था, उसे बदल कर वे सुमित्रा और सुधा के नाम से नया विल करके उन्हीं दोनों को सारी सम्पत्ति की अधिकारिणी बना गये हैं।

यह सब बात सुनकर कामिनी बाबू का जी जल गया। उस दिन मारे क्रोध के उन्होंने खाना पीना छोड़ दिया। सारे दिन बैठ कर अपने मन्त्रियों के साथ गुप्त विचार करने लगे। तारिणी बाबू की सम्पत्ति जिसमें हेम और शिवचन्द्र को न मिल कर अभी सुभद्रा के हाथ में रहे, पीछे उसे अपने कब्ज़े में कर लें, कपटाचारी रमानाथ से किसी तरह वैर का बदला लें, उद्यत हेमचन्द्र को कुछ शिक्षा दें, एक भारी मुक़दमा दायर करके अपनी बहादुरी ज़ाहिर करें, सुशीला के साथ दयानाथ का विवाह न होने देकर अपनी धर्मप्रियता और देशाचारप्रियता प्रकट करें—इस तरह भाँति भाँति की चिन्ताओं से कामिनी बाबू का मन एकदम अस्तव्यस्त हो गया। दोपहर से ढाई पहर, ढाई से तीन पहर हो गये। स्नान नहीं, भोजन नहीं, नौकर आग सुलगाने और तम्बाकू भरने पर उद्यत हैं। वे बार बार तम्बाकू भर कर लाते हैं और बाबू के हाथ में देते हैं। इधर जलेबी के पाग की तरह कामिनी बाबू और उनके आत्मीय बन्धुजनों के विचार का उबाल जारी है।

साँझ को विकसित मुँह से कामिनीकान्त बाबू बरामदे में खड़े हैं। दूर से देखा, धर्मपुर से रमानाथ लौटे आ रहे हैं। ज़रा हँस कर उन्होंने मन में कहा—उपाध्याय महाशय! तुम बड़े चालाक हो। तुम मेरे साथ ख़ूब चाल चले हो। अच्छा, देखा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जायगा । मैं भी कुछ चालाकी करना जानता हूँ । मैं भी बेख़बर नहीं हूँ, मैं तुम्हारी चाल का जवाब दूँगा । सावधान रहना ।"

दूसरे दिन सवेरे सनातनपुर की डेवढ़ी से पालकी और दासी धर्मपुर में तारिणी बाबू के दरवाज़े पर उपस्थित हुई । कामिनी बाबू की गृहिणी सुलोचना ने सुभद्रा को बुला भेजा है । तारिणी बाबू की स्त्री पतिशोक से बड़ी व्याकुल है । धर्मपुर में उस को सान्त्वना देने वाला कोई नहीं । सम्पत्तिरक्षा का परामर्श देने वाला भी कोई नहीं । इसलिए सुलोचना की इच्छा है कि सुभद्रा कुछ दिन सनातनपुर में आकर रहे । कुछ शोक कम होने पर और सम्पत्ति शत्रुओं के हाथ से निरापद होने पर सुभद्रा फिर अपने घर जायगी । अगर तारिणी बाबू सचमुच ही भतीजियों के नाम से बिल कर गये होंगे तब तो उस विषय को लेकर मुक़दमा चले होगा । सनातनपुर के ज़मींदार कामिनी बाबू उस मुक़दमे में असहाय विधवा का पक्ष लेकर पूरी सहायता करने को तैयार हैं ।

सुभद्रा परोपकारी ज़मींदार महाशय के निमन्त्रण से अपने को अत्यन्त सम्मानित समझ सनातनपुर के बाबू के यहाँ गई और वहाँ सुखपूर्वक रहने लगी ।

दस पन्द्रह दिन तक बराबर सलाह विचार होता रहा । बर्दवान से गोपाल बुलाये गये । कामिनी बाबू के अन्यान्य परामर्श देने वाले आये । अनेक तर्क वितर्क के अनन्तर सलाह पक्की हुई । बर्दवान में कई दरख़ास्तें पड़ीं । पुलिस अफ़सरों के पास सिफ़ारिश होने लगी । सब काम ठीक हो जाने पर सुभद्रा धर्मपुर लौट आई ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसी दिन साँझ को कामिनीकान्त बाबू बड़े ठाट बाट के साथ पालकी पर सवार हो सनातनपुर से चल दिया।

रमानाथ और दयानाथ खाने को बैठे थे। उसी समय बाबू की सवारी बड़े समारोह के साथ निकल गई। दयानाथ ने पिता से कहा—"वह देखिए, बाबू साहब जा रहे हैं, कई महीने से उनका स्वास्थ्य बिगड़ा है, शरीर भी बहुत दुर्बल हो गया है। सुना है, वायु-परिवर्तन के लिए पश्चिम जा रहे हैं।"

रमानाथ—"तुमने यह बात ग़लत सुनी है। हम सब को एक घोर संकट में डालने के लिए बुद्धिमान् बाबू साहब कलकत्ते जा रहे हैं।"

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बीसवाँ परिच्छेद

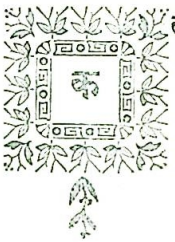

लकत्ते के सुप्रसिद्ध अटर्नी सुमति बाबू की बैठक बड़ी रौनक़दार है। रौनक़दार होने पर भी ऐयाश लोग जिन चीज़ों से अपने कमरे को सजाते हैं, वह एक भी उस कमरे में न थी। झाड़ और फ़ानूसों का विशेष आडम्बर नहीं, सिर्फ़ गैस बल रही है। दीवाल में नग्न स्त्रियों का या और किसी तरह का अश्लील चित्र नहीं है। केवल जङ्गल, पहाड़, नदी, शहर और सरोवर आदि के मनोहर दृश्यों की दो चार तसवीरें टँगी हैं। कमरे के एक तरफ़ लिखने की मेज़ है, जिस पर चंद किताबें रक्खी हैं और एक लेंप भी है। उस मेज़ के चारों ओर कई एक कुरसी, दो बेञ्च और एक आरामकुरसी भी तरीक़े से रक्खी हुई है। अमीरों के कमरों की तरह नीचे कार्पेट या ग़लीचा नहीं बिछा है, सिर्फ़ नई चटाइयों से कमरे की ज़मीन ढकी है। सुमति बाबू की बैठक अनेक प्रकार के मुसाहब या गुणी गवैयों और बजाने वालों से भरी नहीं है। उस कमरे में सिर्फ़ उनके दो चार चुने हुए आत्मीय जन बैठे हैं। सुमति बाबू को देखने से कोई उन्हें अमीर नहीं कह सकता और न वे अपने को अमीर कहलाने की इच्छा रखते हैं। उनको देखने से यही प्रतीत होता है कि वे एक बुद्धि-जीवी चतुर मनुष्य हैं।

विलासपुर के धनञ्जय बाबू अब पहले के से विभवशाली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं हैं। इने गिने दिनों में उनके हाथ से सम्पत्ति का बहु
कुछ अंश निकल गया है। जो कुछ थोड़ा सा है भी वह ऋणजाल
से जकड़ा है। कितने ही लोग छिप कर कहते हैं कि धनञ्जय बाबू
का अधिकांश धन सुमति बाबू ने बुद्धिकौशल से अपने हाथ में
कर लिया है। धनञ्जय बाबू दूसरा व्याह करके भी सन्तुष्ट न हो
सके। उनकी नई गृहिणी किसी तरह उन्हें तृप्त न कर सकी।
उनकी उपपत्नियाँ गीधों के झुंड की तरह मांसशून्य मुर्दे को त्याग
कर दूसरे मृतक की खोज करने को उड़ गईं। विहार करने का
बाग़ बिक गया। इस लिए धनञ्जय बाबू अब कुछ दिन से सुमति
बाबू की बैठक में ही रह कर दुःख के दिन बिताने लगे हैं। सुमति
बाबू अभद्र पुरुष नहीं हैं। जिनका सर्वस्व हड़प कर लिया है, उन्हें
एकदम निराश्रय कर देना वे उचित नहीं समझते। कमरे के एक
कोने में दब कर धनञ्जय बाबू बैठे रहते हैं। सुमति बाबू की कृपा
से कभी कभी एकाध प्याला ह्विस्की उन्हें भी मिल जाती है।
सुमति बाबू के मधुर-भाषण से वे अपने को सम्मानित समझते हैं।
धनञ्जय बाबू का न अब वह रूप है न रंग, दुर्बलता के कारण सारे
शरीर का चमड़ा सिकुड़ गया है। असमय में ही आँख की ज्योति
कम हो गई है। सिर के बाल आधे से अधिक पक गये हैं।
मदिरा का प्याला हाथ में कुछ कुछ काँपता है। धनञ्जय बाबू
पहले जोड़ी गाड़ी पर हवा खाने को निकलते थे, किन्तु अब एक
पुराने अनाहारी घोड़े को टमटम में जोत कर आप ही हाँकते हैं।
सईस कोचवान भी एक एक कर सब इस्तीफ़ा देकर चले गये।
जो दो एक हैं भी वे समय पर तलब न पाने के कारण भागने पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं। धनञ्जय बाबू जिधर देखते थे उधर ही उन्हें दरिद्रता का भयंकर दृश्य देख पड़ता था। ऐसे समय में तारिणी बाबू की मृत्यु की ख़बर पाकर धनञ्जय बाबू को नई सम्पत्ति हाथ लगने की कुछ कुछ आशा हुई। वे उस विषय में सुमति बाबू से परामर्श लेने लगे। सुमति बाबू के समान सलाह देने वाले कलकत्ते में कितने व्यक्ति हैं ? बहुत कम।"

आज कई एक नये ज़मींदार भी सुमति बाबू के पास आये हैं। कोई अभी नाबालिग़ है, अब शीघ्र ही बालिग़ होगा। उसे कुछ रुपये का विशेष प्रयोजन हुआ है। उस प्रयोजन के साधन में सुमति बाबू से बढ़ कर चतुर कौन है ? कोई मरे हुए दामाद का धन लेने के लिए आतुर हो पड़ा है। तरह तरह के मुक़द्दमे दायर करने की तजवीज़ कर रहा है। एक वसीयतनामा (किस तरह उसकी सृष्टि हुई, यह हम नहीं जानते) सुमति बाबू को दिखलाने आया है। कोई विलासपरायण अपने मन को स्नेहसमुद्र में डुबो कर आनन्दरूपी मोती पाने की आशा में बैठा है। कोई थिएटर की किसी नई विलासिनी की मीठी मुस्कुराहट और टेढ़ी चितवन से मुग्ध होकर उस विषय में साहित्य के मार्मिक सुमति बाबू के साथ मधुर आलाप करके हृदय के फफोले फोड़ने आया है। कोई आगामी शनिवार को पार्टी देगा, सुमति बाबू को निमन्त्रण देने आया है। कोई इस रास्ते से कहीं जा रहा था, केवल सुमति बाबू को देखने और एक गिलास लाल शरबत पीने के लिए गाड़ी से उतर पड़ा है।

इस प्रकार नाना प्रकार के फूलों से विभूषित, सुमति बाबू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के कमरे में कल्पवृक्ष के फूल की तरह कामिनीकान्त बाबू शोभ
पा रहे हैं। किन्तु इस कुसुमविकासपूर्ण घर में आज उनका मुख
कमल मुकुलित है। तरह तरह की गप्पें उड़ रही हैं, परन्तु व
गम्भीर भाव धारण किये चुपचाप बैठे हैं। तीक्ष्ण-बुद्धि सुमति बाबू
समझ गये, विषय कुछ गुरुतर है।

बड़ी देर तक बातचीत होती रही। रह रह कर मधुर हास
ध्वनि से कमरा गूँज उठता था। इस प्रकार रहस्य भाषण के
अनन्तर जब दस बजने का समय आया तब सब उठ खड़े हुए
और सुमति बाबू का अभिवादन कर अपने अपने घर गये। सिर्फ
धनञ्जय बाबू एक ओर बैठ कर हाथ में एक प्याला मद्य लिये
अर्धनिद्रित अवस्था में पड़े झपकी ले रहे हैं। उनको नींद लेते देख
कामिनीकान्त ने धीरे से अपनी बात संक्षेप में कह डाली—"मेरे
गाँव में एक घोर अधर्माचारी बकव्रती पण्डित आया है। वह
कायस्थ की लड़की के साथ एक ब्राह्मण के लड़के का व्याह करना
चाहता है। तारिणी बाबू की विधवा को सम्पत्ति से पृथक् करना
चाहता है। तारिणी बाबू की बीमारी के समय उसी ने दवा
खिलाई थी। उनकी मृत्यु के अनन्तर उसी ने जाली वसीयतनामा
बनाया है। हिन्दू-धर्म और हिन्दू-आचार की रक्षा करना हिन्दू
मात्र का कर्त्तव्य है और निराश्रय विधवा ज़मींदार के घर की स्त्री
का साहाय्य करना ज़मींदार मात्र को उचित है। अतएव इस कूट
नीति के अनुसार उपाध्याय को फ़ौजदारी मुक़दमे में फँसाने के
लिए जो जो प्रपञ्च रचे गये थे, सो सब कामिनी बाबू थोड़े ही में
भूत की तरह बक गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रात के ग्यारह बज गये। विचार पक्का करने का समय न रहा। इस लिए "फिर दूसरे दिन आऊँगा" कामिनी बाबू उठ खड़े हुए। चलते समय उन्होंने कहा—"सुमति बाबू, आपके साथ फिर भेट होगी? इस मामले में आप से सलाह लेना बहुत ज़रूरी है, ख़ास कर आज मैं आपके पास इसी लिए आया था।"

सुमति—"मेरी भेट की कौन? जब आप चाहेंगे तभी भेट होगी।"

कामिनीकान्त—"कल साँझ आपको फ़ुरसत रहेगी? अगर मेरे बाग़ बँगले में आवें तो कुछ गाना बजाना भी हो और बात-चीत भी हो।"

सुमति—"ज़रूर आऊँगा, आप की वह कोकिलवयनी मृग-नयनी यवनसुन्दरी तो है न? उसका "चाहो न चाहो" गीत एक बार और सुनने की इच्छा होती है। क्या कहूँ, गाने में तो वह तान-सेन की उस्तादिन और नाचने में इन्द्र की अप्सरा ही जान पड़ती है।

कामिनी बाबू हँस कर बोले—"आपके हुक्म को वह दिलो-जान से तामील करेगी। जिस गान से आपका जी ख़ुश होगा वह वही गाकर सुनावेगी। छः बजे साँझ को आप आने की कृपा करेंगे। नाच गान तो हो ही गा, उसके साथ साथ इस मामले का भी सलाह विचार ठीक हो जायगा।"

यह कह कर कामिनी बाबू चले गये। धनञ्जय बाबू ने ससुर के वसीयतनामे की बात सुन कर कान खड़ा किया। उन्होंने आँखें बन्द किये ही किये सब बातें सुन लीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इक्कीसवाँ परिच्छेद

आज कामिनी बाबू के बाग़-बँगले में वेश्या का नाच है। मुन्नाजान ने पञ्चम स्वर में, "तुम चाहो न चाहो हम जान से फ़िदा हैं।" गाया, अप्सरा की तरह नृत्य किया और कुटिल कटाक्षरूपी तीक्ष्ण बाण बरसा कर कितने ही उल्लू के पट्ठों को लोट पोट कर दिया। सुमति बाबू प्रसन्न नयन से उस नर्तकी की ओर देखते रहे। किन्तु इस हर्ष के अवसर भी कामिनी बाबू के चेहरे पर चिन्ता का कुछ चिह्न झलक रहा था।

नाच ख़तम होने पर खाने पीने का प्रबन्ध ठीक हुआ। यह कहना फ़ुजूल है कि खाना अँगरेज़ी ढङ्ग का था। मुसलमान बावर्ची ने नाना प्रकार की सुस्वादु खाद्य सामग्री लाकर मेज़ के ऊपर रख दी। मुन्नाजान खानसामा के हाथ से शराब की बोतल लेकर अपने हाथ से बाबू साहबान के गिलास भर कर "पीता हूँ गुलरू गुल गुलाब के बदले, दिल भून के खाँता हूँ कबाब के बदले।" गीत बड़ी ख़ूबी के साथ गा कर अपने घर गई। किन्तु कामिनीकान्त बाबू का सुरापूर्ण प्याला ज्यों का त्यों पड़ा रहा। उन्होंने हाथ से छूआ तक नहीं। उनके चेहरे पर अब भी चिन्ता का चिह्न दिखाई देता है।

दर्शकों के चले जाने पर दोनों आदमी एक जगह बैठ कर बात करने लगे।

कामिनी बाबू—"मैं प्रायः सब बातें कल आपसे कह ही चुका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हूँ। मेरे गाँव में कई एक महीने से जो एक कपटाचारी उपाध्याय गड़ बड़ मचा रहा है उसका सब हाल आप सुन ही चुके हैं। वह लोगों को दिखाने के लिए उपनिषद् पढ़ता है, वेद पढ़ता है, वेदमन्त्र का गान करता है। साधारण लोगों को बुला कर शास्त्र की शिक्षा देता है, और जातिभ्रष्ट हेम और शिव के साथ खाता पीता है। सुना है, वह कायथ की लड़की से अपने पुत्र का ब्याह करना चाहता है। हा! इससे बढ़ कर अब क्या अनाचार होगा? सनातनपुर गाँव में मालूम होता है अब हिन्दूधर्म और कुलाचार न रहेंगे।"

सुमति—"आप हिन्दुओं के स्तम्भस्वरूप हैं। आपके रहते एक रमते फ़क़ीर की इतनी शेख़ी? आप एक काम कीजिए।"

कामिनी बाबू—"क्या?"

सुमति—"आपने जिस रंडी को यहाँ नचाया है, उसको अपने घर पर ले जाकर नचाइए। यवनसुन्दरी के प्रताप से वह धर्मध्वजी साला आपही बाप बाप करके गाँव छोड़ कर भाग जायगा।"

कामिनीकान्त—"नहीं साहब! यह उपाय ठीक नहीं। हमारे गाँव के लोगों के मन में अभी तक कुसंस्कार बना है। वे लोग जीवनसुख नहीं जानते। हमारी अनेक चेष्टा करने पर भी गाँव की वैसी उन्नति नहीं हुई। सभी अविद्या के घोर अन्धकार में पड़े हैं। मुसलमानिन को गाँव में ले जाने से निन्दा होने की संभावना है।"

सुमति—"अच्छा तो, दूसरा ही उपाय कीजिए।"

कामिनीकान्त—"कौन उपाय?"

सुमति—"बलवन्तसिंह नाम का जो आपका पहलवान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE.

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नौकर है, उससे कह दीजिए कि वह उपाध्याय की चोटी पकड़ कर गाँव से बाहर कर दे। इस एक साधारण बात को लेकर आप इतने चिन्तित हैं।"

कामिनीकान्त—"यह उपाय तो मैंने किया था, किन्तु वह व्यर्थ हुआ। कल मैंने आपसे कहा ही है, वह उपाध्याय, मालूम होता है, मेरे गाँव की उस प्राचीन घटना की बात कुछ जानता है। उसको निकाल देने से वह पूर्व की घटना को फिर से नई करके हम सब को ज़रूर विपद में फँसावेगा। मेरा विश्वास ऐसा ही है।"

सुमति—"अगर आप अपने गाँव की पूर्व घटना खोल कर कहें तो मैं सब समझ सकूँ और उस पर अपनी सम्मति प्रकट करूँ।"

कामिनीकान्त—"अच्छा, मैं आपको पुरानी बात कह सुनाता हूँ। सुनिए। मेरे पिता बड़े बुद्धिमान् थे, वे हमारे अनेक हिस्सेदारों के, ज़मींदारी के छोटे छोटे अंश ख़रीद कर स्वर्गवासी हुए। यह आप जानते ही हैं। बाबूजी की हासिल की हुई चार आना ज़मींदारी को मैंने अपने कब्ज़े में कर लिया। कमलाकान्त मेरा एक हक़ीक़ी भाई था। उसका तीन तीन आना हिस्सा भी मेरे ही हाथ में था। मैं ही उसकी ज़मींदारी की देख भाल करता था।"

सुमति—"आप बड़े बुद्धिमान् हैं,—इसलिए उस नाबालिग़ का तीन आना हिस्सा भी वे प्रयास आप ही के हाथ में रह गया।"

कामिनी—"वे प्रयास तो नहीं। वह नाबालिग़ कमलाकान्त बड़ा ही उजड्ड लड़का था। वह अपना हिस्सा मेरे हाथ से छुड़ाना चाहता था। उसने चुपचाप बर्दवान जाकर कलक्टर साहब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के पास दरख़ास्त दी कि उसका हिस्सा कोर्ट आफ़ वार्ड्स को सिपुर्द कर दिया जाय। किन्तु कलक्टर साहब तब मेरी मुट्ठी में थे उसकी दरख़ास्त नामंज़ूर हुई। नाबालिग़ की ज़मींदारी का भार मेरे ही हाथ में रहा।

"बेवकूफ़ कमलाकान्त ने कोर्ट आफ़ वार्ड्स की दरख़्वास्त नामंज़ूर होते देख वीरगाँव के प्रजागणों को बहकाया। उन्हें मना कर दिया कि वे लोग मालगुज़ारी न दें। उसने लाठी के हाथ से मेरे तहसीलदार और पटवारियों को वीरगाँव से निकाल बाहर कर दिया। लगभग एक सौ प्रजाओं के साथ में लाठी देकर आप उस गाँव का मालिक बन बैठा।"

इस समय उस तरह की वारदात होने से पुलिस में ख़बर देनी होती। उस समय हम ख़ुद अपने हाथ से कितने ही काम कर लेते थे। ऐसे ऐसे छोटे कामों के लिए थाना जाने की ज़रूरत न पड़ती थी। मैं भी उन दिनों वैसा समझदार न था और बड़ा ही उद्दण्ड था। पाँच सात सौ लठैतों को लेकर मैंने उस गाँव पर आक्रमण किया। उसके बाद जो हुआ, आप ने सुना ही होगा।"

सुमति—"हाँ सुना है। उसी दंगे में कमलाकान्त का ख़ून हो गया। उस विषय को लेकर पुलिस ने आप लोगों को बहुत दिनों तक दिक़ किया था।

कामिनी—"ग़रीब लोग पुलिस से डरते हैं, धनवान लोग पुलिस का भय नहीं करते। तो बात यह है कि बिना किसी को चालान दिये दारोग़ा बाबू की नौकरी पर ज़रूर पहुँचती इस लिए मैंने अपने मेल के पाँच सात नौकर लठैतों को गिरफ़्तार करा दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन सब को सज़ा मिल गई। इसके लिए उनके पुत्र कलत्र को यथेष्ट पुरस्कार दिया। जो यथार्थ में मुजरिम थे, उन्हें बचा लिया। हीरासिंह, लालसिंह और जवाहिरसिंह वग़ैरा सिपाहियों ने रातोंरात कमलाकान्त की लाश जला डाली और वे घर छोड़ कर भाग गये।

सुमति—"बहुत अच्छा बन्दोबस्त! ज़मींदारी के फ़न में तो आप एक ही मालूम होते हैं। सब मामलों को तय कर लेने पर आपको इतनी चिन्ता क्यों? मार में आप नहीं थे, इसे आप साबित करा चुके हैं। जो लोग अपराधी प्रमाणित हुए उन्हें दण्ड मिला, फिर चिन्ता कैसी? क्या उपाध्याय तीस वर्ष के बाद आपके विरुद्ध फिर वह मुक़द्दमा खड़ा करना चाहता है?"

कामिनी—"उपाध्याय उस संगीन फ़ौजदारी की बात जानता है, इसमें सन्देह नहीं। वह सब सुन चुका है और सब बात जानता है। मैं उसकी कुछ परवा नहीं करता। तीस वर्ष बाद पुराने मुक़द्दमे को फिर से खड़ा कर सकेगा, इसका मुझे खौफ़ नहीं है।"

सुमति—"तो आपको खौफ़ किस बात का है?"

कामिनी—"कमलाकान्त को जब मेरे साथ विरोध आरम्भ हुआ तब उस पाजी ने अपनी स्त्री को पोष्यपुत्र लेने का आज्ञा-पत्र लिख दिया। मालूम होता है, उस उल्लू को पता लग गया था कि किसी न किसी दिन लाठी की मार में उसके प्राण जायँगे।"

सुमति—"आप होशियार ज़मींदार होकर एक बेवा औरत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से डरते हैं ? क्या आपके सामने कमलाकान्त की विधवा किसी को गोद लेगी ?"

कामिनीकान्त—"उस रास्ते को मैंने बन्द कर दिया है। उमाकान्त की मृत्यु के अनन्तर मैंने उसकी विधवा योगमाया के पास से वह आज्ञापत्र खींच लिया और उसके पति की सारी सम्पत्ति उससे लिखा ली है। किन्तु मैंने गुप्त अनुसन्धान से जाना है, यह उपाध्याय उस अनुज्ञापत्र की बात जानता है। अब उस बात को अदालत में प्रमाणित करा कर अपने बेटे को योगमाया का पोष्यपुत्र बनावेगा। इसके बाद वह बेटे की तरफ़ से तीन आना ज़मींदारी का मालिक बन कर बैठेगा। योगमाया का जैसा आचार व्यवहार देखता हूँ, उससे यही निश्चय होता है कि कुछ दिन में वह निर्लज्ज विधवा भी उपाध्याय की गृहलक्ष्मी हो रहेगी। और उपाध्याय का जैसा कुछ आचार विचार देख रहा हूँ, उसका धर्म-प्रचार, सोलह आना ढोंग है, उसका मतलब कुछ और है। वह ज़मींदार होकर सनातनपुर में पुजना चाहता है। मेरा पहला ज़माना न रहा। अफ़सोस ! नहीं तो ऐसे विधर्मी, भ्रष्टाचारी स्त्री-पुरुष को जीते जी मिट्टी खोद कर ज़मीन में गाड़ देता। किन्तु अब न मुझ में वह सामर्थ्य है और न वह हिन्दूपन है ?"

बड़ी देर से बकते बकते कामिनीकान्त का कण्ठ सूख गया और हिन्दूधर्म की दुर्दशा की बात सोच उनका हृदय भी अत्यन्त सन्तप्त हुआ, इस लिए एक गिलास मद्यपान करके उन्होंने गला भिगोया और हिन्दूधर्म को बचा रक्खा। पश्चात् फिर धीरे धीरे बोलने लगे—"यही मुझ पर भारी संकट आ पड़ा है, इससे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकलने के जो सब उपाय मैंने सोचे हैं, वे कल आपसे नहीं कहे अभी कहता हूँ, सुनिए।"

धर्मपुर के तारिणीप्रसाद की मृत्यु हो गई। उसने अपनी सारी सम्पत्ति मृत्यु के पूर्व ही अपनी स्त्री के नाम से लिख दी थी। सुना है कि मृत्युकाल में वह फिर दूसरा बिल लिख कर अपनी सारी धन-सम्पत्ति हेम और शिवचन्द्र को दे गया है। कहिए तो यह कैसे अनर्थ की बात है? क्या अनाथ विधवा को कोई इस तरह दुःख-समुद्र में छोड़ जाता है?"

सुमति—"क्या वह विधवा डूबती उतराती सनातनपुर में आकर किनारा तो नहीं पा गई?"

कामिनी—"सुभद्रा निराश्रय होकर मुझसे सलाह लेने आई थी। मैंने उसके हक़ में जो अच्छा समझा, परामर्श दिया।"

सुमति—"इस अवस्था में परामर्श कुछ कठिन नहीं। इस नये वसीयतनामे को झूठा साबित करके अनाथिनी विधवा की सम्पत्ति-रक्षा का भार आप अपने ऊपर लीजिए और उस नवजवान औरत को स्नेहपूर्वक तसल्ली दीजिए।"

कामिनी बाबू—"आप ठट्ठा करते हैं। यह ठट्ठे की बात नहीं, इसके भीतर बड़ा ही गूढ़ रहस्य भरा है। वह उपाध्याय तारिणी-प्रसाद की मृत्यु के समय उसी के पास था। वृद्ध बिल करने के साथ मर गया। इसमें कुछ सन्देह का कारण है। उपाध्याय साधारण मनुष्य नहीं है। उसे आप एकदम सीधा न समझिए।"

सुमति—"देखता हूँ, आपने देहात में रह कर बुद्धि-विवेचना में शहरी को भी जीत लिया। कलकत्ता आपके आगे हार मानता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। क्या उपाध्याय के ऊपर आप .खून का मुक़द्दमा तो नहीं चलाना चाहते ? बलिहारी है आपकी देहाती बुद्धि को ! वीरगाँव के दंगे फ़साद की बात लेकर वह आपको .खूनी साबित करे या न करे, पर आप तो अभी से उस पर .खून का दावा कर रहे हैं। धन्य है !"

कामिनी—"मैं दावा क्यों करूँगा ? मेरा इस विषय में बोलने का कुछ हक़ नहीं है। मैं उस पर .खून की तुहमत लगाने वाला कौन ? सुभद्रा ने ज़िला मैजिस्ट्रेट के पास दरख़ास्त भेजी है कि उसके पति की सहसा मृत्यु में सन्देह का कारण है। इसलिए उसकी जाँच पड़ताल होना उचित है। पुलिस उसकी तहक़ीक़ात करेगी, पुलिस मेरे हाथ में है। अगर उपाध्याय को .खून के मुक़द्दमे में फँसा कर चालान न कराया तो मैंने इतने दिन से ज़मींदारी का काम करके क्या किया ?"

सुमति—"सुनिए, कामिनी बाबू, आप मुझे हितकारी जान कर मुझसे सलाह लेने आये हैं। मैं मित्र होकर आपको बुरी सलाह नहीं दूँगा। आपने इस काम में एक भूल की है। अब के समय में झूठा .खून का मुक़द्दमा, मैं जहाँ तक समझता हूँ, ख़ारिज हो जायगा। पीछे आप विपद-जाल में फँसेंगे।"

कामिनी—"आप भूल करते हैं। कलकत्ते में क्या होता है, यह मैं नहीं जानता, किन्तु छोटे क़सबे में बालक से लेकर वृद्ध पर्यन्त और स्त्री से पुरुष तक सब लोग जिस बात को जानते हैं, वह बात हाकिम के कान तक नहीं पहुँच सकेगी। यह हमारे ज़मींदार बाबुओं के विचार का नियम है। "किसका धान किसने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काट लिया" यह बस्ती भर के लोग जानते हैं, परन्तु अदालत में कोई इस बात को क़बूल न करेगा। मुन्सिफ़ असल बात न जान सके, उन्होंने उलटा विचार किया। दोषी को कुछ दण्ड न मिला, निर्दोषी को उलटी सज़ा मिली। उपाध्याय को सारे देश के लोग भले ही निर्दोषी कह कर पुकारें, न्यायाधीश इस बात को न जानेंगे। सिखलाये हुए गवाह जो इज़हार देंगे, कार्यकुशल पुलिस जो रिपोर्ट देगी, विचारपति को उससे बाहर होने का कोई उपाय नहीं। यही तो यहाँ के विचार की व्यवस्था है। राजा को चाहिए कि नीति देवी को खोल पहिना कर उसकी एक मूर्ति इजलास में रख दें। बेचारे विचारपति भी आँखों पर पट्टी बाँध और कानों में रुई देकर चुपचाप अपना आसन ग्रहण किये बैठे रहें।"

सुमति—"यह सच है, पर तो भी कामिनी बाबू, सावधान! धर्मप्रचारक को क्या आप ख़ूनी साबित कर सकेंगे?"

कामिनी—"न कर सकेंगे, तो भी उस भंड को कई महीनों तक ज़लील तो करेंगे, ऐसी शिक्षा दूँगा कि वह फिर कभी भूलेगा नहीं।"

सुमति—"यह आपकी देहाती समझ है। मुक़दमे से अन्त में कुछ न होगा, केवल दूसरे को हैरान करने के लिए मुक़दमा दायर करना फ़ज़ूल है।"

कामिनी—"क्या आपके कलकत्ते के लोग बड़े सीधे हैं? वे किसी को हैरान नहीं करते, सिर्फ़ ग़म खाकर रहते हैं?"

सुमति—"हम सब हिन्दू के घर जन्म लेकर और कर ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्या सकते ? ज़रा बच कर ही चलना होता है। अच्छा, अब सब बात मुझे मालूम हो गई। अब क्या करना होगा सो कहिए।"

कामिनी—"आप मेरे बाल्यकाल के ही मित्र हैं, मेरे सुविचार-दाता हैं, सुख दुःख में मेरे साथी हैं, इस मुक़दमे में आपको मेरी मदद करनी होगी। आपको बर्दवान जाना होगा। यह भयंकर मुक़दमा आपको अपने हाथ में लेना होगा। आप बड़े ही तीक्ष्ण-बुद्धि हैं, आपकी असाधारण योग्यता है, आपके असंख्य मित्र और मुलाक़ाती लोग हैं—यह सब बात मुझसे छिपी नहीं है। आप कलकत्ते में एक अद्वितीय बुद्धिमान् अटर्नी हैं और मेरे परम मित्र हैं, इसी लिए मैं आपके पास आया हूँ।"

बड़ी देर तक मुक़दमे की बात होती रही। अनेक तर्क-वितर्क और आलोचना के अनन्तर कार्यप्रणाली ठीक हुई। आधी रात के बाद सुमति बाबू अपने घर को विदा हुए, जाते समय उन्होंने कामिनी बाबू से कहा—"आप बर्दवान जाइए। मैं अपने हाथ का काम पूरा करके आऊँगा। आप उसके लिए कोई चिन्ता न करें।"

बुद्धिमान् सुमति बाबू ने मन में सोचा, "कामिनी बाबू के इस काम में सहसा हाथ डालना न होगा। निर्दोषी मनुष्य के ऊपर एकाएक ख़ून का मुक़दमा चलाना—यह काम कुछ देहाती चाल का हुआ। ऐसा होना न चाहिए था। पहले जज साहब के पास वसीयतनामा जाली साबित कराया जाता, पीछे उपाध्याय पर जाल का मुक़दमा चलाया जाता। ऐसा न करके उसने मूर्ख की भाँति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक बार ही ख़ून का मुक़दमा खड़ा कर दिया। कामिनी बाबू का जैसा शरीर मोटा है, बुद्धि भी वैसी ही मोटी है। मैंने तो उसे बहुत समझाया, पर वह अपनी देहाती बुद्धि के आगे मेरी बात क्यों मानने लगा !"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाईसवाँ परिच्छेद

लकत्ते में जब यह सब तूल तवील हो रहा था उस समय सनातनपुर में अनेक प्रकार की घटनायें घटीं। हम उन घटनाओं की ख़बर किससे पावेंगे, कौन हमें वह सब बात जतावेगा ? खेद का विषय है कि सनातनपुर से न कोई समाचार-पत्र निकलता था और न वहाँ कोई संवाददाता ही था। इससे लाचार होकर हम सब एक बार फिर उसी पोखर के घाट पर जाते हैं। वहाँ नित्य ही गाँव की नई नई ख़बरें आती हैं और पुरवासियों के चरित्र की संक्षेप से समालोचना भी होती है।

प्रातःकाल सूर्योदय होते न होते हमारी पूर्वपरिचिता नव-युवतियों के झुंड ने मधुर झम् झम् शब्द से घाट को प्रतिध्वनित किया, और अपने रूप की छटा से चारों ओर उजेला कर दिया। सुन्दरी सरसहृदया कुसुमकुमारी ने कलसी नीचे रख व्यङ्ग की हँसी हँस कर काव्य करना आरम्भ किया।

"ज़मींदार बाबू के घर का नया हाल सुन पाया है,
उपाध्याय बैरागी बाबा दूल्हा बनने आया है।"

वसन्तकुमारी—"क्या कहा ? कौन जमाई होगा ? तुम्हारा रंग ढंग तो आज नया ही देख पड़ता है।"

"जी जलाता है तेरा हँस के मुकरना कैसा कैसा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुसुमकुमारी—"मेरा रङ्ग कैसा ? जिसको रङ्ग करने का समय आया है, वह रङ्ग करेगी ?"

कमलकुमारी—"सखी, खोल कर क्यों नहीं कहती ? इतनी ठिठकती क्यों है ?"

कुसुमकुमारी—"मैं क्यों ठिठकने लगी ? जिसको ठिठकना है, उसकी ठिठक जाकर देखो ।"

हेमकुमारी—"समझ गई, समझ गई, इसीसे तुम विद्या-वारिधि पर व्यङ्ग करती थीं । क्या यह बात सच है ? हमारी विद्या-देवी क्या सचमुच ही वैष्णवी होकर देश देश घूमेगी ?"

"पान चबावन जानति ना वह प्रेम निबाहन जानिहैं कैसे ।"

स्वर्णकुमारी—"अब विद्या, विद्या, कह कर छिपाने से क्या होगा ?"

"कबहू नाहि न रहि सकै रुई लपेटी आग ।"

अब यह बात कहाँ तक छिपी रह सकेगी ? हमारी योगमाया के पवित्र आचरण की बात सब लोग जानते हैं । किसका मुँह कौन बन्द करेगा ?

राजकुमारी—"किसी का नाम क्यों लेती हो ? सुनने से अभी भारी कोलाहल मचेगा ।"

स्वर्णकुमारी—"कोलाहल कैसा ? उस दिन साँझ को पण्डितजी सिर-दर्द का बहाना करके सोये थे, और योगमाया बहन उनके पास बैठ कर मुँह पर घूँघट डाले पंखा झल रही थी । क्या यह कोई देखता नहीं ? हम सब क्या आँख पर पट्टी लगाये रहती हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वसन्तकुमारी—"सच कहो, बहन ?"

कमलकुमारी—"सच नहीं तो क्या झूँठ है ? योगमाया उपाध्यायजी के लिए रोज़ रोज़ शरबत बनाती हैं, पान लगाती हैं, क्या तुम देखती नहीं, वह उस महात्मा के घर की लक्ष्मी हो बैठी है। वह किसी दिन गेरुआ कपड़ा पहन उपाध्याय के साथ योगिन बन निकल जायगी। देख लीजो।"

हेमकुमारी—"नहीं री नहीं, योगमाया योगिन क्यों बनेगी ? वह गेरुआ कपड़ा पहनेगी तो रंगीन साड़ी कौन पहनेगा ? तुम सब को आँख रहे तब तो कुछ सूझे।"

सब एकस्वर से बोल उठीं—"क्या ? क्या ?"

हेमकुमारी—"तुम सब आँख मूँदे रहोगी तो देखोगी कैसे ? मैंने उस दिन साँझ को योगमाया का घर झाँक कर देखा, ओ दीदी ! देखती हूँ, घर के भीतर अरगनी पर एक काले पाढ़ की साड़ी लटक रही है। मैं तो देख कर अवाक् हो गई। आज तीस वर्ष उसको बेवा हुए हुआ, इतने दिन बराबर सफ़ेद साड़ी पहनती थी, अब उसको पाढ़दार साड़ी पहनने का शौक़ हुआ है ! मैं नहीं जानती थी, योगमाया ऐसी है। अरी ! वह तो चुपके चुपके .खूब शिकार खेलना जानती है।"

स्वर्णकुमारी—"अभी क्या देखा है, और दिन दिन कितना देखो सुनोगी। तुम सब कान में रुई दिये रहती हो तो सुनोगी कैसे ? सब बात तो अभी तुमने सुनी ही नहीं।" सभी चकित हो बोलीं—"सुनेंगी कैसे ? तुम कहोगी तब तो सुनें।"

स्वर्णकुमारी—"कहती हूँ, सुनो। यह जो कल्लू बहू हम सब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के घर आती है न ? उससे पूछ लेना। योगमाया ने उसकी दूकान से माथे का सुगन्धित मसाला और ख़ूबसूरत होने की दवा मोल ली है। बहन, ख़ूब किया, कहो न, क्या करे विचारी ! बूढ़ी होने से उसके मन का शौक़ तो नहीं गया है, बल्कि वह सूखे धान में पानी पड़ने की तरह और लहलहा उठा है।"

कमलकुमारी—"सिर्फ़ माथे में मसाला लगाने ही तक नहीं और भी कितनी ही बातें देखोगी।"

चन्द्रकुमारी—"और क्या देखेंगी बहन ?"

कमलकुमारी—"वह जो नाइन हमारे घर आती है न ? उस से पूछ लेना, वह सब बात कह सुनावेगी। किसी दिन योगमाया पैर में महावर और दाँतों में मिस्सी लगा कर दर्शन देंगी। वह प्रौढ़ा से फिर मुग्धा हो चली हैं ? लोग कहते हैं—

"गया रे जोवन फिर लौटत नाँही।"

परन्तु योगमाया को वह फिर लौटा है। वह नसीब की बड़ी प्रबल है। सचमुच, उसका भाग्य सराहने योग्य है।"

स्वर्णकुमारी—"हाँ बहन, यह बात तुम सच कहती हो, योगमाया का रूप रंग बिलकुल बदल गया है। दिन भर वह कंघी आइना हाथ में लिये ही रहती है। कुछ दिन से सुगन्धित तेल का व्यवहार होने लगा है। सुनती हूँ, उनका ध्यान अब भूषण-वसन की ओर अधिक लगा रहता है। वह जुलाहिन जो कभी कभी मेरे घर आती है, उससे पूछ लेना, वह कहती थी, "योगमाया उससे लाल और काले पाढ़ की साड़ी मोल ला देने को कहती है।"

कमलकुमारी—"यह क्या झूठ है ? उस दिन हीरा रंगरेज़िन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे घर आई वह कहती थी, योगमाया को अब रंगीन साड़ी पहनने का शौक़ हुआ है। उसने धानी और ककरेजा रंग की साड़ी रंग कर लाने की फ़रमायश की है।"

इस प्रकार भाँति भाँति की कल्पना भरी बातें करके नवयुवतियों के चले जाने पर अर्धवयस्क स्त्रियों का झुंड आ पहुँचा। वे सब भी बैठ कर उसी विषय की आलोचना करने लगीं।

मातङ्गिनी—"देखती हूँ आज तुम सबों के चेहरे पर बड़ी प्रसन्नता छाई है। यह हँसी ख़ुशी कैसी है? कुछ मुझ से भी तो कहो।"

तरङ्गिणी—"यह लो! सच कहो बहन, क्या तुम्हें कुछ मालूम नहीं? इस व्याह में हमें सब दूल्हे का परिछन करेंगी।"

मातङ्गिनी—"किस के व्याह में?"

विलासिनी—"जैसे तुम कुछ जानती ही नहीं? क्या तुम्हारी इसी उम्र में दोनों आँखें मारी तो नहीं गईं? न देखा तो न सही, आज तक तुम ने कुछ सुना भी नहीं?"

मातङ्गिनी—"नहीं बहन, मैं तुम से सच कहती हूँ, मैंने किसी के व्याह की बात नहीं सुनी है।"

सुभाषिणी—"अरी, ऐसे व्याह की क्या कोई बात व्यवस्था होती है, व्याह हो जाने पर लोग जानते हैं। इसी धर्मपुर में मल्लिकजी के घर में जो एक लड़की विधवा हो गई थी, क्या तुम नहीं जानती? उसने फिर दूसरा व्याह कर लिया। मालूम होता है, इस बार तिवारीजी के घर में भी वही बात होगी।"

मातङ्गिनी—"सो क्या? सो क्या बहन? विधवा होने पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्या फिर व्याह होता है ? धर्मपुर में क्या इसी से उन्हें सब लोगों ने समाज से अलग कर दिया है ?"

तरङ्गिणी—"योगमाया समाज से अलग होगी तो होगी, पर ऐसे सुन्दर उपाध्याय को वह न छोड़ेगी, वह योगिन होकर उसके साथ निकल जायगी। उसके बाद लोग उसे समाजच्युत कर ही देंगे तो क्या ?"

मातङ्गिनी—"उपाध्याय के साथ किसका व्याह होगा ?"

विलासिनी—"क्या तुम निरी बच्ची हो ? योगमाया की चाल ढाल देखती नहीं ? राम, राम ! ऐसी विधवा के मुँह में ख़ाक और ऐसे पण्डित के मुँह में भी ख़ाक !"

सुभाषिणी—"हमारी मातङ्गिनी तो कुछ जानती ही नहीं अच्छा मैं सब बात खोल कर तुम से कहती हूँ। धन्नू सुनार का लड़का जो कल मेरे घर आया था क्या उसको तुमने नहीं देखा ?"

मातङ्गिनी—"हाँ, हाँ, देखा था। वह लड़का क्यों आया था ?"

सुभाषिणी—"यह तुम नहीं जानतीं ? वह योगमाया से कुछ पूछने आया था। वह बड़ी देर तक उसके साथ फुसुर फुसुर करके बात कर रहा था। मैंने अपनी दासी को गोद में बच्चा देकर कहा कि जाकर सुन तो उन दोनों में क्या बात हो रही है। दासी केले की आड़ में खड़ी होकर सब बातें सुनीं।"

मातङ्गिनी—"क्या योगमाया ने गहना गढ़ने को दिया है ?"

सुभाषिणी—"हाँ री ! दिया है ! सुनार बुला कर एक जोड़ा कँगना तैयार करने को कहा है। विधवा होकर फिर व्याह करेगी, घूँघट काढ़ कर दुलहिन बनेगी, गहना पहनेगी, और इस ढलती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उम्र में फिर बच्चे जन्मेगी! पत्थर पड़े उसकी ऐसी अक्ल पर! यम-दूत ऐसी विधवाओं की ख़बर लेना क्यों भूल जाता है? देखो तो राँड़ का शौक़! चालीस वर्ष पार करके फिर नाक में नथ पहनेगी, पैरों में पायज़ेब पहनेगी, काले पाढ़ की साड़ी पहनेगी, उपाध्याय के घर मालिकिनी बनेगी। छिः छिः! राँड़ मर क्यों नहीं जाती?"

रामदुलारी—"पायज़ेब पहनेगी, सोने का पायज़ेब! राँड़ के मन का मनोरथ मन ही में रहेगा। कल साँझ को लोहे का पायज़ेब लिये सब आ गये। वही अब पायज़ेब पहनावेंगे।"

सभी चकित हो बोलीं—"कौन आया है? कौन आया है बहन?"

रामदुलारी—"क्या तुम सब ने अभी तक नहीं सुना है? दारोग़ा आया है। उसके साथ लाल साफ़ा बाँधे कई सिपाही आये हैं।"

सभी ने भयभीत होकर कहा—"दारोग़ा क्यों आया है?" क्या करेगा? क्या होगा?"

रामदुलारी—"सुना है, बड़े बाबूसाहब ने दारोग़ा को बुलाया है। इस उपाध्याय को बाँध कर बर्दवान ले जायगा। योगमाया का लक्षण ख़राब देखकर बाबूसाहब बड़े खफ़ा हुए हैं। शायद उन्होंने यह बात बर्दवान के हाकिम से कही है। हाकिम ने हुक्म दिया है—उपाध्याय और योगमाया को बाँध कर बर्दवान ले आओ।"

सभी मुँह बनाकर बोलीं—"छिः छिः! बड़े घर का यह हाल! योगमाया ने क्या किया? बाबू साहब के घर की इज़्ज़त बिगाड़ी। कुल में कलङ्क लगाया! ज़मींदार के घर की पतोहू होकर उसने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसा पाठ पढ़ा कि आख़िर यह बात पुलिस के कानों तक पहुँची। घर से बाहर तक सभी लोग योगमाया के रहस्य जान गये। हाय! हाय! धिक्कार है योगमाया की ऐसी बुद्धि को! वह अब लोगों में कैसे मुँह दिखावेगी?"

इस प्रकार योगमाया और उपाध्याय को गाली देती हुई मध्य अवस्था वाली स्त्रियाँ कलसी भर कर चली गईं। इसके बाद बूढ़ी स्त्रियों का एक झुंड आया। वे सब भी प्रस्तुत विषय को लेकर आपस में बातें करने लगीं। "सनातनपुर में पुलिस आई है, इसलिए इस विषय को छोड़ कर आज गाँव में दूसरी बात की चर्चा नहीं।"

श्यामसुन्दरी—"बहन, तुमने सुना है? धर्मपुर में जो थाने के दारोग़ा साहब आये थे, वे कल साँझ को इस गाँव में आये हैं।"

रामसुन्दरी—"सच कहो बहन! पुलिस क्यों आई है? सुन कर मेरा जी काँपता है।"

श्यामसुन्दरी—"पुलिस कैसे न आवेगी? गाँव की हवा जैसी बिगड़ी हुई है, जो सब अनर्थ हो रहा है, उसको दबाने के लिए पुलिस न आवे तो कैसे बने? उस साल धर्मपुर के हेमबाबू के घर की एक बेवा औरत को बहका कर शिवचन्द्र ने उसके साथ ब्याह कर लिया। अब सुनती हूँ, बाबूसाहब की हवेली में भी वैसा ही कुछ अनर्थ होने वाला है। यह जो जटा और डाढ़ी बढ़ाये उपाध्याय को धर्मोपदेशक करके जानती हो, वह मूँझौंसा विधवाविवाह की खोज में घूम रहा है। जब से बाबू साहब गाँव छोड़ कर बर्दवान गये हैं तब से इस लबार की आशा और बढ़ गई है। अब वह कहता है, "योगमाया को वैष्णवी बना कर अपने साथ ले जायगा।" कहो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो यह कैसे कलङ्क की बात है? शायद बाबू साहब ने बर्दवान के हाकिम से यह बात कह दी है। इसीसे उस बात की जाँच करने को दारोग़ा आया है।"

रामसुन्दरी—"अरी माई! बड़ी लज्जा की बात है! योगमाया को न मालूम क्या सूझा है। थी तो वह बड़ी नेक औरत। बहन, बुरी संगत से कैसी ही भली औरत क्यों न हो, उसको बिगड़ते देर नहीं लगती।"

श्यामसुन्दरी—"इसमें लज्जा क्या है? कलियुग में तो यह सब अच्छा ही है। अभी क्या देखा है, दिन दिन और देखोगी।"

शिवसुन्दरी—"यह बात नहीं है, इसीलिए पुलिस नहीं आई है, इसलिए नहीं।"

सभी ने पूछा—"तो किसलिए आई है?"

शिवसुन्दरी—"बाबू साहब (कामिनीकान्त) ने एक दिन मेरे बालगोपाल से कहा था, "उपाध्याय बड़ा फ़रेबी आदमी है, वह मौक़ा पाकर सब कुछ कर सकता है, वह औषध में विष मिला कर रोगी को खिलाता है, उसकी दवा खाने से एक आदमी मर गया है। उसी की जाँच करने को पुलिस आई है।"

देवसुन्दरी—"नहीं री नहीं। यह बात नहीं है। धर्मपुर से जो उस दिन मल्लिक के घर की बहू कामिनी बाबू के घर आई थी—अहा! बेटी का कपार फूट गया, इसी उम्र में वह विधवा हो गई। उसके साथ एक दिन कामिनी बाबू की गृहिणी बात कर रही थी, उस समय मेरी बड़ी बहू वहीं थी। मल्लिक बहू ने कहा कि उसके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गाँव में जो हेमबाबू हैं, उन्होंने उसके पति से ठग कर सब सम्पत्ति लिखा ली है। उसी से पुलिस आई है।"

भुवनसुन्दरी—"नहीं नहीं, मैं कहती हूँ सो सुनो, मेरी विलासिनी इसके भीतर की सब बात जानती है। जिस साल मेरी बेटी विलासो का व्याह हुआ था, उसी साल कमलाबाबू का ख़ून हुआ था; यह तो तुम सब जानती हो?"

शिवसुन्दरी—"हाँ, हाँ, उसी साल क्या, उसी महीने में मेरे बालगोपाल का अन्नप्राशन था, यह बात क्या कभी भूल सकती हूँ?"

देवसुन्दरी—"ठीक कहती हो बहन, ठीक कहती हो, उसी महीने में मेरी बड़ी बहू का सीमन्तकर्म था। कमलाबाबू मेरी बहू को जी से चाहता था। बर्दवान से उसके लिए तरह तरह की चीज़ें भेजता था, बाबू मेरे बच्चे का मुँह देखने भी न पाये। अहा! उसकी सूरत अब भी आँखों में गड़ी है।"

भुवनसुन्दरी—"तो क्या उस ख़ून के मुक़द्दमे की असली बातों का पता पुलिस को इतने दिन में लगा है? लगा होगा, उसी से आया है। अहा! मेरी विलासिनी को वह बहुत प्यार करता था। बच्चा, मेरी बेटी का व्याह भी तो नहीं देखने पाया।"

इस प्रकार आपस में बातें कर कमलाकान्त के लिए दो बूँद आँसू गिरा सिर पर घड़ा ले आँखें पोंछती हुई सब अपने घर चली गईं।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेईसवाँ परिच्छेद ।

घाट पर की स्त्रियों के गुप्त भाषण से हमने इतना जाना कि पहले धर्मपुर पीछे सनातनपुर में पुलिस का आगमन हुआ है। इसलिए अभी पुलिस की तहक़ीक़ात के सम्बन्ध में दो एक बात कहना आवश्यक है।

बर्दवान के भूतपूर्व नाज़िर तारिणीप्रसाद की सहसा मृत्यु से उनकी विधवा स्त्री सन्देह करती है और उसके साथ साथ गाँव के लोग भी सन्देह करते हैं कि यह मृत्यु स्वाभाविक नहीं है। इसका निश्चय करना आवश्यक है। मृत्यु स्वाभाविक है या अस्वाभाविक, धर्मप्रचारक विद्वान् रमानाथ उपाध्याय दोषी हैं किंवा निर्दोषी, इस गुरुतर विषय की जाँच करने के लिए असीम-गुण-सम्पन्न परम प्रभावशाली जमादार साहब दो एक कान्सटेब्ल को साथ ले गाँव में उपस्थित हुए हैं।

जमादार पश्चिम के रहने वाले थे। अँगरेज़ी बहुत कम, जानते थे और हिन्दी में भी कुछ विशेष योग्यता न थी। परन्तु जो कुछ वे बोलते थे, बड़ी बुलन्द आवाज़ में। शरीर ख़ूब लम्बा चौड़ा था, लम्बी दाढ़ी छाती के नीचे तक लटकती थी। मालूम होता है उनके रोबदार चेहरे से प्रसन्न होकर पुलिस के बड़े अफ़सर ने उन्हें जमादार नियत किया है। वे १५) महीना पाते थे, इसी अल्प वेतन के उपयुक्त तहक़ीक़ात भी हुई। कितने ही गवाहों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से इज़हार लिया गया, उपाध्याय जी को दो चार घुड़कियाँ दी गईं । साँझ को जमादार साहब अपने ख़ीमें को लौट गये ।

दारोग़ा ने पूछा—"क्या हुआ ?"

जमादार—"मृत्यु में बहुत सन्देह है"

दारोग़ा—"कैसा सन्देह ?"

जमादार—"सन्देह यही कि किसी ने दवा खिला कर उसे मार डाला है !"

दारोग़ा—"किसने दवा खिलाई ?"

जमादार—"दरियाफ़्त करने से जहाँ तक मालूम हुआ, रमानाथ नामक एक पण्डित की दवा खाते ही उसके प्राण छूट गये । वह पण्डित नहीं एक भारी बदमाश आदमी है । साहब के पास आप रिपोर्ट भेजिए कि उसका नाम बदमाशों के रजिस्टर में दर्ज कर लिया जाय ।"

दारोग़ा—"उसने बदमाशी क्या की है ?"

जमादार—"वह पुलिस से ज़रा नहीं डरता । हम सब को देख कर सभी लोग डरते हैं, पर वह मुझसे न डरा । वह मेरे सभी सवालों का जवाब देता गया । बल्कि वह मेरा सवाल सुन कर हँसता था । उसका मजाल इतना कि मेरे साथ गुस्ताख़ी करे ?"

दारोग़ा—"अच्छा, इस बात को अभी मुलतवी रखिए, यह बताइए कि ख़ून सच है या झूँठ ?"

जमादार—"सच क्योंकर होगा ? बड़ा आदमी अगर ख़ूनी हो तो क्या सहज ही ख़ून साबित होने पाता है ? ग़रीब आदमी हो तो डर दिखा कर जल्दी उससे ख़ून कबूल करा लिया जाय ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

.खूनी ने .खून क़बूल कर लिया, पुलिस ने इज़हार लिख कर उसे चालान दिया । बस, पुलिस की कारवाई ख़तम हुई ।"

दारोगा—"अब वह ज़माना नहीं है कि केवल .खून क़बूल कर लेने ही से आसामी पर .खून का मुक़दमा साबित हो जायगा ।"

जमादार—"होगा क्यों नहीं ? .खून के मुक़दमे में क्या अपने मुँह से .खून क़बूल करने वाले आसामी को मैजिस्ट्रेट साहब कभी छोड़ सकते हैं ?"

दारोगा—"मान लो, मैजिस्ट्रेट साहब दौरा सिपुर्द कर देंगे । इससे क्या होगा ? जज साहब छोड़ देंगे ।"

जमादार—"आसामी दौरा सिपुर्द होने से हमारा काम तो पूरा हो जायगा । अगर जूरी लोग मुजरिम को छोड़ देंगे तो हम सब अपने अफ़सर के पास रिपोर्ट करेंगे कि पंच लोग बिलकुल नासमझ हैं ।"

दारोगा ने देखा, "जमादार विशेष पढ़े लिखे न होने पर भी अक्लमन्द हैं । जो कुछ हो, इस मुक़दमे में विशेष सन्देह का कारण देख दारोगा साहब स्वयं तहक़ीक़ात करने गये ।"

जमादार जैसे लम्बे डील डौल के आदमी थे, दारोगा वैसे ही दुबले पतले और नाटे क़द के थे, किन्तु बुद्धि उनकी बड़ी तीक्ष्ण थी । उनका घर बाकरगंज में था । बाकरगंज के किसी पुलिस कर्मचारी के यहाँ नौकर रह कर पुलिस के काम में होशियार हुए । इसके बाद कुछ दिन वे कुली के रिक्रूटर हुए, आख़िर अपनी तीक्ष्णबुद्धि के बल से उन्होंने पुलिस में नौकरी पाई । कान्सटेब्ल से जमादार हुए, कई वर्ष जमादारी करने के अनन्तर सब-इन्सपेक्टर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नियत हुए हैं। अपने काम से अफ़सरों को सदा खुश रखते थे। इधर अपने गाँव में पक्की इमारत तैयार कराते थे, पोखर की नीव दी गई, बाग़ लगाये जाने लगे। घर पर तोड़े के तोड़े रुपये भेजे जाने लगे। गृहिणी को सोने के ज़ेवरों का अभाव नहीं। बाल बच्चे भी नित्य नये चटकीले कपड़े पहन कर अमीर के लड़कों को लजाने लगे। इसके अतिरिक्त एक बात और यह कि थाने के पास एक नई उम्र की विधवा स्त्री रहती थी, उसके लिए बारह तोले सोने का चन्द्रहार तैयार हो रहा था। दारोग़ा के पास एक उमदा घोड़ा है। नौकर, चाकर, सईस और रसोइया है। वेतन है दारोग़ा साहब का ३०) रु० मासिक।

दारोग़ा साहब विशेष रूप से इनकायरी करने लगे। तहक़ीक़ात का निचोड़ डायरी में लिख कर रोज़ रोज़ भेजने लगे। डायरी की लिपि बहुत सुन्दर, बहुत साफ़ और विश्वास करने योग्य, जो देख कर अफ़सर को किसी तरह का सन्देह उपस्थित न हो। अन्त में जाकर यही निश्चय हुआ कि पण्डित रमानाथ ने तारिणी बाबू को औषध में विष मिला कर खिलाया इसी से उनकी मृत्यु हुई। प्रमाण सब संग्रह करके उपाध्याय के हाथ में हथकड़ी डाल बर्दवान चालान दे रहे थे, ऐसे समय में इन्सपेक्टर साहब पहुँच गये।

इन्सपेक्टर एक शिक्षित युवा पुरुष हैं। कालेज के पढ़े हैं। अच्छे कुल में आपका जन्म है। धर्म अधर्म का ज्ञान है। बर्दवान के सभी लोग उनको आदर की दृष्टि से देखते थे। उनके द्वारा वादी प्रतिवादियों के कलह का निबटेरा हो जाता था। वे किसी का पक्षपात न करते थे, इससे क्या मुद्दई क्या मुद्दालेह सभी उनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इनसाफ़ को पसन्द करते थे। उन्होंने धर्मपुर मल्लिक के घर आकर देखा, दारोग़ाजी आरामकुरसी पर बैठे तम्बाकू पी रहे हैं। सामने उपाध्यायजी खड़े हैं! हाथ में हथकड़ी है।

देखते ही इन्सपेक्टर का सिर से पाँव तक सारा अङ्ग जल उठा, उन्होंने दारोग़ा के धूमायित मुँह पर बूट प्रहार करना चाहा, परन्तु इस इच्छा को किसी तरह रोक कर उन्होंने क्रोध भरे स्वर में पूछा—"यह क्या?"

दारोग़ा ने खड़े होकर अस्पष्ट स्वर में कहा—"ख़ून के मुक़द्दमे में मैं अपराधी को चालान दे रहा था, अच्छा हुआ, हज़ूर आ गये, जो आज्ञा होगी, करूँगा।"

इन्सपेक्टर ने गरज कर पूछा—"क्या रमानाथ उपाध्याय पर ख़ून का जुर्म लगाया गया है? क्या यही आपने तहक़ीक़ात करके जाना है?"

दारोग़ा कुछ क़ाबिल जवाब न दे सके।

इन्सपेक्टर ने ख़ुद अपने हाथ से उपाध्याय की हथकड़ा खोल कर कहा—"महाशय, क्षमा कीजिए, आपके ऊपर जो यह व्यर्थ अत्याचार किया गया है, उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।"

रमानाथ—"क्षमाप्रार्थना का कुछ प्रयोजन नहीं। दारोग़ा साहब अपना कर्तव्य पालन कर रहे हैं।"

इन्सपेक्टर—"आप यह क्या कहते हैं। आप ऐसी बात न कहें। देश के जितने चोर, बदमाश, मिथ्यावादी और धूर्त लोग हैं, उन लोगों ने आज कल केवल 'कर्तव्यसाधन' शब्द मात्र सीख लिया है। कर्तव्यसाधन का बहाना करके वे सब देश का सत्यानाश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर रहे हैं। कर्तव्यसाधन तो किसी से कुछ होता नहीं, होता है यत् किञ्चित् स्वार्थसाधन। स्वार्थी लोगों ने देश की बड़ी दुर्दशा कर डाली। अच्छा, आप ज़ामिन देकर घर जाइए। मैं मुक़दमे का काग़ज़पत्र देखता हूँ। आवश्यकता होने पर आपको बुलाऊँगा।"

इन्सपेक्टर ने दारोग़ा को थाने में भेज दिया। आप आदि से अन्त तक सबूत के सब काग़ज़ात देख गये। पश्चात् सबूत की रिपोर्ट करके सुपरेन्टेन्डेंट के पास अपना सन्तव्य लिख भेजा कि विष-प्रयोग के सम्बन्ध में जो प्रमाण हैं, वे सब झूँठ हैं और वे इस गाँव के ज़मींदार के द्वारा रचे गये हैं। तारिणी बाबू की मृत्यु रोग से हुई है।" अफ़सर के यहाँ से हुक्म आया—"जब विष-प्रयोग द्वारा मृत्यु होने के प्रमाण पाये गये हैं तब इन्सपेक्टर को चाहिए कि शीघ्र अपराधी को चालान दें। प्रमाण सच है या झूँठ इसका विचार अदालत करेगी।"

इन्सपेक्टर ने अत्यन्त दुखी होकर अपराधी का चालान किया और अपनी ओर से बैलगाड़ी का भाड़ा देकर उपाध्याय को बर्दवान रवाना किया।

भारी से भारी विपत्ति में भी रमानाथ उपाध्याय के चेहरे पर उदासी का चिह्न कोई नहीं देख पड़ता। भय से उनका प्रसन्न और शान्त मुख कभी म्लान नहीं होता। बर्दवान जाते समय उन्होंने बेटे को छाती से लगा, हँस कर कहा—"पुत्र, मैं बड़े समारोह के साथ बर्दवान घूमने जाता हूँ। तुम चिन्ता न करो, मैं कुशलपूर्वक लौट आऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दयानाथ की आँखों में आँसू भर आया । उसने पिता के पैर छूकर प्रणाम किया और उनसे आशीर्वाद ले घर को लौट आया ।

पीछे रमानाथ ने हेमचन्द्र के नेत्रों में आँसू देख कर कहा—"आप आँसू पोंछ डालिए, धीरता को हाथ से जाने न दीजिए, जिसमें शत्रुगण को हमारी अधीरता देखने का अवसर न मिले सो करना चाहिए । पापी लोग डरते हैं । पाप के अतिरिक्त डरने का दूसरा कोई कारण नहीं ।"

उपाध्याय हेमचन्द्र का हाथ पकड़ कर एक ओर ले गये और उस मुक़द्दमे में जो सब करना होगा वह अच्छी तरह समझा कर कह दिया ।

हेमचन्द्र सुमित्रा से विदा होकर उसी रात वर्दवान आये, और दूसरे दिन सवेरे की गाड़ी से कलकत्ते गये ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौबीसवाँ परिच्छेद

र्दवान का न्यायालय (कचहरी) आज लोगों की भीड़ से भरा है। तारिणी बाबू की मृत्यु का मुक़द्दमा आज पेश होगा। ज़िले के मैजिस्ट्रेट साहब तारिणी बाबू को जानते थे, उन पर विशेष कृपा रखते थे, पेन्शन का रुपया लेने के लिए जब तारिणी बाबू बर्दवान आते थे, तब मैजिस्ट्रेट उन्हें अपने निज के कमरे में बुला ले जाते और बड़ी ख़ातिर से बिठा कर उनके साथ बातचीत करते थे। उनको आनरेरी मजिस्ट्रेटी देने की बात भी वे एक बार कह चुके थे। किन्तु तारिणी बाबू की एकाएक मृत्यु की ख़बर से आप क्षुब्ध तो थे ही, तारिणी बाबू की विधवा की दरख़्वास्त पाकर आपका क्षोभ और बढ़ गया। आप अफ़सोस करने लगे, "धर्मपुर के एक प्रसिद्ध ज़मींदार को बुढ़ापे में विष खिला कर मार डाला! हा! एक पश्चिमी साधु ने द्रव्य के लोभ से ऐसा क्रूर कर्म्म किया है। निराश्रया विधवा को अपार दुःखसागर में छोड़ कर बेहोशी की हालत में उसके पति से दूसरा वसीयतनामा लिखा लिया है। तारिणी बाबू का प्राण-वियोग होते ही उनकी विधवा को गाँव से निकाल कर सनातनपुर भेज दिया। क्या ऐसा नृशंस, पापी, निर्दय मनुष्यरूपधारी हिंस्र पशु भी इस संसार में है? क्रोध से साहब का सारा शरीर काँपने लगा। उन्होंने पुलिस को अच्छी तरह तहक़ीक़ात करने का आदेश दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दारोग़ा ने जो डायरी भेजी थी, मैजिस्ट्रेट ने उसे ख़ूब ध्यान से पढ़ा, पढ़ कर सन्तुष्ट हुए। इन्सपेक्टर ने जो रिपोर्ट भेजी थी, उसको उन्होंने क्रोध से फेंक कर हुक्म दिया—"इस मुक़दमे में विचार होना बहुत ज़रूरी है, जल्द चालान दो।" साँझ को सुपरिन्टेन्डेन्ट के साथ ताश खेलते खेलते कहा—"आपका जो यह दारोग़ा है, वह इस ज़िले में बेशक मेहनती और काम करने वाला है। लेकिन आपका इन्सपेक्टर तो बिलकुल गधा है।"

गुडफ्राइडे की छुट्टी में मुक़दमा आ पहुँचा। दारोग़ा गवाहों को लेकर ख़ुद हाज़िर हुए। मैजिस्ट्रेट साहब की कोठी में जाकर निवेदन किया कि आज ही गवाहों से इज़हार ले लिया जाय, नहीं तो पीछे वे बिगड़ जायँ तो कोई तअज्जुब नहीं। आसामी बड़ा ही बदमाश और फ़रेबी है। वह समय पाने पर गवाहों को मिला ले सकता है। पुलिस का मुक़दमा पुलाव की तरह गरमागरम अच्छा होता है। ठंडा होने से ख़राब हो जाता है। मैजिस्ट्रेट साहब की भी इच्छा थी कि विचार शीघ्र आरम्भ हो, किन्तु वे न्याय अन्याय का ज्ञान रखते थे। तातील में वकील मुख़्तार सब घर गये हैं, इस अवसर पर मुक़दमा तजवीज़ करने से अपराधी के प्रति नितान्त अन्याय होगा यही समझ कर उन्होंने तीन दिन के लिए मुक़दमा मुलतवी रक्खा।

मुद्दालेह को ज़ामिनी पर छोड़ देने के लिए एक दुबले पतले कमज़ोर मुख़्तार ने दरख़्वास्त दी। उसने सोचा कि क़सूर साबित न होने के पूर्व मुद्दालेह को हाजत में रखना क़ानून के ख़िलाफ़ है। साहब ने कड़क कर पूछा—"क्या? ख़ूनी आसामी को ज़ामिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर छोड़ने की दरख़्वास्त ? तुम्हारे देश के एक नामवर आदमी की हत्या की गई है, उस मुक़दमे में हत्याकारी को उचित दण्ड देने का विचार हो रहा है। तुम तारिणी बाबू के दोस्त और एक-देशीय होकर उनके हत्याकारी की रक्षा करने की चेष्टा करते हो ? उसके लिए ज़ामिन चाहते हो ? तुम्हारी समझ पर मैं अफ़सोस करता हूँ। साहब का क्रोध-भरा चेहरा देख कर मुख़्तार की आँखों में सरसों फूलने लगी। वह इस पर कुछ बोलना उचित न समझ सलाम कर चुपचाप चल दिया।

छुट्टी के दिन बीत गये। दारोग़ा ने बड़ी ही चिन्ता से छुट्टी के ये कई दिन बिताये। उनके मन में भाँति भाँति की चिन्ता हो रही थी, "पीछे साक्षियों को कोई मिला न ले, धर्मपुर का कोई आदमी गवाहों को बिगाड़ न दे, या रमानाथ का पवित्र आचरण और निर्दोषिता की आलोचना करके गवाहों का मन आप ही आप फिर न जाय," इस प्रकार की चिन्ता से दारोग़ा दिन रात उद्विग्न रहा करता था। कभी यह सोच कर उसे हर्ष भी होता था, कि जिस मछली को मैंने जाल में फँसाया है वह हाथ आ गई तो एक महीने के भीतर ही मेरी तरक्की होगी। परन्तु जब से उपाध्याय के ऊपर यह मुक़दमा चला है तब से उनका यश और भी चारों ओर फैलने लगा। इससे दारोग़ा का मनोरथ सफल होना असंभव सा प्रतीत होता है।

छुट्टी के दिनों में इस मुक़दमे को लेकर साहब की कोठी पर तरह तरह की बातें चलती थीं। तारिणी बाबू को बर्दवान के बहुतेरे हाकिम हुक्काम जानते थे। तारिणी बाबू की हत्या से सभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्षुब्ध थे। सब को इस बात का सोच था, कि हम सबों के रहते यह अनर्थ क्योंकर हुआ। पुलिस के अफ़सर सुपरिन्टेन्डेन्ट तीव्र स्वर में कहते थे, "अगर वह हत्याकारी इस मुक़दमे में छुटकारा पा गया, तो इस देश के मनुष्य का धन-जीवन निरापद नहीं रह सकेगा।"

बर्दवान के घर घर गली गली में इस हत्या की बात लेकर विशेष आन्दोलन हुआ। तारिणी बाबू की इस प्रकार मृत्यु होने की बात सुन कर पहले सब लोग विस्मित और क्रुद्ध हुए थे, पीछे क्रम क्रम से जब असल बात ज़ाहिर होने लगी, कामिनीकान्त बाबू का नाम लोग लेने लगे, दारोग़ा की चालाकी खुल पड़ी, तब दारोग़ा को बाज़ार में मुँह दिखाना कठिन हो गया। वे जब तब साहब की कोठी पर जाकर ही अपना मुँह दिखाते थे।

देखते ही देखते छुट्टी के दिन पूरे हो गये। आज मैजिस्ट्रेट साहब इजलास करने बैठे हैं। वे ख़ुद इस मुक़दमे का विचार करेंगे। आज फ़ौजदारी कचहरी लोगों से भरी है। शहर से लेकर देहात तक के कितने ही भले लोग बर्दवान के भूतपूर्व नाज़िर की मृत्यु का मुक़द्दमा देखने आये हैं। शहर के लोग कितने ही बरामदे में और कितने ही मैदान में चारों ओर खड़े हैं। मैजिस्ट्रेट साहब गम्भीर भाव धारण किये बैठे हैं। उनके बग़ल में सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब बैठे हैं। वे मुक़द्दमा चलाने आये हैं। कोट बाबू कान्सटेब्ल के साथ खड़े हैं। कचहरी के अनेक कर्मचारी आज अपना काम छोड़ कर यह संगीन मुक़द्दमा देखने आये हैं। वकील मुख़्तार सबके सब मौजूद हैं। मैजिस्ट्रेट साहब की आज्ञा के अनुसार सर-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कारी वकील इस मुक़द्दमे में बहस करने के लिए उपस्थित हैं। उनकी विज्ञता भरी आकृति, और प्रकृति, उनका तेजःपूर्ण सूक्ष्म शरीर और सूक्ष्मबुद्धि बर्दवान में किसी से छिपी नहीं है।

उनके पास ही स्थूलकाय गौरीप्रसन्न बाबू बैठे हैं। बर्दवान में गौरीप्रसन्न बाबू के बराबर, यशस्वी, विचारवान् और दीर्घदर्शी दूसरा कौन है। लक्ष्मी उनके घर में और सरस्वती उनके कण्ठ में निवास करती है। मान, मर्यादा, विद्या, धन और गौरव सभी विषयों में गौरीप्रसन्न बाबू भाग्यवान् हैं। गौरी-प्रसन्न बाबू के सदृश भाग्यवान् होने का अभिलाष सभी वकीलों को रहता है। गौरीप्रसन्न बाबू को वकील नियुक्त करना सभी धनी ज़मींदार चाहते हैं। इससे उनकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी है। उनकी स्पर्द्धा करने वाला इस समय बर्दवान में कोई नहीं।

इनके पास क्षीण-शरीर, अत्यन्त बुद्धिमान्, पद्मलोचन बाबू बैठे हैं। कार्यदक्षता में, योग्यता में, साहबों के निकट मान-मर्यादा में पद्मलोचन बाबू का नाम निकला हुआ है। सरकार में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा है। बर्दवान के सभी सज्जन उनकी आज्ञा को सिर चढ़ाते हैं। देहात के लोग उनकी कृपा के भिक्षुक बने रहते हैं।

इनके बग़ल में अत्यन्त चतुर, निष्कपट, मधुरभाषी श्यामलाल बाबू बैठे हैं। ये भी सब के प्रिय हैं, सब लोग इनका आदर करते हैं, हृदय से चाहते हैं। उनके प्रियभाषण से परितुष्ट होते हैं और उनके समीचीन परामर्श से विशेष लाभ उठाते हैं।

इस प्रकार उत्तरोत्तर अनेक मान्य गण्य वकील मुख़्तार बैठे हैं। उनका नाम हम कहाँ तक गिनावें? पद्मसरोवर की भाँति आज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न्यायालय शोभा पा रहा है। शमला पहने वकील महाशयगण प्रस्फुटित कमल की भाँति शोभायमान हो रहे हैं।

रमानाथ का दीर्घजटामण्डित मस्तक, लम्बी दाढ़ी और प्रभावशाली विशाल नेत्र देख कर लोग और भी चकित हुए। जिनकी शास्त्र-शिक्षा असाधारण है, वेद वेदान्त जिनके कण्ठस्थ हैं, सरस्वती जिनकी जीभ पर नाचती रहती है, जो बहुत दिनों तक काशी, प्रयाग और वृन्दावन आदि पवित्र तीर्थों का सेवन कर चुके हैं। जो पचास वर्ष की उम्र में भी युवा के सदृश बलिष्ठ हैं, जो अपने जीवन के अवशिष्ट समय को धर्मशिक्षा में व्यतीत कर रहे हैं, क्या यही प्राचीन ऋषितुल्य महापुरुष तारिणी बाबू के हत्याकारी हैं? क्या इन्हीं के प्रशस्त ललाट में हत्या का कलङ्क अङ्कित है?

बड़े बड़े वकील सब वादी के पक्ष में हैं। प्रतिवादी के पक्ष में वही छोटा सा क्षीणकाय कमज़ोर मुख़्तार है। उसने मैजिस्ट्रेट का मनोगत भाव देख कर बड़े बड़े कष्ट से एक दरख़्वास्त लिख कर दाख़िल की।

दरख़्वास्त यही कि, मैजिस्ट्रेट साहब स्वयं तारिणी बाबू को जानते थे, और सनातनपुर के ज़मींदार कामिनीकान्त बाबू को भी जानते हैं। तारिणी बाबू की विधवा और कामिनीकान्त बाबू इस मुक़द्दमे में असल मुद्दई हैं। इसलिए मैजिस्ट्रेट साहब ख़ुद इस मुक़द्दमे का विचार न करके विचार का भार दूसरे विचारक के हाथ में दें। अगर आप इसे मंज़ूर न करें तो अभियुक्त को मुहलत दें—वह इस विषय का हाईकोर्ट में निवेदन करना चाहता है।

दरख़्वास्त सुन कर मैजिस्ट्रेट साहब का मिज़ाज गरम हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुपरिन्टेन्डेन्ट सूखी हँसी हँसे। दारोग़ा भय से काँपने लगे, मुक़दमा मुलतवी होने या दूसरे के हाथ में जाने से दारोग़ा की बनी बनाई बात बिगड़ जायगी। इधर दुर्बल मुख़्तार अपने हानि-लाभ की कुछ परवा न करके क़ानून की किताब खोले बैठा है।

क़ानून के नियम से पाबन्द होकर मैजिस्ट्रेट साहब ने अभियुक्त से पूछा, "यह मुक़दमा बहुत भारी है, इसलिए मैंने यह मुक़दमा अपने हाथ में लिया है, और मैं इसका विचार करना चाहता हूँ। इसमें तुम्हें क्या उज्र है।

रमानाथ ने बड़ी धीरता से उत्तर दिया, "आप न्यायाधीश हैं, विचार करना आप का नित्यकर्म्म है। यथार्थ न्याय में मुझे भय नहीं। आपही विचार करें।

सुन कर रमानाथ के मुख़्तार अवाक् हो रहे। मैजिस्ट्रेट से डर गये। उन्हें मुद्दई के गवाहों से जिरह करने का भी साहस न हुआ। केवल कौन साक्षी क्या बोलता है, वे एक तरफ़ बैठ कर लिखने लगे। विचार आरम्भ हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पच्चीसवाँ परिच्छेद

पहला गवाह सनातनपुर का एक डाक्टर था। उसने इज़हार दिया, "मैं तारिणी बाबू की बीमारी की हालत में कभी कभी जाकर उन्हें देखता था और दवाई बता दिया करता था। उन्हें कोई सांघातिक रोग न था। केवल वायुकृत पीड़ा और ज्वर था। उनकी उम्र क़रीब ५५ वर्ष की हुई थी। इस उम्र में ऐसे साधारण रोग से मृत्यु होना असम्भव है। मैं उनकी मृत्यु के एक दिन पूर्व सन्ध्या समय उनको देखने गया था। ज्वर का वेग कुछ बढ़ा न था, मृत्यु का कोई लक्षण मैंने न देखा। दूसरे दिन मृत्यु की बात सुन कर मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। मैंने उनकी लाश देखना चाहा था, परन्तु सुना कि रमानाथ ने रातों रात लाश को जला डाला।"

तारिणी बाबू के साधारण रोग और अचानक मृत्यु होने के सम्बन्ध में उनके घर के दो तीन व्यक्तियों ने कुछ सबूत दिये।

इसके बाद सनातनपुर के स्कूल के एक शिक्षक का इज़हार हुआ। उसने कहा—"मृत्यु के पूर्व सन्ध्या समय तारिणी बाबू ने पहला वसीयतनामा रद करके एक नया वसीयतनामा लिखा। इस विल के अनुसार सारी सम्पत्ति उन्होंने अपनी भतीजी सुमित्रा और सुधा को दे डाली। उनकी मृत्यु होने के कई दिन पहले ही से रमानाथ उपाध्याय ऐसा विल लिखने के लिए उन्हें दिनरात दिक़ किया करते थे और किसी किसी के आगे कहते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थे कि वृद्ध अब अधिक दिन न जियेंगे। जिस समय नया विल लिखा गया, उस समय रमानाथ उपस्थित थे और वे उस विल के एक साक्षी हैं। इसके उपरान्त रमानाथ उसी घर में रहे और कोई वहाँ न रहा। उसी रात को तारिणी बाबू की एकाएक मृत्यु हो गई।

तारिणी बाबू के नौकरों ने कहा—"तारिणी बाबू नींद से सोये थे। रमानाथ उसी घर में थे। आधी रात को एकाएक उनकी मृत्यु का हल्ला उठा। हम सबों ने जाकर देखा, बाबू हाथ पैर फेंक रहे थे, मुँह से झाग निकल रहे थे, विष खाकर मरने से अन्तकाल में जैसी अवस्था होती है, ठीक वैसी ही अवस्था थी। हम सबों ने यह बात स्वामिनी से कही थी, और अन्यान्य लोगों से भी कहना चाहा था, परन्तु रमानाथ ने हम सबको रोक रक्खा और उसी रात में लाश को जला दिया।

सुभद्रा के बाप के घर की एक पुरानी दासी ने इज़हार दिया—"रमानाथ तारिणी बाबू का इलाज करते थे, वही दवा खिलाते थे, जिस रात की यह घटना है, रमानाथ ने मुझे बुला कर किसी पौधे की जड़ पीस कर लाने को कहा, मैंने पीस कर ला दिया। उससे दो छटांक रस निकला होगा। उस जड़ी को देखने से जान पड़ता था, जैसे वह विषकचू की जड़ हो। मैं एक कटोरे में रस निचोड़ कर रमानाथ के पास रख कर चली गई। वह रस उन्हें किस वक्त दिया गया, यह मैंने न देखा। बाबू की मृत्यु होने पर मेरे मन में सन्देह हुआ, इसलिए वह कटोरा और जड़ जो उसमें बच रही थी, मैंने दारोग़ा जी को दी। रमानाथ अनेक प्रकार की जड़ी बूटी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जानते हैं, रोगी को चंगा कर सकते हैं, और दवा खिला कर आदमी को मारना भी जानते हैं। उनके पास औषध के लिए बहुत लोग आते हैं।

वह कटोरा और जड़ पाकर जाँच के लिए उसे डाक्टर बाबू के पास भेजने की बात दारोग़ा और दो कान्सटेबल ने क़बूल की। इसके बाद डाक्टर ने कहा—"मैंने उस कटोरे के रस की जाँच की थी। वह शरीर के लिए विशेष हानिकारी वस्तु है। यह रस अधिक परिमाण से पीने से मनुष्य की मृत्यु तक हो सकती है।"

अन्तिम साक्षी सनातनपुर के एक रईस थे। उन्होंने बयान किया, "तारिणी बाबू के दाहकर्म्म के समय मैं था। रमानाथ और हेमबाबू धीरे धीरे बातचीत कर रहे थे। हेमबाबू को यह कहते मैंने सुना था कि "आज कण्टकोद्धार हुआ। सुमित्रा और सुधा की पैतृक सम्पत्ति फिर उन्हें मिल गई।" इस पर रमानाथ ने कहा—"विषकच्चू एक विलक्षण औषध है। उसके प्रयोग से अनेक प्रकार के कार्य सिद्ध हो सकते हैं।"

मुद्दई की तरफ़ का इज़हार ख़तम हुआ। पाँच बज गये। संध्या का समय हो चला। मैजिस्ट्रेट साहब मुक़दमा करके दूसरे दिन मुद्दालेह का इज़हार लेंगे। आज इस मुक़दमे को मुलतवी रख इजलास से उठ गये। मुद्दालेह को फिर हाजत में रहना पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छब्बीसवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन ग्यारह बजे के समय फिर कचहरी लोगों से खचाखच भर गई। फिर वकील मुख़्तार उपस्थित हुए; अभियुक्त रमानाथ कठघरे में ला खड़े किये गये। मैजिस्ट्रेट साहब विचारासन पर बैठे हैं।

पेशकार ने एक चार्जसीट दिया। मैजिस्ट्रेट फ़ौजदारी क़ानून की पुस्तक उलट पलट कर देख रहे हैं और हाथ में क़लम लेकर मन में कुछ सोच रहे हैं।

इसी समय कचहरी के बाहर कुछ कोलाहल होते सुनाई दिया। एक जोड़ी गाड़ी कचहरी के सामने आ खड़ी हुई। गाड़ी से उतर कर दो आदमी बड़े वेग से न्यायालय में प्रविष्ट हुए।

उनमें एक व्यक्ति को बर्दवान के वकील पहचानते थे। वे हाईकोर्ट के परम यशस्वी वकील चन्द्रनाथ बाबू थे। मैजिस्ट्रेट ने क़लम रख कर एक बार उनकी ओर देखा। मन में कहा—"यह आफ़त फिर कहाँ से आई! वकील के साथ हेमचन्द्र था। रमानाथ उन दोनों को देख आश्वस्त हुए।"

चन्द्रनाथ ने साहब को जताया, "मैं अभियुक्त की ओर से कुछ अर्ज़ करने आया हूँ। मुद्दई के गवाहों से जिरह (क्रूट प्रश्न) नहीं किया गया है। अगर अदालत से आज्ञा मिले तो मैं उन साक्षियों को बुला कर उनसे कुछ प्रश्न करूँ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैजिस्ट्रेट—"मुद्दई की तरफ़ के गवाह कल इज़हार देकर चले गये। उन सबों को फिर बुला कर इस मुक़दमे में अधिक समय नष्ट करने की ज़रूरत नहीं। यह मुक़दमा दौरा सिपुर्द होगा। आपकी इच्छा हो तो हाईकोर्ट में विचार के समय गवाहों से जिरह कर सकते हैं।"

चन्द्रनाथ—"गवाह अभी नहीं गये हैं। इस अदालत के पास ही खड़े हैं। यदि आज्ञा हो, तो मैं अभी उनको बुला सकता हूँ। जिरह करने में मुझे एक घंटे से अधिक समय न लगेगा। ऐसे गुरुतर अपराध में दौरा सिपुर्द होने के पूर्व आसामी इस साधारण अनुग्रह के लिए प्रार्थना करता है। जिरह के बाद अगर अदालत इस मुक़दमे को दौरा भेजना आवश्यक समझे तो उस विषय में अदालत को पूरा अधिकार है।

अदालत ने लाचार होकर आज्ञा दी। मुद्दई के गवाह अभी तक गये न थे, कचहरी के बाहर सनातनपुर के ज़मींदार कामिनी बाबू के साथ चिकनी चुपड़ी बातें कर रहे थे और तम्बाकू पी रहे थे। वे सब फिर बुलाये गये।

प्रथम साक्षी डाक्टर बाबू से जिरह करने पर ज़ाहिर हुआ कि वे डाक्टर नहीं हैं। उन्होंने कभी डाक्टरी नहीं पढ़ी, और न कभी कोई परीक्षा दी। एक अस्पताल में कई मास तक कम्पाउंडर थे। पीछे ज़्यादा नशाख़ोरी के सबब उनसे वह काम ले लिया गया। अब कुछ दिन से सनातनपुर में रहते हैं। साधारण लोगों को ज्वर होने पर बाज़ार के दर से डेवढ़े दर पर कुनैन बेचते हैं और कामिनीकान्त बाबू की मुसाहबी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करते हैं। किसी जलसे में जब वेश्या नचाने की ज़रूरत होती है तो यही कलकत्ते जाकर उसका प्रबन्ध करते हैं। डाक्टर बाबू ने यह भी स्वीकार किया कि, तारिणी बाबू बहुत दिनों से रोगग्रस्त थे। उनकी मृत्यु में सन्देह का कोई कारण न था, होता तो मैं थाने में अवश्य ख़बर देता। इसके बाद वसीयतनामा के गवाहों से जिरह किया गया। उन्होंने जवाब दिया, "हम सनातनपुर में रहते हैं, कामिनीकान्त बाबू के आश्रित हैं। धर्मपुर में हमारा जाना आना बहुत कम होता है। केवल बिल लिखने के दिन गये थे। रमानाथ को तारिणी बाबू से नया बिल करने के लिए अनुरोध करते हमने नहीं देखा। यह बात सनातनपुर के कई एक आदमियों के मुँह से सुन कर जानी। इस विषय में इससे अधिक हम कुछ नहीं जानते।

जिस दासी ने विषकच्चू की जड़ पीसने का प्रमाण दिया था, जिरह करने पर उसने कहा—"मैं तारिणी बाबू के घर की दासी नहीं हूँ, न उनके यहां मैंने कभी दासी का काम किया। मैं सुभद्रा के बाप के घर की लौंड़ा हूँ। तारिणी बाबू की मृत्यु के दिन मैं वहाँ गई थी; और उस रात को वहीं रह गई। आधी रात को दवा पीसने की आवश्यकता होने पर उपाध्यायजी ने मुझी को पुकार कर पीसने कहा था। क्यों न कहते? मैं बहुत विश्वास-पात्री पुरानी दासी हूँ, जिस कटोरे में उसका रस निचोड़ा गया था, वह कहाँ था। यह मैं नहीं जानती, विषकच्चू की जड़ थी या किसी दूसरे पौधे की, यह भी मैं ठीक ठीक नहीं बता सकती। दारोगाजी ने जब कटोरा और विषकच्चू को खोज कर बाहर किया था तब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने सिर्फ़ उसकी शिनाख़्त की थी। कचहरी में जो कटोरा है, यह वही है या दूसरा, मैं ठीक ठीक नहीं कह सकती।"

इसके बाद दारोग़ा से पूछा गया। उनका जवाब सुनने के लिए कचहरी में लोग उमड़ पड़े। जिरह में उन्होंने बयान किया—"मेरा घर बाकरगंज ज़िले के भीतर एक गाँव में है। मैं पहले बाकरगंज के एक दारोग़ा का नौकर था। जब उनकी तबदीली बाँकुड़ा ज़िले से हुई तो मैं भी उनके साथ बाँकुड़ा गया और वहाँ मैं उनकी नौकरी छोड़ कर कुली का कन्ट्रेक्टर हुआ। उसमें मुझे विशेष लाभ हुआ। किन्तु एक विवाहिता स्त्री को बहका कर कुली करके दूसरी जगह रवाना करते समय मैं पकड़ा गया और इस विषय का मुझ पर मुक़द्दमा चलाया गया। मुक़द्दमे में मैंने रिहाई पाई। तब मैं कुली की ठेकेदारी का काम छोड़ कर पुलिस में बहुत कोशिश पैरवी करने पर कान्सटेब्ल नियत हुआ। तब से मैं बराबर इस महकमे में रह कर बड़ी सचाई और ईमानदारी के साथ पुलिस का काम कर रहा हूँ। इस मुक़द्दमे की जाँच मैंने सनातनपुर में रह कर ही की है। वहाँ के प्रसिद्ध ज़मींदार कामिनी बाबू ने गवाहों को जुटा कर इस मुक़द्दमे में बड़ी मदद की है। विषकच्चू की जड़ तारिणी बाबू के घर में ही पाई गई थी, जिस कटोरे में उसका रस निचोड़ा गया था वह भी वहीं पड़ा था। ये दोनों चीज़ें दासी के द्वारा बरामद हुईं या किसी दूसरे शख़्स के द्वारा, यह मुझे स्मरण नहीं है। मैंने बाकरगंज के दारोग़ा के पास रह कर दस वर्ष तक भाण्डारी का काम किया। उतने दिन वहाँ की पुलिस की कारवाई देख कर मैं बहुत कुछ तजरिबा हासिल कर चुका हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आख़िरी गवाह जिन्होंने लाश जलाते समय रमानाथ और हेमचन्द्र की बातचीत सुनी थी, वे यह भी न बता सके कि धर्मपुर गाँव कैसा है, मरघट कहाँ है, तारिणी बाबू के घर से कितनी दूर के फ़ासले पर उनकी दाह-क्रिया हुई। और भी जिरह से ज़ाहर हुआ कि वे सनातनपुर के रईस न होकर कामिनीबाबू के कलकत्ते वाले बाग़ के एक नौकर हैं।

इस प्रकार सब बात ज़ाहिर होने पर मैजिस्ट्रेट साहब ने क़लम रख कर दाढ़ी खुजलाना आरम्भ किया। वे स्वभाव के कुछ तीव्र थे, जल्दबाज़ थे और विशेष कालज्ञ न थे, तो भी बुद्धिहीन न थे, हृदय-शून्य भी न थे। मुक़दमे की ऐसी अवस्था देख कर चिन्तित हुए। अभियुक्त की चिन्तारहित शान्त मूर्ति की ओर बार बार देखने लगे। मैजिस्ट्रेट साहब के मन का भाव बदला हुआ सा देख कर दारोग़ा का मुँह सूख गया। वे बरामदे में जाकर हट कर बैठे, उनका सारा शरीर पसीने से भीग गया। बहादुरसिंह कान्सटेब्ल को पोखर से एक घड़ा जल लाने का संकेत किया।

चन्द्रनाथ बाबू ने अदालत को संबोधन करके कहा—"अभियुक्त निरपराधी है, अत्यन्त धार्म्मिक और विद्वान् है। दुष्ट दुराचारी लोगों के मिथ्या प्रपञ्च-जाल में पड़ कर यह दारुण दुःख और कलङ्क के भार से मरा जा रहा है। अदालत हुक्म दे तो कई एक सफ़ाई-गवाहों के द्वारा मैं इस बात को सम्पूर्ण रूप से प्रमाणित कर दूँ।"

मैजिस्ट्रेट साहब तब भी चिन्ता के साथ साथ दाढ़ी खुजला रहे थे।

चन्द्रनाथ ने फिर कहा—"सभी गवाह कामिनीकान्त बाबू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के अनुगत हैं। उन्हीं की प्रेरणा से यह मुक़दमा रचा गया है। विषकच्चू की बात बिलकुल झूँठ है। बाकरगंजवासी दारोग़ा ने अपनी ओर से यह झूँठी बात बना कर अभियुक्त को दोषी साबित कराना चाहा है। इस विषय में अदालत को कुछ सन्देह हो तो आज्ञा पाने से मैं कई एक सफ़ाई के गवाहों से अदालत को विश्वास दिला सकता हूँ।

मैजिस्ट्रेट ने दाढ़ी खुजलाते हुए उत्तर दिया—"मुद्दई का सुबूत अगर कामिल न हो तो मुद्दालेह के साच्चा को बुलाने की ज़रूरत क्या ?"

चन्द्रनाथ ने कहा—"सभी मुक़दमों में ज़रूरत नहीं होती, किन्तु इस मुक़दमे में ज़रूरत है। इस मुक़दमे में एक धर्मपरायण, सच्चरित्र सज्जन व्यक्ति के ऊपर एक मिथ्या अपराध लगाया गया है। बुढ़ापे में रोग से जिस मनुष्य की मृत्यु हुई, उसे विष खिला कर मारने की एक अद्भुत और नई बात गढ़ी गई है। विषकच्चू क्या वस्तु है, यह बहुत लोग जानते तक भी नहीं। पुलिस ने वही विषकच्चू की जड़ लाकर अदालत में पेश की है। सिल लोढ़े तक की परीक्षा डाक्टर के द्वारा कराई गई। यदि यह भयंकर अपराध सत्य है तो आसामी को प्राणदण्ड देने की व्यवस्था की जाय। अगर झूँठ है तो जिस नृशंस मिथ्यावादी दुष्ट ने ऐसा झूँठा मुक़दमा खड़ा किया है, उसको उचित दण्ड देना आपके हाथ में है। मैं जहाँ तक जानता हूँ, ऐसा नृशंस, कपटाचारी पुलिसकर्मचारी इस देश में आज कल अधिक नहीं हैं। अगर हों, और उनकी क्रूरता तथा अन्याय प्रमाणित हो तो उन्हें दूर कर प्रजाओं का पालन करना राजा का उचित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धर्म है। आप केवल विचारकर्ता ही नहीं हैं, इस ज़िले के शासन-कर्ता भी हैं। शासन का भार आपके ऊपर है। मैं आपके सुविचार तथा सुन्दर शासन की सहायता के लिए और अपने स्वदेशवासी भाइयों के मङ्गल के लिए आपसे अनुरोध करता हूँ, मुझे दो घंटे मात्र समय दें। मैं जानता हूँ, अदालत का समय मूल्यवान् है, किन्तु दो घंटे के परिश्रम से मुझे आशा है कि आपके मन का सब सन्देह दूर हो जायगा। आप भली भाँति जान सकेंगे कि यह मुक़द्दमा सच है या बिलकुल झूँठ। यह बात आप के मन में जँच जाने से आप भी अपने कर्तव्य का उचित रीति से पालन करके सन्तोष लाभ करेंगे। इसके अनन्तर आप जो आज्ञा देंगे उसे आसामी शिरोधार्य करेगा। मैं अपने साक्षियों को अपने साथ लाया हूँ। बाहर खड़े हैं। हुक्म हो तो उन्हें पुकारूँ।"

मैजिस्ट्रेट ने सफ़ाई के गवाहों के बुलाने का हुक्म दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सत्ताइसवाँ परिच्छेद

सिनीकान्त के सदृश ज़मींदार मुक़दमा देखने की इच्छा से कचहरी नहीं जाते। किन्तु आज दुष्ट जटाधारी उपाध्याय दौरा-सिपुर्द होगा, आज वह एक पराक्रमी ज़मींदार का महत्त्व जान सकेगा, इस उल्लास से कामिनी बाबू अपने वकील मुख़्तारों के साथ बैठ कर इधर उधर की बातें कर रहे थे और मन ही मन उमँग रहे थे। जब चन्द्रनाथ बाबू ने हेमचन्द्र को लेकर कचहरी में प्रवेश किया, तब कामिनी बाबू की छाती धड़क उठी। चन्द्रनाथ बाबू की जिरह से जब असली बात बाहिर होने लगी, तब कामिनी बाबू के होश उड़ गये। उनका सिर घूमने लगा। वे बार बार बाहर की ओर देखने लगे। सुमति बाबू की बर्दवान आने की बात थी। इस विपत्ति के समय वे कहाँ रह गये? वे कलकत्ते के एक नामी अटर्नी हैं। देहाती लोगों की मोटी बुद्धि और खोटी समझ के मुताबिक़ जैसा वाहियात मुक़दमा दायर हुआ है, उसमें वे विशेष हस्तक्षेप करना नहीं चाहते। इसके सिवा हाईकोर्ट के चन्द्रनाथ बाबू जब इस मुक़दमे में हैं, तब इस मुक़दमे का आख़िरी नतीजा क्या होगा, यह वे पहले ही समझ गये थे। कपट-जाल से भरी हुई नाव को डूबते देख सुमति बाबू उसे यथा-शक्ति पैर से ढकेल कर शीघ्र डुबो देना ही अपना कर्तव्य समझते थे। उन्होंने हेमचन्द्र और चन्द्रनाथ बाबू के सच्चे मित्र होकर उपाध्यायजी की सफ़ाई गवाही के अनेक प्रबन्ध कर दिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामिनी बाबू को तार के ज़रिए ख़बर भेज दी—"एक आवश्यक कार्य में उलझ जाने के कारण मैं बर्दवान न आ सका। आशा करता हूँ, आपका काम सिद्ध होगा।"

सफ़ाई के गवाहों का इज़हार होने लगा।

अभियुक्त का पहला साक्षी उपस्थित हुआ। आप तारिणी बाबू के गुरु, सनातनपुर के निवासी, एक सात्त्विक विद्वान् ब्राह्मण थे। विद्यार्थियों को अपने घर पर व्याकरण और धर्मशास्त्र पढ़ाते थे। कभी कभी वहाँ के ज़मींदारों के यहाँ शास्त्रविहित कर्म्म के सम्पादनार्थ जाते थे। बस्ती भर के लोग उन्हें आदर की दृष्टि से देखते थे और उनका सत्कार करते थे। सत्तर वर्ष की उम्र हो गई, पर कभी उनको अदालत देखने का अवसर प्राप्त न हुआ। आज सुमित्रा और योगमाया के क्रन्दन से द्रवीभूत होकर वे कचहरी आने को बाध्य हुए हैं।

उन्होंने बयान किया—"रमानाथ कई महीनों से सनातनपुर में टिके हैं। सनातनपुर के बाबू ने रुष्ट होकर उनको वहाँ से निकाल देना चाहा था, बल्कि अपने नौकरों को हुक्म भी दिया था कि वे उनको वहाँ से निकाल बाहर कर दें। इस पर रमानाथ ने बाबू साहब को विभीषिका दिखाई। कामिनी बाबू ने भयभीत हो अपने कई एक विश्वासी इष्ट बन्धुओं को बुला शपथ खाकर कहा—'अगर मैंने रमानाथ को मिट्टी में न मिलाया तो मैं घर छोड़ संन्यासी हो जाऊँगा। तारिणी बाबू मृत्यु के कई मास पूर्व ही से अपनी नई गृहिणी के साथ अधिक बातचीत न करते थे। उसकी बोल चाल उन्हें अच्छी न लगती थी। वे केवल अपनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वर्गीया सहधर्म्मिणी की बात सोचते थे, सुमित्रा और सुधा की बात सोचते थे और आँखों के आँसू पोंछते थे। तारिणी बाबू ने मुझे बुला कर कई दफ़े यह बात कही थी कि जो कुछ मेरे पास सम्पत्ति है वह मैं अपनी भतीजियों को ही दूँगा, पत्नी को न दूँगा।' यह बात सुनकर हेमचन्द्र तुरन्त कह बैठते थे, 'आपकी स्त्री के रहते हम सब आपकी सम्पत्ति न लेंगे।' शिवचन्द्र मैमनसिंह जाने के पूर्व तारिणी बाबू से कह गये—'आप अपना धन मेरी बचिया सास को ही दीजिए, हम न लेंगे।' तथापि वृद्ध का मन राज़ी न हुआ। मृत्यु के एक दिन पूर्व साँझ को नया विल लिख कर उन्होंने सुमित्रा और सुधा को अपनी सारी सम्पत्ति दे दी। रमानाथ और हम उस विल के साक्षी हैं। तारिणी बाबू की मृत्यु होने के अनन्तर उनकी विधवा सनातनपुर गई और वहीं रहने लगी। जब सुभद्रा ने स्वामी की मृत्यु के सम्बन्ध में दरख़्वास्त दी थी, तब वह कामिनीकान्त बाबू के घर में थी।"

सनातनपुर की एक दासी ने जो लड़कपन से योगमाया की सेवा टहल करती थी और उसके शील स्वभाव से भली भाँति परिचित थी, हाज़िर होकर इज़हार दिया—"मैं चालीस वर्ष से सनातनपुर के बाबू की हवेली में रह कर काम करती हूँ। तीस वर्ष पूर्व कमलाकान्त नाम का एक नाबालिग़ उस हवेली में रहता था। कामिनी बाबू के साथ एक दफ़े बड़ा भारी दङ्गा हुआ था उसी में वह मारा गया। यह बहुत दिन की बात हुई। इसी से प्रायः सब लोग इस बात को अब भूल गये हैं। किन्तु उपाध्यायजी ने इस बात का ज़िक्र करके जो कामिनी बाबू की जोरू को डर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिखलाया था, वह मैंने अपने कान से सुना था। तब से कामिनी बाबू डर कर उनकी ख़ातिर बात करने लगे पर उनके मन में कुछ कपट था। वे शीघ्र ही कलकत्ते चले गये।"

इसके बाद बिलासपुर के धनञ्जय बाबू हाज़िर हुए। उनको देखकर कामिनी बाबू चौंक उठे। धनञ्जय बाबू ने कहा—"तारिणी बाबू मेरे ससुर होते थे। उनकी मृत्यु के कई मास पूर्व मैं एक बार उनको देखने गया था। उनकी पहली स्त्री कन्या के शोक और रोग से मर गई। उनकी दूसरी स्त्री बड़ी बोलनेवाली और उद्धतस्वभाव की है। तारिणी बाबू को दिक् करके उसने उनसे वसीयतनामा लिख कर सारी सम्पत्ति अपने हाथ में करली। तारिणी बाबू के मरने पर एक दिन कामिनीकान्त कलकत्ते सुमति बाबू की भेट करने आये थे। उस दिन मैं भी वहीं था। कामिनी बाबू ने कहा—"कहाँ का भूला भटका रमानाथ नाम का एक जटाधारी पण्डित मेरे यहाँ आया, मैंने उसको रहने की जगह दी। अब वह एक गये गुजरे फ़ौजदारी मुक़दमे की बात बता कर मुझी को धमकाने लगा है और उसने तारिणी बाबू से नया वसीयतनामा लिखा कर उनकी सारी धन-सम्पत्ति उनकी भतीजियों को दिला दी है। इसलिए मैंने तारिणी बाबू की विधवा के द्वारा रमानाथ के ऊपर एक ख़ून का मुक़दमा दायर करा दिया है।"

उन्होंने यह भी कहा कि—"मैं कुछ दिन पूर्व ससुर की सम्पत्ति पाने का लोभ रखता था, पर अब नहीं। मैं अपनी बेवकूफ़ी से बहुत धन बरबाद का चुका हूँ। पतिव्रता, सती, साध्वी स्त्री को भी खो चुका हूँ। उस समय हेमबाबू, जो मेरे साले होते हैं, मुझे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुत समझाते थे और हृदय से मेरी भलाई चाहते थे। उनकी स्त्री मेरे घर आकर मेरा बहुत कुछ उपकार किया था और अच्छी लाह दी थी, परन्तु मैंने अपने दुर्भाग्य-दोष से उस परामर्श को वीकार न किया। हेमचन्द्र और शिवचन्द्र को तारिणी बाबू की सम्पत्ति मिली है—यह सुनकर मैं प्रसन्न हुआ। मुझे अब इस संसार में अधिक दिन रहना नहीं है, और न कोई रियासत हासिल करके बरबाद करने ही की इच्छा है। बुरे लोगों की संगति में रह कर मैंने बाल्यकाल से ही मद्यपान करना सीखा है, इसीसे मेरी शीघ्र मृत्यु होगी और मेरे पाप का प्रायश्चित्त होगा।"

धनञ्जय बाबू की इस प्रकार आत्मग्लानि दोष और स्वीकार की बात सुन कर सभी के नेत्रों में जल भर आया। मैजिस्ट्रेट साहब का हृदय भी दया से द्रवित हुआ।

इसके बाद मुन्नाजान रंडी हाज़िर की गई। उसके देखते ही कामिनी बाबू के प्राण सूख गये। उसका इज़हार सुनने के लिए फिर कचहरी में लोगों की भीड़ लग गई। उसने बयान किया—"मैं कलकत्ते की एक रंडी हूँ। कामिनी बाबू रंडी का नाच देखना बहुत पसन्द करते हैं। इसलिए वे बराबर मुझे बुलाया करते हैं और मैं भी उनके यहाँ नाचने जाती हूँ। हाल में उन्होंने एक दिन कलकत्तेवाले बाग़ में मुझको बुलाया था, सुमति बाबू भी वहाँ थे।" इसके बाद कामिनीबाबू ने सुमति बाबू के साथ जो सब बात की थी, मुन्नाजान ने कह सुनाई। सुन कर सब लोग निस्तब्ध और अवाक् हो रहे।

मैजिस्ट्रेट साहब दाँतों से उँगली काटने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामिनी बाबू के वकील ने मुन्नाजान से पूछा—"तुम मुसलमानिनी हो, कामिनी बाबू ने तुम्हारे हाथ से शराब ले कर पी थी, तुमने यह बात कही है न ?"

मुन्नाजान—"हाँ, कही है ।"

वकील—"कामिनी बाबू जाति- सुधारक सभा के अध्यक्ष हैं, यह तो तुम जानती हो ?"

मुन्नाजान—"जानती हूँ ?"

वकील—"कामिनी बाबू ने धर्मपुर के हेम और शिवचन्द्र को समाज से अलग कर दिया है, यह भी तो तुम्हें मालूम होगा ?"

मुन्नाजान—"मालूम है ।"

वकील—"कामिनी बाबू जातिरक्षा के सम्बन्ध में यहाँ तक उत्साही होकर तुम्हारे हाथ का मद्य कैसे पी सकते हैं ?"

मुन्नाजान—"मैंने भी यह बात बाबू साहब से पूछी थी ।"

वकील—"बाबू साहब ने क्या जवाब दिया ?"

मुन्नाजान—"उन्होंने कहा, छिप कर कोई काम करने से जाति नहीं जाती । क्या आप यह नहीं जानते ?"

वकील महाशय इस पर कुछ जिरह न करके चुपचाप बैठ रहे ।

आख़िरी गवाह मैमनसिंह के ज्वाइन्ट मैजिस्ट्रेट शिवचन्द्र थे । उनको देखकर चन्द्रनाथ और हेमचन्द्र विस्मित हुए । शिव बाबू को किसने बुलाया ? वे कब मैमनसिंह से आये ?

हेमचन्द्र को तारिणी बाबू का धन लेने की बड़ी इच्छा थी । उन्होंने उपाध्याय को मिला कर तारिणी बाबू से नया बिल लिखा लिया है इस बात को झूँठ साबित करने के लिए शिवचन्द्र साक्षी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की जगह खड़े हुए। चन्द्रनाथ ने कोई प्रश्न न किया शिवचन्द्र स्वयं जो जानते थे, कहने लगे। उन्होंने हेमचन्द्र की निर्भीकता, हेमचन्द्र की दया, हेमचन्द्र की न्याय-परायणता सजल-नयन से वर्णन की। तारिणी बाबू और उनकी स्त्री के ऊपर सुमित्रा की श्रद्धा-भक्ति का वर्णन किया। रोग में, शोक में, सन्ताप में सैकड़ों दफ़े तारिणी बाबू के घर जाकर सुमित्रा ने जो दासी की तरह सेवा की थी वह भी कह सुनाया। तारिणी बाबू ने जब प्रकाशतः हेम और सुमित्रा को जाति-च्युत किया तब भी सुमित्रा चुपचाप चचा के घर जाकर उनकी और शय्यागत चाची की सेवा-शुश्रूषा करती थी। तारिणी बाबू की नई गृहिणी ने जब सुमित्रा को मना कर दिया कि वह उसके घर न आवे, तब भी सुमित्रा उस बात को न मान कर दुःख शोक के समय उसके घर जाती थी। तारिणी बाबू की यह नई स्त्री सुभद्रा जब बालिका थी, बड़ी ही दीन अवस्था में थी। दिन में एक बार भी उसे भर पेट खाने को न मिलता था, गाँव में कोई ऐसा न था जो उसे एक मुट्ठी चावल खाने को देता। ऐसी विपत्ति के समय सुमित्रा कभी कभी उसे चावल दाल दे आती थी, कपड़ा ख़रीद देती थी। वह अपनी लड़की को गोद से उतार बेटी की तरह सुभद्रा को गोद में बिठा कर दूध-भात खिलाती थी। वही सुभद्रा जब तारिणी बाबू की गृहिणी हुई तब अहंकार में आकर सुमित्रा का अपमान करती और उसे गाली देती थी। सुमित्रा एक दिन के लिए भी उस पर रुष्ट न हुई और न कोई अनुचित बात बोली। सुभद्रा को अबोध समझ उसकी बात को मन में न लाती थी, और मानापमान की बात को भूल कर दासी की तरह रुग्णशय्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर पड़े हुए चचा की सेवा कर आती थी। सम्पत्ति पाने के लिए हेमचन्द्र ने तारिणी बाबू से दूसरा विल न लिखाया। उन्होंने सुभद्रा के दुःस्वभाव से अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपनी इच्छा से दूसरा विल लिखा। हेम बाबू तारिणीप्रसाद की सम्पत्ति लेना नहीं चाहते। इस विषय में उन्होंने जो शिवचन्द्र को कई पत्र लिखे थे वे सब अदालत में दाख़िल किये।

इसके अनन्तर शिवचन्द्र रमानाथ उपाध्याय का परिचय देने लगे। उनके देवतुल्य चरित्र, असाधारण धर्मशिक्षा, अदम्य उत्साह और देश-हितैषिता का वर्णन करने लगे। उपाध्याय जाति, अवस्था और समय के अनुसार सभी हिन्दुओं को बुला कर अपने धर्म्म की शिक्षा दे रहे हैं। द्वेष, हिंसा और अनैक्य से दूषित समाज में ऐक्य साधन का यत्न कर रहे हैं। सनातन हिन्दू धर्म की संजीवनी वार्ता के द्वारा आधुनिक हिन्दू-समाज में जीवन प्रदान कर रहे हैं। इस कर्तव्य-साधन के पीछे रमानाथ इस कलङ्क के भार को भार नहीं समझते, हिन्दुओं के मुख से निन्दा और अपवाद सुन कर हँसते हैं। उन्होंने शत्रुओं के अपकार की बात सुन कर भी उन्हें हृदय से प्यार कर अच्छी सलाह दी है। द्वेषी और अभिमानियों की भर्त्सना से रमानाथ का हृदय कभी विचलित न हुआ। सनातनपुर के ज़मींदार के भय से रमानाथ ने कभी अपने नियम का उल्लङ्घन न किया। स्वदेशप्रिय रमानाथ एकाग्र मन से स्थिरतापूर्वक स्वदेश की उन्नति-साधन का यत्न कर रहे हैं। अपने धर्म का गौरव बढ़ा रहे हैं, आपस की फूट के कारण बिगड़े हुए समाज को सुधारने की चेष्टा कर रहे हैं। वे अपने पवित्र जीवन के इन्हीं पवित्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उद्देश्यों के साधन के निमित्त आज दुष्टजनों के प्रपञ्च-जाल में फँस कर मिथ्या कलङ्क से कलङ्कित हुए हैं। नाना प्रकार की आपदायें झेली हैं। मैं उपाध्यायजी को जेठे भाई के बराबर समझ कर आदर करता हूँ। उनके उन्नत और आदर्श चरित्र में दोष, कलङ्क और अपराध को ठहरने की जगह नहीं। उनके सदृश महात्मा पर दोष का आरोपण करना केवल उन्हीं के लिए नहीं सारे देश के लिए कलङ्क का विषय है।

यहाँ तक सबूत लिख कर मैजिस्ट्रेट साहब ने क़लम रख दी। वे चञ्चल प्रकृति के मनुष्य थे, पर हृदय-शून्य न थे। उन्होंने ख़ूब ज़ोर से टेबुल पर हाथ पटक कर कहा—"क्या इसी देवतुल्य मनुष्य को पिशाच कह कर परिचय देने और इसे हत्याकारी साबित करने के लिए कामिनी बाबू ने यह षड्यन्त्र रचा है? क्या इस उन्नतहृदय देशहितैषी को विपदस्थ करने ही की इच्छा से सुभद्रा ने यह दरख़्वास्त दी है? क्या हमारी यह अदालत मिथ्या, अविचार और कपटकौशल की रङ्गभूमि हो गई? क्या हमारी यह पुलिस ज़मींदारों के अत्याचार की उपाय स्वरूप हुई? रमानाथ! कल मैं तुमको महा अपराधी समझ बैठा था, परन्तु आज मैं अपनी भूल समझ कर लज्जित हूँ। तुम निर्दोषी, सच्चरित्र, परोपकारी और धर्म-परायण हो। तुम्हारे सदृश उच्च विचार के लोग अधिक रहते तो तुम्हारे देश की ऐसी दुर्दशा न होती। यह देश ऐसा हतभाग्य न समझा जाता! तुमको मैंने रिहाई दी। तुम्हारे ऊपर जिसने झूँठा मुक़दमा दायर किया है, तुम्हारी इच्छा हो तो अब तुम उस पर उलटा मुक़दमा चला सकते हो।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सारा न्यायालय निस्तब्ध था, सभी लोग चित्रवत् खड़े थे। रमानाथ ने बड़ी बुलन्द आवाज़ में कहा—"माननीय महोदय, आपके इस सुविचार के लिए ईश्वर आपका मङ्गल करें। किन्तु मेरा एक और वक्तव्य है।"

मैजिस्ट्रेट—"क्या ?"

रमानाथ—"साक्षियों ने अपने इज़हार में कहा है, "तीस वर्ष पूर्व इस कामिनीकान्त ने दंगा फ़साद खड़ा करके अपने भाई कमलाकान्त का ख़ून किया। इसका कुछ इन्साफ़ न हुआ।"

मैजिस्ट्रेट—"तीस वर्ष पूर्व की घटना का भी आज इन्साफ़ हो सकता है, परन्तु उसका अभी सबूत क्या है ? उसके चश्मदीद गवाह अभी कै आदमी हैं ?"

रमानाथ—"उस घटना के यथेष्ट प्रमाण मेरे पास मौजूद हैं। किन्तु भातृ-हत्यास्वरूप भयङ्कर पाप से स्वयं ईश्वर ही ने कामिनी बाबू को बचा लिया है। कमलाकान्त उस मार में आहत हुआ था, किन्तु जान से न मरा। तीन लठैत सिपाही कमलाकान्त के मूर्छित शरीर को वहाँ से उठा कर जंगल में ले गये। कमलाकान्त को चैतन्य होने पर वे तीनों उसे लेकर पश्चिम देश की ओर भाग गये। ये तीनों सिपाही हीरासिंह, लालसिंह और जौहरसिंह पश्चिम से आये हैं और यहीं खड़े हैं। कामिनी बाबू शायद अब भी उन्हें पहचान सकेंगे। (कामिनी बाबू की ओर तीव्र दृष्टि से देख, माथे पर से जटा फेंक उपाध्याय गरज कर बोले) वह कमलाकान्त अब भी जीवित है। ध्यानपूर्वक देखने से प्रायः वे अब अपने भाई को भी पहचान सकेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामिनी बाबू ने उस जटाजूटधारी उपाध्याय का जटामुक्त ललाट देखा, उसके अंगार से लाल लाल नेत्र देखे, उसकी तेजःपूर्ण प्रचण्डमूर्ति देखी, वह मानो क्रुद्ध स्वभाव बालक आज, महाशक्तिशाली, बलिष्ट, विद्वान्, वीर पुरुष होकर उस वैर का बदला लेने आया है। कामिनी बाबू अचेत होकर गिर पड़े। उनके नौकर उन्हें वहाँ से उठा कर बाहर ले गये।

कचहरी में एक भारी कोलाहल मच गया। उस कोलाहल को किसी तरह रोक कर मैजिस्ट्रेट ने रमानाथ से पूछा—"तुम्हीं कमलाकान्त हो? कामिनीकान्त ने तुम्हीं को बालकपन में ख़ून करने के लिए दंगा किया था? तुम उस पर ख़ून का मुक़दमा दायर करो, सबूत लाकर दाख़िल करो, अँगरेज़ के राज्य में तुम्हारा न्याय होगा। मैं ख़ुद तुम्हारे इस मुक़दमे का फ़ैसला करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अठाइसवाँ परिच्छेद

कचहरी के बाहर उस दिन बड़ा कोलाहल हुआ। लोगों के मुँह से बार बार "धर्म की जय, सरकार बहादुर की जय, बड़े लाट ऐलगिन साहब की जय" आदि सन्तोषसूचक शब्द होने लगे। उनकी वर्णना करने में हम अक्षम हैं। जटाजूटमण्डित, लम्बी दाढ़ी बढ़ाये, दिव्य देहधारी कमलाकान्त ज़मींदार को देखने के लिए लोग चारों ओर से उमड़ पड़े। चन्द्रनाथ बाबू वकील को देखने के लिए लोगों की बड़ी भीड़ हुई। मैमनसिंह के ज्वायन्ट मैजिस्ट्रेट शिवचन्द्र को देखने के लिए कितने ही लोग दौड़ आये। इस भीड़ भड़क्के में बातचीत होना तो असंभव था। केवल चन्द्रनाथ, हेमचन्द्र और शिवचन्द्र को आलिङ्गन करके रमानाथ ने अपने हृदय की कृतज्ञता प्रकट की।

निश्चय हुआ। सभी मुख़्तार के मकान पर जायँगे। वहीं सन्ध्याकाल सब विषय में बातचीत होगी। इसी समय बर्दवान के कई एक वकील चन्द्रनाथ, शिवचन्द्र, और हेमबाबू को एक प्रधान वकील के घर ले गये। वहाँ वे सब इन्हें बिना जलपान कराये कब छोड़ने वाले थे? इसलिए हेमचन्द्र किसी तरह उन लोगों से पिण्ड छुड़ा कर अकेले मुख़्तार के घर पर गये।

हेमचन्द्र ने वहाँ जा कर देखा, कचहरी से तब भी कोई न आया था। इसलिए वे बाहर के कमरे में बैठ कर विश्राम करने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस कमरे का सम्बन्ध भीतर के घर से था, थोड़ी देर के बाद एक छोटी सी अँधेरी कोठरी का किवाड़ खुला। उस कोठरी से होकर बाहर से भीतर जाने का रास्ता था। उस कोठरी में एक स्त्री की भूषण से अलंकृत बाँह देख पड़ी। वह स्त्री युवती थी, और मुँह को घूँघट के भीतर छिपाये थी। हेमचन्द्र ने उधर से दृष्टि फेर ली।

बाजू बिजायठ आदि बहुभूषणों का मधुर शब्द हुआ। हेमचन्द्र ने फिर उस ओर साकांक्ष दृष्टि से देखा। वह स्त्री उँगली के द्वारा हेमबाबू को उस घर में आने का इशारा कर रही थी।

हेमबाबू बड़े ही सज्जन पुरुष थे। उनको सहसा भीतर जाने का साहस न हुआ। वे मन में सोचने लगे, "क्या बर्दवान की स्त्रियाँ ऐसी भ्रष्टाचारिणी होती हैं? उनका आचार व्यवहार क्या ऐसा खोटा है?" तथापि वह क्यों बुला रही है, यह जानने के लिए वे डरते हुए उस कोठरी में गये। युवती ने झट किवाड़ बन्द करके ताला लगा दिया।

हेम बाबू देहात के रहने वाले एक सीधे स्वभाव के मनुष्य थे। बर्दवान की स्त्री के हाथ में पड़ कर बड़ी ही विपद में फँसे। सूने घर में अपरिचिता युवती के साथ क्षण भर भी रहना भले आदमी को उचित नहीं। मुख़्तार साहब अगर हेमबाबू का यह व्यवहार सुनेंगे तो क्या कहेंगे?

हवेली के भीतर की ओर का द्वार खोल कर युवती कोठरी से बाहर हो गई और हेमबाबू को फिर भीतर आने का इशारा करने लगी। बर्दवान की स्त्री की इस खोटी चाल पर जी से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुढ़ते हुए और भाँति भाँति की चिन्ता करते हुए हेमबाबू लाचार हो कर गये।

युवती ने आसन पानी रख दिया और एक स्त्री ने एक थाली में कचौड़ी, हलुवा और आलू परवल की तरकारी लाकर रख दी। हेमबाबू हाथ मुँह धोकर भोजन करने बैठे। देखा, बर्दवान की स्त्रियों का व्यवहार जैसा कुछ हो, उनके हाथ का बनाया अन्न बड़ा ही सुस्वाद होता है।

परन्तु भोजन परोसने वाली स्त्री बड़ी ही निर्लज्ज थी। वह उनके आगे खाने की कोई कोई वस्तु परोसती थी और मुँह पर कपड़े रख कर बराबर व्यङ्ग की हँसी हँसती थी। हेमबाबू को देहाती आदमी जान और उन्हें चकित चित्त से भोजन करते देख कर शायद उसकी हँसी रोके न रुकती थी।

जब भोजन समाप्त हुआ, तब पाचिका ने चटनी लाकर उनके आगे रख दी। हेमबाबू ने कच्चे आम की चटनी चख कर देखा, फिर चख कर घूँघट डाले पाचिका के मुँह की ओर देखा, उन्होंने एकाएक बाँयें हाथ से उसका दहना हाथ पकड़ लिया।

यह क्या? हेमबाबू बड़े ही सज्जन हैं—पराये घर की पाक-कर्त्री का हाथ पकड़ना कैसा है? पाचिका ने "छिः छिः!" कह कर हाथ खींचने की चेष्टा की। हेम ने हँस कर कहा—"अब तुम अपने को कब तक छिपाये रक्खोगी? अब मुँह छिपाने से क्या होगा? इस कच्चे आम की चटनी खा कर मैंने तुम्हें पहचाना। यह धर्मपुर की बनाई वस्तु है। अच्छा, अब यह बताओ, तुम यहाँ कब आईं, कैसे आईं?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुमित्रा तब घूँघट खोल कर हँसते हँसते स्वामी के पास बैठी। बोली, "योगमाया सनातनपुर की पुरानी दासी को लेकर बर्दवान आई है। मैं भी उसी के साथ आई हूँ।"

हेम—"क्या योगमाया और उनकी दासी इसी मकान में हैं?"

सुमित्रा—"हाँ, वे दोनों इसी मकान में हैं। मुख़्तार साहब की जोरू ने हम सब को बड़ी ख़ातिरदारी के साथ अपने यहाँ रक्खा है। वे बड़ी नेक औरत हैं।"

हेम—"नेक हो सकती हैं, किन्तु इस घर की औरतों की चाल ढाल कुछ बिगड़ी हुई सी जान पड़ती है। जो स्त्री मुझे बाहर से बुला लाई, वह बड़ी चालाक और निर्लज्ज मालूम होती है।"

सुमित्रा—"नहीं, नहीं, उस स्त्री का शील स्वभाव बड़ा अच्छा है, तो बात यह है कि अभी तक उसके मन से लड़कपन नहीं गया है। देखिए, वह फिर आ रही है।"

इतने में वह युवती एक पथरी में दही चीनी और एक तश्तरी में कुछ मिठाई लिये वहाँ आई और उनके आगे रख दी। मिठाई देख कर ही हेमबाबू के मन में सन्देह हुआ। उन्होंने मुँह में मिठाई देते ही उस युवती से हँस कर कहा—"समझ गया, अब घूँघट में मुँह छिपाने की ज़रूरत क्या? घूँघट हटाओ। जिसके हाथ की बनी यह मिठाई है, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। यह मिठाई चखा कर तुमने आप ही अपना परिचय दे दिया।"

हँसती हुई सुधा झूँठा अभिमान करके बोली—"नहीं, नहीं,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घूँघट खोलते मुझे डर होता है। घूँघट डालने से तो मैं बेशर्म और चालाक हुई। न मालूम घूँघट खोलने से क्या हूँगी ?"

हेमचन्द्र निरुत्तर हुए। अनेक अनुनय विनय वाक्यों से सुधा को प्रसन्न किया। आख़िर वह घूँघट खोल कर खिलखिला उठी।

सुधा और शिवचन्द्र की बात पूछने पर सुमित्रा ने कहा—"मैंने बर्दवान में आकर सुना कि मुक़द्दमा होने में अभी दो तीन दिन की देरी है, और यह भी सुना कि मैमनसिंह से यहाँ आने जाने में दो दिन लगते हैं। उपाध्यायजी के इस विपत्ति के समय शिव बाबू के आने से उनका विशेष उपकार हो सकता है। वे उपाध्यायजी का यथार्थ गुण साहब से कह कर या किसी और ही तरह उनकी सहायता कर सकेंगे।" इस प्रकार विचार करके मैंने शिव बाबू को तार दे दिया। शिव बाबू तार पाकर बड़ी बड़ी कोशिश पैरवी से दस दिन की छुट्टी लेकर सुधा के साथ बर्दवान आये हैं।"

सुमित्रा के मुँह से यह सब बात सुन हेमचन्द्र प्रसन्न होकर बोले—"धर्मपुर में ऐसी चतुर बुद्धिमती वकील है, यह जानते होते तो शायद उपाध्यायजी वकील लाने के लिए मुझे कलकत्ते न भेजते। उपाध्याय कौन हैं, तुम जानती हो ?"

सुमित्रा—"बहुत दिनों से जानती हूँ।"

हेमबाबू ने विस्मित होकर पूछा—"तुमने कैसे जाना ? किसने तुमसे कहा ? तीस वर्ष के बाद कमलाकान्त को गाँव में किसने पहचाना ?"

सुमित्रा ने हँस कर कहा—"पुरुष किसी को नहीं पहचानते !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुरुष अपनी अर्धाङ्गिनी को भूल जाते हैं, परन्तु स्त्री उन्हें नहीं भूलती। अभी की बात है, मैं घूँघट काढ़े थी, आप मुझको न पहचान सके। पुरुष का चित्त केवल खाने ही की ओर रहता है। मुझे भूल कर आप आम की चटनी को तुरन्त पहचान गये। स्त्री तो वैसी नहीं होती। तीस वर्ष के बाद भी योगमाया ने कमलाकान्त बाबू को देखते ही पहचान लिया। क्या स्त्री अपने स्वामी को कभी भूल सकती है?"

सुधा अपने बच्चे को गोद में लिये हेम बाबू के पास बैठी थी। उसने भी इस अवसर को हाथ से जाने न दिया। हेम बाबू की ओर देख कर सुमित्रा से कहा—"बहन, योगमाया कमलाकान्त बाबू को पहचान कर उनके साथ बात करती थी। खाने पीने की वस्तु बना कर उन्हें खिलाती थी। उनकी सेवा टहल में हाज़िर रहती थी। इससे कमला बाबू योगमाया बहन को निर्लज्ज तो नहीं समझते?"

दोनों बहनों के निकट आज हेम बाबू ने अपनी हार स्वीकार की। दोनों बहनें एक साथ होकर बात करें तो उनके साथ बात में विजय पाना कठिन है। हेम बाबू ने निरुत्तर होकर मुस्कुराते, मन ही मन पुलकित होते हुए चटनी और दही को निःशेष कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनतीसवाँ परिच्छेद

योगमाया जब दस वर्ष की थी तब उसका व्याह सनातनपुर के ज़मींदार के घर कमलाकान्त बाबू के साथ बड़ी धूमधाम से हुआ। चौदह वर्ष की उम्र में उस हतभागिनी ने पति को खोया। उतनी ही थोड़ी उम्र में उसने पति को पहचान लिया था, पति के ऊपर अनुराग करना सीखा था। यौवन के आरम्भकाल में ही योगमाया पति को खो बैठी। इसके अनन्तर सत्ताइस वर्ष तक केवल पति की वह सुन्दर मुखच्छवि हृदय में धारण करके बड़े बड़े कष्ट, शोक, दूसरे का अत्याचार और अपमान सह कर वह पति-परायणा किसी तरह प्राण धारण कर दुःख का दिन बिता रही थी। जिस साल धर्मपुर में सुमित्रा का जन्म हुआ, उसी साल कमलाकान्त बाबू धर्मपुर से अन्तर्हित हुए। इस लिए सुमित्रा से योगमाया चौदह वर्ष उम्र में बड़ी थी।

जिस दिन सन्ध्या समय कमलाकान्त ने जटाधारी के भेस में फिर कामिनी बाबू के घर आकर आश्रय लिया, शान्त-हृदया चिर-दुःखिनी योगमाया उपाध्याय के दर्शन करने गई। जब रात में उपाध्याय दीपक जला कर ऊँचे स्वर में धर्मशास्त्र पढ़ने बैठे, तब योगमाया उनके मधुर स्वर से आकृष्ट हो पास वाले घर में बैठ कर बड़े ध्यान से पाठ सुनने लगी और साकांक्ष दृष्टि से बार बार उस महात्मा की दिव्य मूर्ति की ओर देखने लगी। उपाध्याय का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गम्भीर स्वर में शास्त्र-पाठ करना सुन कर और उनका सुन्दर शरीर और शान्तभाव से भरा मुख देख कर योगमाया को बाल्यावस्था की बातों का स्मरण होने लगा। क्यों होने लगा, यह योगमाया नहीं जानती। दो पहर रात बीत गई। उपाध्याय चिराग़ बुझा कर सो रहे। योगमाया भी पूर्व की बात स्मरण होने से अत्यन्त व्याकुल और व्यथितचित्त होकर अपनी दुःखशय्या पर जाकर पड़ रही। नींद न आई। उसके हृदय में बाल्यकाल की बातों की तरङ्गें लहराने लगीं। युवावस्था के प्राणेश्वर की सूरत याद आने लगी। नवीन अवस्था में वैधव्य होने की असह्य वेदना आज सत्ताइस वर्ष बाद फिर उस विधवा के हृदय को बार बार मसोसने लगी। तकिये पर मुँह रख चुपचाप रोते रोते बड़ी देर बाद उसे निद्रा आई। परन्तु वह निद्रा क्या थी, मानो स्वप्न की साम्राज्य थी। जान पड़ा, जैसे उसकी युवावस्था के पति तेजःपूर्ण कमलाकान्त छत के ऊपर ऊँचे स्वर से गीत गा रहे हैं। वह चौंक कर उठ बैठी—देखा, सबेरा हो गया। सूर्य की किरणों से सभी स्थान अपूर्व शोभा पा रहे हैं। उसी सूर्य भगवान् के कोमल प्रकाश में खड़े होकर उपाध्यायजी वेद-गान कर रहे हैं।

इसके अनन्तर? इसके अनन्तर जब वह विधवा रोज़ रोज़ उपाध्यायजी के घर का काम करने आती थी, सवेरे या साँझ को उनके लिए कुछ न कुछ खाने की वस्तु अवश्य लिये आती थी। साँझ को वह अपने हाथ से उनके घर में दिया जलाती थी। उसका शान्त हृदय उद्विग्न हो उठता था। उसके शान्त चित्त में अशेष चिन्ता की तरङ्गें लहराने लगती थीं। और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब प्रातःकाल उपाध्यायजी अपने विद्यार्थियों को उपनिषद् पढ़ाते थे अथवा आधी रात तक दीपक की रोशनी में अकेले बैठकर सङ्गीत भरे स्वर में महाभारत या किसी पुराण का पाठ करते थे, योगमाया बेसुध हो उस पाठक की ओर निर्निमेष दृष्टि से देखती थी, और तन्मय हो उनकी अमृतवाणी सुनती थी। इस से उसका हृदय शान्तिपूर्ण होता था और वह अपने जीवन को धन्य मानती थी। पाठ समाप्त होने पर वह अभागिन लम्बी साँस ले प्रेमभरी चितवन से उस योगिराज की ओर बार बार देख कलेजे पर पत्थर रख किसी तरह अपने घर को लौट आती थी। घर आते ही सांप सैकड़ों विच्छू एक साथ उसके कोमल हृदय पर डङ्क मारने लग जाते थे। क्यों? इस अवस्था में ऐसा उद्वेग क्यों? युवत्व के कारण? नहीं, योगमाया के शरीर से यौवन तो कब का कूच कर गया। तो क्या यह नये प्रेम का जोश है? नहीं, वह भी नहीं। बहुत दिन हुए, योगमाया का हृदय एकदम प्रेम का पाठ भूल गया। उसके मन में प्रणयलता का जो बीज अङ्कुरित हुआ था वह वैधव्य होने के साथ सूख गया। तो फिर योगमाया के हृदय में नवीनभाव उदय होने का कारण क्या? कारण कुछ अवश्य है, जो पाठक थोड़ी देर में आप ही जान लेंगे। यद्यपि योगमाया के मन में विकार उत्पन्न होने का कोई विशेष कारण न था, तो भी उस जटाधारी महात्मा के मुँह की ओर देखते ही धक से उसके हृदय में पहले की कोई बात स्मरण हो आती थी। भाँति भाँति की चिन्ता और कल्पना से उसका मन डावाँडोल हो उठता था। वह जाग्रत अवस्था में ही स्वप्न देखने लगती थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिस दिन उपाध्याय ने अपना जीवन-वृत्तान्त हेमचन्द्र और शिवचन्द्र से कहा था उस दिन योगमाया का हृदय और भी चिन्तित और व्याकुल हुआ। उपाध्याय धनी के सन्तान थे। अट्ठारह वर्ष की उम्र में उन्होंने एक सङ्कट में पड़ कर अपना सर्वस्व खो दिया। वे फिर पश्चिम से सनातनपुर को लौट आये हैं। ये उपाध्याय कौन हैं? क्या इसके पूर्व मैंने कभी इनको देखा है? नहीं नहीं, यह मेरे मन की कल्पनामात्र है। परमेश्वर! आप मेरी रक्षा कीजिए, जिसमें मेरा सत्य न बिगड़े, जिसमें, मैं पाप-मोह में मुग्ध न होऊँ, जिसमें मैं एक आशातीत सुख के लिए पगली न होऊँ। हे ईश्वर, आप मेरे हृदय में वह बल दीजिए जिससे मैं निर्लोभ होकर अपने जीवन के शेष समय को बिता सकूँ और कभी धर्मपथ से विचलित न होऊँ।

कई दिन तक योगमाया के हृदय में व्याकुलता का अभिनय होता रहा। पूर्वकाल के स्मरण और नवमुकुलित आशा से उसका सूखा हृदय फिर कुछ हरा सा होने लगा। इसके बाद जब उपाध्याय ने योगमाया के पास योगमाया के स्वामी और उसकी सम्पत्ति का ज़िक्र किया तथा कामिनीकान्त की गृहिणी के साथ भेंट करके कमलाकान्त के सम्बन्ध की गुप्त बातें कहीं तब योगमाया के मन में सन्देह न रहा। उसने चाहा कि वह उसी घड़ी स्वामी के चरण-कमलों में लिपट कर अपने चिर-सन्तप्त हृदय को शीतल करे किन्तु स्वामी क्या इससे सन्तुष्ट होंगे? क्या वे अब उसे ग्रहण करेंगे? इतने दिन तक तो उन्होंने उसे पत्नी जान कर ग्रहण नहीं किया! उस विषय में कभी कुछ कहा भी नहीं। क्या पहले स्त्री को अपना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने मन की खोल कर बोलेंगे, कई वर्षों के बाद यौवनकाल-प्रेम की बात स्मरण कर चिरसन्तप्त हृदय को शीतल करेंगे । अभी यहीं तक । जब तक मैं अपना असली नाम ज़ाहिर न करूँ तब तक मैं एक विदेशी पण्डित मात्र और तुम बाबू साहब के घर की एक विधवा । अगर लोग अभी मेरा असली पता पा जायँगे तो मेरी जान पर आ पड़ेगी । कामिनीकान्त बाबू को मैं बखूबी जानता हूँ । सावधान ! भूलकर भी यह बात किसी पर प्रकट न होने दो ।"

योगमाया ने आकाश का चन्द्रमा हाथ में पा लिया । परन्तु वह चन्द्रमा फिर मेघाच्छन्न हुआ । उपाध्याय के ऊपर मुक़द्दमा दायर होने के दिन से विचार होने तक योगमाया अधमरी सी हो गई । आख़िर वह यन्त्रणा न सह सकी । धर्मपुर आकर सुमित्रा से मिली और अपना दुखड़ा रो रोकर उससे कह सुनाया । सुमित्रा ने उसे पूर्ण रूप से सान्त्वना दी । पश्चात् योगमाया सुमित्रा को साथ ले बर्दवान आई ।

मुक़द्दमे का फ़ैसला हो गया । योगमाया के पति रिहाई पागये । कमलाकान्त का नाम चारों ओर ज़ाहिर होने लगा । सब लोग उनके धर्म की दुहाई देने लगे । घर, बाहर, घाट, सर्वत्र उनका जय जयकार होने लगा । योगमाया का कोमल हृदय आनन्द के उत्कट आवेग से फटने लगा । उसकी आँखों से हर्ष के आँसू बह चले । वह चञ्चल चित्त से पति के आगमन की प्रतीक्षा करने लगी । जब कमलाकान्त कचहरी से मुख़्तार के घर आये और हवेली के भीतर आँगन में पैर रक्खा, तब योगमाया से न रहा गया, वह दौड़ कर स्वामी के पैरों पर गिर पड़ी, और लिपट कर उनके दोनों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पैर पकड़े। एक बार ख़ूब ज़ोर से रो कर उसने हृदय का वेग शान्त किया, पति के चरण की धूल मस्तक में लगा कर सत्ताइस वर्ष की ज्वाला-यन्त्रणा को दूर किया।

चिरकाल के अनन्तर दम्पती का मिलन देख वहाँ से सब लोग हट गये। आनन्द का क्रन्दन सुन कर सब का हृदय हर्ष से विह्वल हो उठा। सब की आँखों में आनन्द के आँसू भर आये। सुधा घर के भीतर जाकर बार बार बच्चे का मुँह चूमती और रोती थी। सुमित्रा ने स्वामी का हाथ पकड़ कर आँचल से आँखें पोंछ डालीं। बाहर चन्द्रनाथ बाबू भी हाथ पर गाल रख इस अपूर्व घटना की बात सोचने लगे। उनकी आँखों से दो बूँद आँसू टपक पड़े। मुख़्तार साहब और उनकी गृहिणी दोनों पुराने ज़माने के मनुष्य थे। उन्होंने दोनों बाहें ऊपर उठा भगवान् को पुकार कर योगमाया और कमलाकान्त के कुशल की प्रार्थना की।

कमलाकान्त ने अनेक सान्त्वना-वाक्यों से योगमाया को धीरज धरा हाथ पकड़ कर उसे उठाया, उसकी आँखों के आँसू पोंछ दिये और अपनी आँखें भी पोंछ डालीं। इसके अनन्तर और कुछ न कह उन्होंने चुपचाप योगमाया का वह पुराना चन्द्रहार उसके गले में पहिरा दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीसवाँ परिच्छेद

हमारा यह उपन्यास अब समाप्तप्राय हुआ। हमने धर्मपुर गाँव के सत्ताइस वर्ष का वृत्तान्त कह सुनाया।

दरिद्र की लड़की, दरिद्र की पत्नी, शान्त-हृदया सुमित्रा ही हमारे इस उपन्यास की प्रधान नायिका है। सुमित्रा का जन्म होते हमने देखा है। जब वह नव वर्ष की थी, उस समय उसकी माता के साथ एक दिन साँझ को पोखर के घाट पर उसे देखा था। सुमित्रा के अट्ठारहवें वर्ष में उसकी विधवा बहन के पुनर्विवाह के निमन्त्रण में हम कलकत्ते गये थे। अब उसकी सत्ताइस वर्ष की अवस्था में उसकी कन्या सुशीला के विवाह में हम निमन्त्रित हुए हैं।

सुधा भी दरिद्र बालिका थी, असमय में ही विधवा हुई। आधुनिक शिक्षा से हम सब नाक सिकोड़ते हैं, उसकी निन्दा करते हैं, किन्तु आधुनिक शिक्षा के बल से ही सुधा हतभागिनी की अवस्था से उद्धार पाकर अत्यन्त उदारचेता विद्वान् पति की सुहागिन बनी। सुधा बाल्यकाल से ही बड़ी प्रसन्न-हृदया थी। उसके चेहरे पर हमेशा प्रसन्नता छाई रहती थी। उसके दोनों नेत्र आनन्द से विकसित रहते थे। सुधा स्वभावतः रसिका थी। धर्मपुर गाँव में उसकी अपेक्षा सच्चो, सद्गुणवती, दयार्द्रचित्ता और परोप-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कारिणी कोई न थी। उससे बढ़ कर पतिप्राणा पतिपरायणा भी कोई न थी।

विलासपुर की धनवती वधू सावित्री देवी की अकाल-मृत्यु से हम शोकाकुल होकर आँसू की धार बहा चुके हैं। अभागिनी अन्नपूर्णा के बाल-वैधव्य पर हम अत्यन्त खेद प्रकाश कर पुनर्विवाह पर अपनी सम्मति दे चुके हैं।

हेम बाबू और शिवचन्द्र के साथ कलकत्ते जाकर हमने अनेक बड़े आदमियों का परिचय पाया, एकाधबार उनके कमरे की सजावट देख कर जीवन सार्थक किया। देवीप्रसन्न बाबू के राजकीय भवन में प्रवेश कर उनकी गरबीली गृहिणी के साथ डरते डरते दो चार बातें कर आप्यायित हो चुके हैं। धनञ्जय बाबू का संगमरमर-रचित उच्च प्रासाद और काले तथा सफ़ेद रङ्ग की जोड़ी देखी, उनके हार्दिक मित्र और मित्राणियों को देखा। उनकी उन्नति और कुछ ही दिन में दुराचार के कारण उनकी अवनति भी देखी। अत्यन्त चतुर कालज्ञ सुमति बाबू की कमशः उन्नति होते देखी है। वे कब रायबहादुर की उपाधि पावेंगे, अब हम इसकी राह देख रहे हैं। कलकत्ते का बड़ा बाज़ार देखा है। वहाँ यश, मान, महत्त्व और पाण्डित्य की बिक्री होते देखा है। सुधा के विवाह के समय हम कलकत्ते के अनेक आर्य-सन्तान और सर्वशास्त्रज्ञ पण्डितों का परिचय पाकर कृतार्थ हो चुके हैं।

हमने सनातनपुर में अपरिचित उपाध्याय से शास्त्र का उपदेश सुनने जाकर तिवारीजी के वंश का कुछ परिचय पाया और नामी ज़मींदार कामिनीकान्त बाबू को देखा। उस विपुल वंशीय ज़मींदार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के घर की नवीना, और प्राचीना स्त्रियों के साथ कभी कभी पोखर के घाट पर देखादेखी भी हुई, इस उपन्यास में भयभीत होकर हमने उनकी भी दो एक बातें लिखी हैं। यदि यह हमसे अपराध हुआ हो तो वे नवीना और वृद्धा हमें क्षमा करें।

धर्मपुर की 'माईजी' और "ठाकुर महाशय" से अनेक प्रकार की सांसारिक शिक्षा और गम्भीर विचार सुन कर हमारे समाज की बुद्धिमती स्त्रियाँ और बुद्धिमान् पुरुष उपकृत होंगे और संसार का यथेष्ट व्यवहार सीखेंगे इसमें सन्देह नहीं।

धर्मपुर के तारिणी बाबू के विवाह से हमारे आनन्द की सीमा न रही। उनकी मृत्यु से हम बड़ी ही विपत्ति में पड़े। कलकत्ते से बर्दवान तक कई बार आये गये। बर्दवान में पद्मसरोवर की भाँति वहाँ के वकीलों को शोभा पाते देखा, और इधर उधर से झाँक कर हाकिम का इजलास और उनका ख़ास कमरा भी देख आये।

संसार और समाज दोष और गुण से भरे हैं। जैसा हमने देखा है, वैसा ही वर्णन करने की चेष्टा की है। समाज में दोष बहुत हैं, परन्तु हम दोष की अपेक्षा गुण ही अधिक देखते हैं। इस लिए हमें भविष्य में उन्नति की आशा है। जिस समाज में कमलाकान्त के समान ज़मींदार हैं, चन्द्रनाथ के सदृश वकील हैं, हेमचन्द्र के जैसे पुरवासी हैं, शिवचन्द्र के तुल्य राजकर्म्मचारी हैं, उस समाज की उन्नति का मार्ग कभी बन्द न होगा।

योगमाया, सुमित्रा, और सुधा की बराबर पतिव्रता स्त्री हमारे भारत देश के घर घर में विराज रही हैं। भारत-भूमि अब भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भारत-ललनाओं के पुण्य बल से उज्ज्वल है। हेमचन्द्र ने एक दिन भोजन के उपरान्त हमारे कान में कहा—"भारत की पाकशाला भी भारत-रमणियों के पाक-कौशल से उज्ज्वल है।"

कमलाकान्त वर्दवान में कई दिन रह कर वहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मिले और उनके साथ बातें कर कितने ही भारी कार्य सम्पादन किये। कामिनी बाबू के साथ जो ज़मींदारी का झगड़ा था, उसका निबटेरा होते देर न लगी। कामिनी बाबू के वकीलों ने विषकच्चू के मुक़दमे के सम्बन्ध में कामिनीकान्त को पूर्ण रूप से भर्त्सना करके कहा—"अगर आप इसी घड़ी कमलाकान्त बाबू की ज़मींदारी का जो कुछ अंश है, बिना तकरार के न छोड़ देंगे और क्षमा-प्रार्थनापूर्वक उनके साथ मेल-मिलाप न करेंगे तो हम सबों के साथ आपका सम्बन्ध यहीं तक ख़तम हुआ। आपका मुक़दमा हाथ में लेकर वर्दवान के वकील जैसे कलङ्कित हुए हैं, इसके पूर्व कभी ऐसे कलङ्क से कलङ्कित न हुए थे।" कामिनीकान्त बड़े उद्दण्ड और पराक्रमी ज़मींदार थे, किन्तु आज घोर संकट में पड़े हैं। उनके परामर्शदाता चतुर सुमति बाबू ने उन्हें त्याग दिया है। वर्दवान के वकील उनको धिक्कार दे रहे हैं। कमलाकान्त चाहें तो उनके विरुद्ध पुराने ढंगे की नालिश कर सकते हैं। ऐसी हालत में कामिनी बाबू कर ही क्या सकते थे? इच्छा न रहते भी लाचार होकर उन्होंने भाई का हिस्सा जो हड़प कर लिया था, छोड़ दिया। जिघांसापूर्ण हृदय से कलकत्ते जाकर एक बहुत बड़ा "जाति-संरक्षक-समाज" स्थापित किया और हृदय के शान्तिलाभ तथा दुश्मनों को चिढ़ाने के लिए फिर रंडी नचाने की इच्छा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकट की। कलकत्ते में उनके लिए मुन्नाजान से बढ़ कर नाचने गाने वाली और न थी, इस लिए फिर वही बुलाई गई।

कमलाकान्त का दूसरा काम—तारिणी बाबू की जायदाद के विषय में समीचीन विचार करना था। तारिणी बाबू आख़िरी वसीयतनामा के ज़रिये अपनी सब सम्पत्ति सुमित्रा और सुधा को दे गये हैं, किन्तु तारिणी बाबू की विधवा को बेदख़ल कर उस सम्पत्ति के लेने में हेमचन्द्र और शिवचन्द्र सहमत न हुए। हेमचन्द्र ने कहा—"सारी सम्पत्ति हमारी सास ही के हाथ में रहे। हम लोग उस धन को ग्रहण न करेंगे।"

कमलाकान्त ने कहा—"सुभद्रा उठती जवानी में विधवा हो गई। उसको देखने सुनने वाला कोई नहीं है। उसके हाथ में इतनी बड़ी सम्पत्ति का अधिकार देकर क्या उसे शीघ्र पाप-पथ पर पटक देना ही तुम्हारी इच्छा है?" अनेक तर्क-वितर्क के बाद स्थिर हुआ कि हेम और शिवचन्द्र ज़मींदारी का कुल काम अपने हाथ में लेंगे और आमदनी के रुपये क़िश्त बक़िश्त सुभद्रा के पास भेज दिया करेंगे। परन्तु यह बात सुभद्रा को मंज़ूर न हुई। वह क्रोध से व्याकुल हो विलाप करने लगी—क्या अब फिर उसे सुमित्रा और सुधा के आगे भीख माँगना होगा, इस ग्लानि से वह रोने लगी। उसने सुधा और सुमित्रा के साथ भेंट तक न की, धर्मपुर गाँव में फिर अपना मुँह न दिखाया। गोपाल को साथ ले अपनी जायदाद छुड़ाने की सलाह करने के हेतु कलकत्ते चली गई। कई दिन के बाद गोपाल व्यर्थ-प्रयत्न होकर लौट आया। सुभद्रा का कोई समाचार न मिला। सुमित्रा से कोई कोई कहते थे,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"सुभद्रा सलाह लेने के लिए रोज़ रोज़ सुमति बाबू के घर दौड़ी जाती है।"

कमलाकान्त का तीसरा कार्य—बेटे के व्याह की बात स्थिर करना था। बहुत दिन पूर्व कमलाकान्त ने हेमचन्द्र से अपना जीवन-वृत्तान्त कहते समय भिन्न जाति में विवाह विधेय है या नहीं, यह प्रश्न उनसे पूछा था और इस विषय में उनका मत क्या है, जानना चाहा था। हेम बाबू अब उस प्रश्न का अर्थ बखूबी समझ गये। वे आनन्द से पुलकित हो नवयुवक दयानाथ के साथ सुशीला का व्याह कर देने को राज़ी हुए। सुशीला की मौसी (सुधा) ने सुशीला को चूम कर कहा—"देखो बेटी, बड़े घर की बहू होकर हम सब को एकदम भूल मत जाना।"

ब्राह्मण के बेटे के साथ कायस्थ की बेटी का व्याह होगा, यह सुन कर बर्दवान में भारी धूम मच गई। किन्तु हेमचन्द्र और कमलाकान्त जो कार्य मन में ठान चुके थे, लोकनिन्दा या समाज-भय से वे उससे हटने वाले न थे। व्याह का दिन मुक़र्रर हुआ। आत्मीय जनों के पास निमन्त्रण-पत्र भेजे गये। व्याह धर्मपुर गाँव में ही बड़ी धूमधाम के साथ होगा।

शिवचन्द्र मैमनसिंह लौट गये; किन्तु सुधा विना व्याह देखे न जायगी, इस लिए वह बच्चे को लेकर हेम और सुमित्रा के साथ धर्मपुर आई। इधर योगमाया और कमलाकान्त बड़े समारोह के साथ सनातनपुर आकर अपनी ज़मींदारी दख़ल कर बैठे। सारे सनातनपुर में धूम मच गई। आज हाट बाज़ार, गली, सड़कों में, नये ज़मींदार की चर्चा छोड़ और बात नहीं। पोखर के घाट पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आज स्त्रियों के बीच योगमाया की बात के सिवा दूसरी बात ही नहीं। कमलकुमारी बग़ल में कलसी दबा घाट पर खड़ी होकर कहने लगी—"सुना न! अरे दादा! वे न पण्डित, न योगी, न महात्मा, वे हमारे तीन आने के ज़मींदार, वही कमलाकान्त बाबू हैं। सिर की जटा हटा देने से तो उनका स्वरूप ही बदल गया। देखो तो, अब वे कैसे सुन्दर मालूम होते हैं। योगमाया बहन का भाग्य बड़ा प्रबल है।"

कुसुमकुमारी दाँतों में मिस्सी लगाते लगाते बोली—"भाग प्रबल है बूढ़े बाबू का! काले पाढ़ की रंगीन साड़ी पहने गहनों से अङ्ग को अलङ्कृत किये योगमाया कैसी सुन्दर मालूम होती है। अब उसका रूप खिल गया है, देखती नहीं? मानो नई जवानी फिर उसे पलट आई है। जान पड़ता है, जैसे गौने वाली दुलहिन बर्दवान से पति के घर आई हो।"

वसन्तकुमारी महावर से रँगे पैरों को धोते धोते बोली—"योगमाया गौनेवाली बहू क्यों होगी? गौनेवाली बहू तो उस घर में आ ही रही है।"

हेमकुमारी कलसी नीचे रख भौंरे से काले केश-पाश का बन्धन खोलते खोलते बोली—"हाँ, हाँ, मैंने भी सुना है कि कमलाकान्त बाबू के लड़के के साथ धर्मपुर के हेमचन्द्र की लड़की का ब्याह होगा।"

धनगर्विता स्वर्णकुमारी ने स्वर्णकंकण-भूषित हाथ को हिला कर कहा—"तुम क्या कहती हो? ऐसा भी कहीं होता है? हम सब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्राह्मणी हैं। हम सब देवी कहलाती हैं! हमारे साथ क्या कभी कायस्थ का शादी व्याह हो सकता है?"

इधर कमलाकान्त ने गाँव में आकर गाँव के छोटे बड़े सब लोगों के घर कपड़े, मिठाई और अनेक प्रकार के उपहार भेज दिये। योगमाया ने अपने ज्ञातिवर्ग के घर की बहू-बेटियों, बूढ़ियों, और दासियों को सम्मानपूर्वक कपड़े और गहने दिये। गाँव के नये ज़मींदार का सर्वत्र जयजयकार होने लगा। बाबू साहब के घर के भीतर और पोखर के घाट पर कुछ दिन योगमाया के चरित्र की समालोचना बन्द रही। बूढ़ी स्त्रियाँ टसर की साड़ी पहन कर बड़े अनुग्रह के साथ बोलीं—"कोई कुछ कहे, पर योगमाया के मन में दया-धर्म है। हम सब के ऊपर कुछ भक्ति भी है। यह तो हम कई बार पहले भी कह चुकी हैं, पर भाग की खोटी है, इसी से एक अन्य जाति की सौत हुई थी, उसी के लड़के का व्याह कायथ के घर में होता है। अहा! दोष ने किसी को छोड़ा? चन्द्रमा में कलङ्क है। कमलनाल में भी काँटे हैं। उसका भाग बिगड़ा न होता तो क्या वह ब्राह्मण के घर की बहू होकर कायथ के साथ सम्बन्ध करती?"

गाँव के पाण्डित्याभिमानी पुराने ख़याल के विद्वानों ने झुंड बाँध कर एक दिन कमलाकान्त के पास जाकर ऐसा गर्हित सम्बन्ध करने का निषेध किया। कहा—"शास्त्रसम्मत काम करना चाहिए, समाजविरुद्ध काम करना उचित नहीं" इस प्रकार उन सबों ने अनेक लौकिक और वैदिक प्रमाण देकर अपने मत को पुष्ट किया और कहा "समाज की आज्ञा लेकर काम कीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमलाकान्त बाबू ने हँसकर कहा—"किसकी आज्ञा लेकर काम करूँगा ? देश के राजा भिन्न-धर्म्मी हैं, वे हमारे शास्त्र की बात नहीं जानते। आप लोग शास्त्र की बात जानते हैं, किन्तु अपना प्रभुत्व क़ायम रखने के लिए और ही तरह की व्यवस्था देते हैं, इस लिए लोग उस व्यवस्था को तुच्छ जान कर अपने धर्मज्ञान के अनुसार समाज की उन्नति का साधन कर रहे हैं। लोग जो अभी जहाज़ पर चढ़ कर श्रीक्षेत्र, चटगाँव, मद्रास, बम्बई प्रभृति स्थानों में जा रहे हैं, उस विषय में क्या आपने व्यवस्था दी थी ? आज कल जो अनेक जाति के लोग एक स्कूल में एक साथ बैठ कर पढ़ते हैं, एक जगह रहते हैं, एकत्र व्यवसाय करते हैं, कई स्थलों पर साथ मिल कर खाते पीते हैं, इस विषय में क्या आपने व्यवस्था दी थी ? लोग अब बहुविवाह की प्रथा को मिटा रहे हैं, बाल्य-विवाह को हटा रहे हैं, स्त्रीशिक्षा का प्रचार कर रहे हैं, बालविधवाओं का पुनर्विवाह करते हैं, कहिए, क्या इस विषय में आप ने व्यवस्था दी थी ? इस समय नाना जाति के लोग एकत्र होकर राजनीति के उन्नति-साधन की चेष्टा कर रहे हैं, जातीय ऐक्य-साधन कर रहे हैं, क्या इस विषय में आप ने व्यवस्था दी थी ? इस समय लोग संसार की परिक्रमा कर देश-देशान्तर में जाकर विद्या लाभ कर रहे हैं, बहुज्ञता प्राप्त कर रहे हैं, क्या इस विषय में आपने व्यवस्था दी थी ? प्रिय बन्धुगण ! धर्म ही मनुष्य का सच्चा मित्र है। धर्म ही उन्नति का प्रधान उपाय है। अगर आप लोग धर्म की ओर दृष्टि रखकर, प्राचीन शास्त्र के सिद्धान्त पर ध्यान रखकर व्यवस्था देते तो अवश्य समाज की उन्नति साधन कर सकते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसा न करके यदि आप केवल अपने स्वार्थ की ओर दृष्टि रख व्यवस्था देंगे तो हिन्दू-समाज उस व्यवस्था को तुच्छ समझ अपनी उन्नति का मार्ग आप ही ढूँढ़ निकालेंगे। पर आपकी स्वकल्पित व्यवस्था के अनुसार चलकर कदापि अवनति के गड्ढे में न गिरेंगे। पण्डित महाशयो! आप सब एक वार प्रकृत धर्म की ओर दृष्टि दीजिए प्राचीनशास्त्र के सिद्धान्त का कुछ विचार कीजिए, अर्थ-सहित वेद-वेदाङ्ग का पाठ कीजिए, विना वेद पढ़े, विना न्यायशास्त्र का तत्त्व जाने व्यवस्था देने में पाप होता है और देश का अमङ्गल होता है* ।"

गाँव के पण्डितों के चले जाने पर कलकत्ते से कामिनी वाबू के भेजे कई एक महान् व्यक्ति सलाह देने के लिए आये। उन सबों ने कहा—"हम सब जातिसंरक्षक समाज के सभासद हैं, और कामिनीकान्त वाबू समाज के नेता हैं। उन्होंने हम सबको आप से यह कहने के लिए भेजा है कि आप भिन्न जाति की लड़की के साथ लड़के का व्याह न करें। और उन्होंने यह भी कहा है कि आप के और उनके बीच जो होने को थी हो गई। अब उनसे आप से किसी बात का वाद विवाद नहीं है। अब आप को चाहिए कि ऐसा समाज-विरुद्ध निन्दित कर्म्म करके अपने पवित्र वंश में कलङ्क न लगावें।" कमलाकान्त वाबू ने हँसकर कहा—"मैं अपनी अल्पबुद्धि के अनुसार जहाँ तक समझता हूँ, मैं कोई अविहित कर्म न करके धर्मानुकूल ही काम कर रहा हूँ। आप मेरी ओर से बड़े भाई साहब को सूचित कर दें, अगर वे धर्म के अनु-

* वशिष्ठ-धर्मसूत्र ३। ६। १२

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सार काम करें तो अवश्य यह पुराना वंश उज्ज्वल हो। उनमें पवित्राचरण से ब्राह्मण-वंश सम्मानित होगा। वे वाराङ्गना का त्यागकर घर आवें तो उनकी पतिव्रता स्त्री सम्मानित हो। शास्त्र में लिखा है—पतिव्रता स्त्री का परित्याग करने से गधे की खाल पहन कर छः मास प्रायश्चित्त करना होता है।" *

कामिनीकान्त के भेजे हुए बन्धुगणों के प्रस्थान करने पर धर्मपुर और सनातनपुर के सामाजिक प्रधान गण एकत्र होकर इस विवाह को रोकने के लिए कमलाकान्त के पास आये। धर्मपुर के चौधरी इस मण्डली के अगुआ थे। चौधरीजी का व्याख्यान बहुत देर तक सुन कर कमलाकान्त बाबू मुस्कुराते हुए बोले—"उपदेशक महाशय! मैं आपके उपदेश का सारांश समझ गया। भिन्न जाति में विवाह करना अधर्म है, यह मेरी अल्पबुद्धि में नहीं आता। मेरी समझ में विवाहिता स्त्री के प्रति निष्ठुर आचरण करना ही अधर्म है। मैंने तुम्हारी साध्वी सहधर्म्मिणी को बाल्यावस्था में गोद खिलाया था, आज तुम्हारे कठोर आचरण से वह असमय में ही रुग्ण होकर मृत्युशय्या पर पड़ी है। इसी से मैं यह कहता हूँ, क्षमा कीजिएगा। सती स्त्री को सताने से वंश निर्वंश होता है, यह शास्त्र का वचन है †। शास्त्र का आदेश दूसरों को सुनाने का जैसा अभ्यास तुमको है, स्वयं उसके पालन करने का, मालूम होता है, तुम उतना अभ्यास नहीं रखते। इसलिए मैं तुमको एक

---

* आपस्तम्ब—"१। १०। २८।२९"

† मनुसंहिता ३। ५७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चितावनी देता हूँ। तुम्हारी गृहिणी मेरी लड़की की बराबर है, और तुम मेरी प्रजा हो, मेरी ज़मींदारी में रहते हो। ख़बरदार!"

चौधरी मुँह चूना सा करके चले गये। सुना है, उसी दिन से उन्होंने सहधर्म्मिणी की सेवा के लिए एक दासी रक्खी और स्वयं भी उसके रोग-निवारण का कुछ यत्न करने लगे। बिचारी चिर-रोगिणी के प्राण बच गये।

विरुद्ध दल के सभी बन्धु और परामर्शदाताओं के चले जाने पर सन्ध्या समय हेमचन्द्र ने कमलाकान्त बाबू के पास आकर कहा—"सभी सनातनधर्म्मी इस विवाह में आपत्ति कर रहे हैं। अगर आपको दस लोगों से विरुद्ध होकर यह काम करना उचित न जान पड़े तो आप वही करें। मेरे साथ सम्बन्ध करके आप दस लोगों में क्यों अपमानित होंगे?"

कमलाकान्त—"इस कार्य में आपके मन में क्या सन्देह होता है? आपको किसी तरह का कोई उज्र हो तो कहिए।"

हेम—"मेरे मन में न कुछ सन्देह है, न कोई उज्र है। समाज ने मुझे बहुत दिनों से जातिच्युत कर दिया है। मेरे साथ खाना पीना छोड़ दिया है। आप मेरे साथ यह सम्बन्ध स्वीकार कर मुझे सम्मानित करना चाहते हैं, मेरी कन्या को पतित दशा से उद्धार करना चाहते हैं, इससे बढ़ कर मेरे लिए सौभाग्य की बात और क्या हो सकती है? मैं केवल आपके लिए कहता था, आप मेरे साथ सम्बन्ध करके क्यों कलङ्कित होंगे?"

कमलाकान्त—"तो निश्चिन्त रहिए, आपके सदृश कुटुम्ब पाकर मैं भी सम्मानित हूँगा। सुशीला सी सर्वगुणसम्पन्ना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सहधर्मिणी पाकर दयानाथ भी सम्मानित होगा। मैं जहाँ तक हिन्दूधर्म और हिन्दूशास्त्र जानता हूँ, जहाँ तक कर्तव्य अकर्तव्य का ज्ञान रखता हूँ तहाँ तक यह कार्य धर्मविरुद्ध भी नहीं, और कर्तव्य-विरुद्ध भी नहीं है। मेरा हृदय जब मुझे अच्छा काम करने का आदेश दे रहा है, तब उससे निरस्त होना मेरा स्वभाव नहीं।"

सनातनपुर के ज़मींदार कमलाकान्त बाबू के इकलौते बेटे के विवाह में बड़ी चहल पहल हुई, बड़ा उत्सव हुआ। कमलाकान्त आप धूम धाम को पसन्द न करते थे। क्योंकि सत्ताइस वर्ष से उन्हें भूमि में कम्बल बिछा कर सोने और अति साधारण वस्तु खाने का अभ्यास पड़ा हुआ है। किन्तु आज समारोह न करने से न बनेगा। उन्हें उत्सव करना ही होगा। आज देश विदेश सर्वत्र यह बात ज़ाहिर हो गई है कि, परम पराक्रमी ज़मींदार कमलाकान्त ने सनातनपुर में आकर फिर अपनी सम्पत्ति पर अधिकार जमाया है। आज गाँव गाँव में यह समाचार फैल गया है कि शास्त्र के तत्त्ववेत्ता ब्राह्मण ज़मींदार प्राचीन हिन्दूशास्त्र की आज्ञा के अनुसार अपने लड़के का व्याह कायस्थ की लड़की के साथ करेंगे। आज घर घर में इस बात की चर्चा चल रही है कि सच्चरित्र दयानाथ के साथ लक्ष्मी-सदृश सुलक्षणा सुशीला का व्याह होगा। चारों ओर से झुण्ड के झुण्ड लोग सनातनपुर में टिड्डीदल की तरह नये ज़मींदार के बेटे का व्याह देखने को आये हैं। ज़मींदार का पुराना मकान चूने से पोता जाकर झकाझक कर रहा है। आम्र-पल्लव और फूलों की माला से द्वार अलंकृत है। सड़क के दोनों ओर लाल, पीले, हरे आदि अनेक रङ्ग के झंडे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फहरा रहे हैं। सनातनपुर में आज घर घर मङ्गलाचार हो रहा है। जहाँ देखिए, वहीं उत्सव का चिह्न दिखाई देता है। हवेली के भीतर स्त्रियों में भाँति भाँति के कुतूहल हो रहे हैं। कितनी ही सुहागिनें झुण्ड बाँध कर जहाँ तहाँ मङ्गलगान गा रही हैं। आज सवेरे ही से लोगों की इतनी भीड़ लगी है कि चलने को रास्ता नहीं मिलता। भाँति भाँति के मङ्गलवाद्य और मनुष्यों के कोलाहल से आकाशमण्डल भर गया है। आज का प्रातःकाल भी और दिनों से सुहावना देख पड़ता है।

साँझ को बड़ी सज धज के साथ वर की सवारी निकली। बारात की शोभा देखने योग्य थी। सनातनपुर से धर्मपुर तक जो सड़क गई है वह आज रोशनी से प्रकाशमान हो रही है। सैकड़ों मशालची हाथ में मशाल लिये सड़क के दोनों ओर जा रहे हैं। दर्शकों की अपार भीड़ है। बीच बीच में रङ्ग विरङ्ग की आतशबाज़ी लोगों की आँखों में चकाचौंध पैदा कर रही है। अनेक बन्धुओं से घिरे दीर्घकाय तेजःपूर्ण कमलाकान्त पैदल जा रहे हैं और उनके पीछे सुन्दर पालकी पर चढ़े दूल्हे के रूप में दयानाथ ने दर्शन दिया। झुंड के झुंड दर्शक नये ज़मींदार कमलाकान्त और उनके दर्शनीय पुत्र दयानाथ को देख कर आनन्द से उल्लसित होकर जयजयकार करने लगे।

इधर धनहीन सुमित्रा का भी पर्णकुटीर लोगों से भरा था। सुमित्रा विचारी बड़ी गरीबिनी थी। लोगों ने उसे समाज से अलग कर दिया। इसलिए उसके घर आज ज्ञातिवर्ग का विशेष समागम न था। यह नहीं कि आज सनातनपुर के प्रसिद्ध ज़मींदार के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इकलौते बेटे के साथ उसकी बेटी का व्याह होगा, किन्तु सुमित्रा ब्राह्मण ज़मींदार की कुटुम्बिनी होगी, सुशीला ज़मींदार के घर की पतोहू होगी—इसलिए गाँव भर की स्त्रियों ने आज सुमित्रा के घर आने की कृपा की। पुराने बन्धुगणों ने इतने दिन बाद उसका स्मरण किया। ज्ञाति कुटुम्बवर्ग ने इतने दिन बाद सुशीला की खोज ख़बर ली और उसकी मङ्गलकामना से रङ्गीन वस्त्र तथा मिठाई भेजी। प्रातःकालिक सूर्य के प्रकाश में जैसे नाना वृक्षों से सैकड़ों पक्षी आकर आकाश को छा लेते हैं; सुमित्रा के सौभाग्य का उदय देख उसी तरह ज्ञाति कुटुम्बवर्ग ने चारों ओर से आकर उसके छोटे घर को छा लिया।

आज सुमित्रा के घर में सुधा के बराबर उमंग से भरी, प्रसन्न-हृदया कौन है? उसके मन में जो आनन्द और उल्लास है उसका अनुभव कौन कर सकता है? सुधा के व्याह के समय कितने ही लोगों ने उसकी बेहद निन्दा की थी, उसे अपवादित किया था, व्यभिचारिणी कह कर उसे समाज से बाहर कर दिया था। आज वही सुधा बड़े आदमी की गृहिणी हुई है, बड़े आदमी की कुटुम्बिनी होने चली है, इसलिए आज वही सब लोग सुधा की ओर आदर भरी दृष्टि से देख रहे हैं, मीठी बातों से उसका अनुनय कर रहे हैं, और उसको सन्तुष्ट रहने के हेतु कितने ही यत्न कर रहे हैं। सुधा के सरल और पवित्र हृदय में रोष का लेश मात्र भी नहीं है। जिन स्त्रियों ने किसी समय उसको बड़ी निन्दा की थी, सुधा आज उनके साथ बहन की तरह संभाषण कर रही है। जिन्होंने सुधा को कुलटा कह कर समाज से बाहर कर दिया था, सुधा आज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन सबों को हाथ पकड़ कर आदर पूर्वक बिठाती है, स्नेहभरी दृष्टि से उनकी ओर देख कर हँसती बोलती है। क्षमा ही समाज की बेड़ी है, क्षमा ही मनुष्य के हृदय को सन्तोष देने वाली है। रोष, ईर्षा अभिमान और दंभ हम सबों के हृदय को आक्रान्त किये हुए है। हम सब इसके वशीभूत होकर नित्य अपने साधारण समाज में फूट फैला रहे हैं। जो लोग इन सब शत्रुओं को दबा कर क्षमा के वशवर्ती हो शत्रु के साथ मित्रों का सा व्यवहार करते हैं, समाज में ऐक्य स्थापन करते हैं, हृदय में शान्ति स्थापन करते हैं, वही देश के सच्चे हितैषी हैं, वही सब के मान्य हैं।

सुधा आज बड़े उल्लास के साथ सुशीला का शृङ्गार करने बैठी है। इस विद्या में सुशीला से बढ़कर प्रवीणा कोई नवीना न थी। आज आठ वर्ष पूर्व वह वैधव्य अवस्था में बहन के घर में रह कर रसोई बनाती थी, बर्तन मलती थी, घर आँगन झाड़ती बुहारती थी, और घर का सब काम धंधा कर चुकने पर बिल्ली के बच्चे को लेकर खेलती थी। संसार किसे कहते हैं, वह न जानती थी। प्रणय किसे कहते हैं, न समझती थी। इस आठ वर्ष के भीतर उसने प्रेम का मर्म जाना है, विवाह का अर्थ समझा है, संसार क्या वस्तु है, इसका ज्ञान प्राप्त किया है। नव मुकुलित फूल की तरह उसके हृदय की कोमल वृत्ति दिन दिन विकशित होती जा रही है। उस मनोवृत्ति के साथ उसकी देहलता भी नये सौन्दर्य से शोभायमान हो गई है। वह लावण्यमयी युवती आज स्वामी के प्रेम-धन से धनवती है, स्वामी के सौभाग्य से भाग्यवती है और पुत्र के स्नेह से स्नेहमयी है। समाज ने जिस कली को असमय में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही पददलित करने की इच्छा की थी, नई शिक्षा के कोमल प्रकाश से वह कली खिल गई। वह अपने सुगन्ध से संसार को आमोदित कर रही है। कोई ऐसी दरिद्रिणी स्त्री नहीं जो सुशीला के पास आकर विना कुछ पाये फिर जाय। कोई ऐसी हतभागिनी नहीं जो सुधा के आदर सत्कार और मधुर भाषण से अपने को भाग्यवती न समझे। सुशीला का शृङ्गार करते करते सुधा को अपने मन की बात स्मरण हो आई। उसने जो प्रेम-धन पाया है, अपने स्वामी की सुहागिन बन जीवन-सुख पाया है, सुशीला भी वह प्रणय-धन पाकर चिर-सौभाग्यवती हो मन ही मन सुशीला को बार बार यह आशीर्वाद देती हुई सुधा प्रेम से पुलकित हो उठी। उसका हृदय आनन्द से उमँगने लगा। सुधा ने खूब रच कर उसकी चोटी गूँध दी। माँग निकाल कर बेनाबन्दी पहना दी। हाथों में नई चूड़ी और कँगना पहना दिया। बाहों में बाजू बिजायठ और जोसन पहना दिये। गले में माला, सतलड़ी, हैकल और चन्द्रहार पहनाये। माथे पर रोली की बिन्दी कर दी, कानों में झूमका पहना दिया, और भी उसके अङ्ग में जहाँ जो उसने उचित शृङ्गार समझा कर दिया। दिन के तीसरे पहर से कन्या का शृङ्गार आरम्भ हुआ, साँझ हो आई, पर अभी तक लड़की का शृङ्गार-कार्य पूरा न हुआ। स्नेहमयी सुमित्रा बार बार उस घर में आकर शीघ्रता करने का संकेत कर जाती है, किन्तु रसिक-हृदया सुधा आज सुशीला को विना अच्छी तरह सँवारे किसी प्रकार छोड़नेवाली न थी। उसने हँसते हँसते कहा—"बहन, तुम जाकर खाने पीने की सामग्री की देख-भाल करो, लड़की का सँवारना आज मेरा काम है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुमित्रा हँसती हुई रसोईघर की भोजन-सामग्री देखने को गई। नई पाकशाला बनी है, सनातनपुर से अच्छे अच्छे रसोइया ब्राह्मण आकर बड़े उत्साह से रसोई बना रहे हैं। भाँति भाँति के पकवानों से घर भरा है। बर्दवान से भी कई क़िस्म के मुरब्बे और मिठाइयाँ मँगाई गई हैं। आज सुमित्रा का आँगन स्त्रियों से भरा है। सभी स्त्रियाँ उमंग भरे स्वर में कुछ न कुछ कन्या की माँ से पूछ रही हैं। ब्याह का विधिव्यवहार कर के आत्मीयता दिखला रही हैं और इधर उधर का काम करके सुमित्रा की ख़ुशामद कर रही हैं। आज सुमित्रा से बढ़ कर भाग्यवती स्त्री और कौन होगी?

इस आनन्द और उत्सव के दिन में, सुमित्रा के मन में पुरानी बातों का स्मरण होने लगा। इस हँसी ख़ुशी के दिन छोटे छोटे बादल के टुकड़े की तरह दुःख की बातें बारी बारी से उसके हृदय-आकाश को पार कर जाने लगीं। अट्ठारह वर्ष पूर्व सुमित्रा की दुःखिनी माता दो बालिकाओं को लेकर इस गाँव में रहती थी। वह अपने हाथ से पानी लाती थी। आप ही चौका बर्तन करती थी। आप ही रसोई बनाती थी, और बड़े कष्ट से दोनों लड़कियों को पालती थी।

अगर वह स्नेहमयी माता आज किसी तरह लौट कर आ सकती, अगर आज हेमचन्द्र और शिवचन्द्र के सदृश जामाता को देख सकती, अगर आज वह सुधा और सुमित्रा को "आओ बेटी, मेरी गोद में बैठो" कह कर उन्हें छाती से लगाती और प्रेमाश्रु भरी आँख से आशीर्वाद दे सकती, अगर आज वह अपनी कन्याओं के सौभाग्य का उदय देख सकती, अगर आज वह लक्ष्मीस्वरूपा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुशीला को गोद में बिठा कर उसका विवाहोत्सव देख सकती तो सुमित्रा का घर क्या ही आनन्द से पूर्ण होता, सुमित्रा का हृदय क्या ही उल्लास-पूर्ण होता! सुमित्रा ने लोगों से भरे हुए आँगन से हट, सूने स्थान में जा चुपचाप आँसू बहाये और आकाश की ओर देख स्वर्गीय माता का दिव्य स्वरूप अनुभव कर प्रणाम किया तथा आशीर्वाद के लिए उसने प्रार्थना की।

विवाह का दिन शोक करने का नहीं है। बाजेवाले ख़ूब ज़ोर से बाजा बजाने लगे, स्त्रियाँ मङ्गलगान गाने लगीं। बाहर कन्या की तरफ़ वालों के हँसने बोलने का मधुर शब्द सुनाई देने लगा। उन सबों में हेमचन्द्र आज शान्तभाव धारण किये प्रसन्न मन से बैठे हैं। लोग उनकी बड़ी निन्दा करते थे। बेवा साली का व्याह कर देने से समाज ने उन्हें जातिच्युत कर दिया था। किन्तु उनका उदार चरित्र देख कर लोग उन पर भक्ति श्रद्धा करने लगे हैं। संसार में जिन गुणों से लोग बड़े आदमी कहलाते हैं, हेमचन्द्र में वह एक भी नहीं। हेमचन्द्र के पास धन नहीं, ज़मींदारी नहीं, विशेष विद्या नहीं, प्रभुत्व नहीं, यश नहीं, राजा की दी हुई कोई उपाधि नहीं, तथापि उनके हृदय का साहस, निर्भीकता और पवित्रता देख कर शिवचन्द्र और कमलाकान्त उनके अधीन हो रहे हैं। कर्तव्य-साधन में उनका दृढ़ संकल्प और प्रतिज्ञा देख कर पुरवासी और नगरनिवासिगण चकित हो गये हैं। विपत्ति के समय एक दिन भी हेमचन्द्र को घबराते किसी ने न देखा। झूठी निन्दा और अपवाद से उनका हृदय विचलित न हुआ। कर्तव्य-पथ से उन्होंने कभी अपना पैर पीछे न किया, अवनति और उन्नति के समय उनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन का भाव एक सा बना रहा। ऐसे पुरुष-वीर के निकट धन क्या वस्तु है? मान-प्रतिष्ठा क्या है? लक्ष्मी स्वयं ऐसे साहसी और धीर पुरुष के घर आने की कृपा करती हैं। सनातनपुर के ज़मींदार आज दरिद्र हेमचन्द्र के साथ सम्बन्ध जोड़ कर अपने को सम्मानित समझते हैं। दरिद्र हेमचन्द्र का नाम आज धार्मिकगण जहाँ तहाँ बड़े उत्साह के साथ ले रहे हैं।

देखते ही देखते बारात गाँव के समीप आ पहुँची। दूर से रोशनी की बहार देख पड़ी। वाद्य के शब्द सुन पड़े। बड़े समारोह से बारात आने की ख़बर पा हेमचन्द्र अपने बन्धु-बान्धवों को साथ ले कुछ दूर आगे बढ़ नम्रतापूर्वक समधी से जा मिले और बड़े आदर सत्कार से उन्हें अपने घर ले आये। दर्वाज़े के सामने बहुत बड़ा शामियाना खड़ा है। उसके चारों ओर बहुत सुन्दर झालरें लटक रही हैं। उसके बीच में झाड़ और तरह तरह के शीशे टँगे हैं। चारों ओर फूलों की माला लटकाई गई है। भृत्यगण बसन्ती रंग के कपड़े पहने क़तारबन्दी से खड़े होकर पंखा झल रहे हैं। गाँव के लड़के बारातियों के ऊपर गुलाब छिड़क रहे हैं। कोई पान इलायची, कोई इत्र बाँट रहे हैं। गवैये लोग अपने तान गान से सभा को रञ्जित कर रहे हैं। बन्दीगण स्तुतिपाठ कर रहे हैं। बीच बीच में प्रजागणों के जय जयकार से आकाश गूँज उठता है। इस शामियाने के भीतर लाल कपड़े पहने, लाल रङ्ग के आसन पर बैठे दयानाथ बड़ी शोभा पा रहे हैं। सभास्थ सब लोगों ने जब उस देवतुल्य मूर्त्ति की ओर देखा, सब आनन्द से पुलकित हो एक स्वर से उस नवयुवक को आशीर्वाद देने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगे। भाँति भाँति के वाद्यों का शब्द दिग्दिगन्त में प्रतिध्वनित होने लगा।

वर को परिछ कर स्त्रियाँ भीतर ले गईं। सैकड़ों स्त्रियों के मधुर गान और हास्यध्वनि से रात्रि की निस्तब्धता भङ्ग हुई। सुहागिन स्त्रियों ने बड़े उत्साह से इस शुभकार्य में योग दिया। दूल्हे को चारों ओर से घेर कर वे सब नाना प्रकार के हास, परिहास और कौतुक करती हुई कुलाचा-व्यवहार करने लगीं।

घर की रीति रस्म होने के बाद वर कन्या दोनों विवाह-मण्डप में लाये गये। उन दोनों के आगमन से मण्डप की शोभा बढ़ गई। वर का सुन्दर स्वरूप देख कर लोग पहले ही उसे आशीर्वाद दे चुके थे। इस समय लक्ष्मी स्वरूपा सुशीला का अनुपम सौन्दर्य और शोभा देख कर सब लोग उसकी प्रशंसा करने लगे। "आज विधाता ने योग्य के साथ योग्य को मिलाया। युगल-जोड़ी चिरंजीव हो। सनातनपुर का वंश चिरस्थायी हो, कमलाकान्त के बाद दयानाथ हमारे ज़मींदार मालिक हों। सुशीला माता की तरह प्रजाओं का लालन पालन करे।" इस प्रकार चारों ओर से आशीर्वाद सुनाई देने लगे।

व्याह हो गया। कन्या वर अन्तःपुर में आये। वहाँ की बात हम नहीं जानते, इसलिए वहाँ का हाल हम क्या लिखें? भीतर स्त्री-समाज में दूसरे पुरुष को जाने का अधिकार भी नहीं। जो कुछ सुना, उसका सारांश यही कि धर्मपुर की स्त्रियाँ बड़ी चतुरा थीं। दयानाथ स्वभाव का बड़ा ही सीधा था। बहुत दिनों तक वह परदेश में रहा। विलासिनी स्त्रियों का रङ्ग रहस्य वह बिचारा क्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाने, यही उसका प्रथम परिचय है। दयानाथ पिता के साथ अनेक देशों का भ्रमण कर चुका है, बड़ी बड़ी तकलीफें झेल चुका है, अनेक वार अनेक प्रकार की आपदाओं में पड़ चुका है, परन्तु ऐसे विषम संकट में वह कभी न पड़ा था। सुशीला की समवयस्क सखियों के व्यंग भरे कूट प्रश्नों से दयानाथ दंग हो रहे। रात के तीन बज जाने पर उसने परिहासिनी स्त्रियों के पैर पकड़ कर क्षमा चाही। इस प्रकार नये दूल्हे पर विजय प्राप्त कर कामिनीगणों ने क्षमा प्रदान की। दयानाथ लम्बी साँस ले पाँव पसार कर लेट रहा। नींद आते देर न हुई, दो घंटे सो कर उसने अपनी जान बचाई।

इधर बारातियों के खाने पीने की बड़ी तैयारी थी। कमलाकान्त के स्नेह किंवा भय से अनेक बन्धु-बान्धवगण इस विवाह में निमन्त्रित हो कर आये थे। सनातनपुर, वर्दवान और कलकत्ते से अनेक भद्र पुरुषों ने आकर मण्डप की शोभा बढ़ाई थी। कोई कोई सामाजिक व्यक्ति इस विवाह में उपस्थित होने में डर गये थे, किन्तु कमलाकान्त बाबू के कितने ही विश्वासपात्र और सच्चे मित्र यह निश्चय करके कि "जो इनकी गति होगी वह हमारी भी होगी" भोजन करने बैठे। कितने ही वीर पुरुष जो कमलाकान्त बाबू के डर से आये थे, समाज के भय से भोजन के पूर्व ही चम्पत हो गये। समाज ने उनकी वीरता और चतुराई की बड़ी प्रशंसा की।

भोजन के उपरान्त हेमचन्द्र ने कमलाकान्त से कहा—"आप की कृपा से आज मैं बड़ा ही कृतार्थ और सम्मानित हुआ। आप के अनुरोध से आज आपके अनेक बन्धु-बान्धवों ने मेरे यहाँ भोजन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगे। भांति भांति के वाद्यों का शब्द दिग्दिगन्त में प्रतिध्वनित होने लगा।

वर को परिछ कर स्त्रियाँ भीतर ले गईं। सैकड़ों स्त्रियों के मधुर गान और हास्यध्वनि से रात्रि की निस्तब्धता भङ्ग हुई। सुहागिन स्त्रियों ने बड़े उत्साह से इस शुभकार्य में योग दिया। दूल्हे को चारों ओर से घेर कर वे सब नाना प्रकार के हास, परिहास और कौतुक करती हुई कुलाचा-व्यवहार करने लगीं।

घर की रीति रस्म होने के बाद वर कन्या दोनों विवाह-मण्डप में लाये गये। उन दोनों के आगमन से मण्डप की शोभा बढ़ गई। वर का सुन्दर स्वरूप देख कर लोग पहले ही उसे आशीर्वाद दे चुके थे। इस समय लक्ष्मी स्वरूपा सुशीला का अनुपम सौन्दर्य और शोभा देख कर सब लोग उसकी प्रशंसा करने लगे। "आज विधाता ने योग्य के साथ योग्य को मिलाया। युगल-जोड़ी चिरंजीव हो। सनातनपुर का वंश चिरस्थायी हो, कमलाकान्त के बाद दयानाथ हमारे ज़मींदार मालिक हों। सुशीला माता की तरह प्रजाओं का लालन पालन करे।" इस प्रकार चारों ओर से आशीर्वाद सुनाई देने लगे।

व्याह हो गया। कन्या वर अन्तःपुर में आये। वहाँ की बात हम नहीं जानते, इसलिए वहाँ का हाल हम क्या लिखें? भीतर स्त्री-समाज में दूसरे पुरुष को जाने का अधिकार भी नहीं। जो कुछ सुना, उसका सारांश यही कि धर्मपुर की स्त्रियाँ बड़ी चतुरा थीं। दयानाथ स्वभाव का बड़ा ही सीधा था। बहुत दिनों तक वह परदेश में रहा। विलासिनी स्त्रियों का रङ्ग रहस्य वह बिचारा क्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाने, यही उसका प्रथम परिचय है। दयानाथ पिता के साथ अनेक देशों का भ्रमण कर चुका है, बड़ी बड़ी तकलीफें झेल चुका है, अनेक बार अनेक प्रकार की आपदाओं में पड़ चुका है, परन्तु ऐसे विषम संकट में वह कभी न पड़ा था। सुशीला की समवयस्क सखियों के व्यंग भरे कूट प्रश्नों से दयानाथ दंग हो रहे। रात के तीन बज जाने पर उसने परिहासिनी स्त्रियों के पैर पकड़ कर क्षमा चाही। इस प्रकार नये दूल्हे पर विजय प्राप्त कर कामिनीगणों ने क्षमा प्रदान की। दयानाथ लम्बी साँस ले पाँव पसार कर लेट रहा। नींद आते देर न हुई, दो घंटे सो कर उसने अपनी जान बचाई।

इधर बारातियों के खाने पीने की बड़ी तैयारी थी। कमलाकान्त के स्नेह किंवा भय से अनेक बन्धु-बान्धवगण इस विवाह में निमन्त्रित हो कर आये थे। सनातनपुर, वर्दवान और कलकत्ते से अनेक भद्र पुरुषों ने आकर मण्डप की शोभा बढ़ाई थी। कोई कोई सामाजिक व्यक्ति इस विवाह में उपस्थित होने में डर गये थे, किन्तु कमलाकान्त बाबू के कितने ही विश्वासपात्र और सच्चे मित्र यह निश्चय करके कि "जो इनकी गति होगी वह हमारी भी होगी" भोजन करने बैठे। कितने ही वीर पुरुष जो कमलाकान्त बाबू के डर से आये थे, समाज के भय से भोजन के पूर्व ही चम्पत हो गये। समाज ने उनकी वीरता और चतुराई की बड़ी प्रशंसा की।

भोजन के उपरान्त हेमचन्द्र ने कमलाकान्त से कहा—"आप की कृपा से आज मैं बड़ा ही कृतार्थ और सम्मानित हुआ। आप के अनुरोध से आज आपके अनेक बन्धु-बान्धवों ने मेरे यहाँ भोजन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया है। दरिद्र हेमचन्द्र के कहने से एक आदमी भी इस विवाह में न आता, खाने पीने की तो कोई बात ही नहीं।"

कमलाकान्त ने कहा—"मेरे कितने ही आत्मीय बन्धु-बान्धव बाहर भोजन कर रहे हैं। अगर आप देखना चाहें तो मेरे साथ चलिए।"

दोनों धीरे धीरे बाहर गये। चटकीली चाँदनी रात की शोभा से संसार शोभायमान हो रहा है। वसन्त ऋतु की ठंढी हवा मन्द मन्द बह रही है। खिले हुए जंगली फूलों का सुगन्ध दिग्दिगन्त को आमोदित कर रहा है। एक मील के क़रीब रास्ता चल कर दोनों एक बहुत बड़े आमबाग़ में पहुँचे। हेमचन्द्र ने देखा, जैसे वहाँ कोई मेला लगा हो। दस हज़ार आदमी के लगभग बड़े उल्लास से एक साथ भोजन करने को बैठे हैं। कमलाकान्त बाबू के जितने प्रजागण ब्याह देखने के लिए आये थे, कमलाकान्त बाबू की आज्ञा के अनुसार उन सबों के भोजन का प्रबन्ध इसी बाग़ में किया गया था। कमला बाबू ने सब को नये कपड़े दिये हैं, मर्दों को धोती और स्त्रियों को साड़ी दी है। उनकी गोद के बच्चों के हाथ में एक एक रुपया भी दिया गया है। बड़े उल्लास के साथ सभी भोजन करने बैठे हैं। इतने में कमलाकान्त को वहाँ आते देख सब उठ खड़े हुए और अपने मालिक की उच्चस्वर से जय घोषणा की। स्त्रियों ने भी घूँघट काढ़ गोद में बच्चे को ले ज़मींदार महाशय की बहुत बड़ाई की। दीन प्रजाओं का यह उल्लास, भक्ति और स्नेह देख कर कमलाकान्त के नेत्र में आँसू भर आये।

कमलाकान्त ने धीरे धीरे हेमचन्द्र को एक ओर ले जा कर गम्भीर स्वर में कहा—"यह जय जय शब्द और आनन्द उल्लास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का सुन रहे हैं न ? ये सब भी मेरे आत्मीय बन्धु हैं। हम आपहिन्दू हैं, ये सब भी वैसे ही हिन्दू हैं। ये सब हमारे धर्म अनुयायी हैं, एक हिन्दूजातीय हैं। पूर्वकाल में सभी हिन्दुं भोजन का व्यवहार था। सब का छुआ सब खाते पीते थे अभिमान नाम मात्र का न था। किन्तु आज कल के नियम हम लोग अलग हो कर जातीय दुर्बलता को प्राप्त हो गये हैं। हिन्दू जाति में परस्पर विभिन्नता और दुर्बलता का संचार करना किसनों का अभीष्ट है। हम सब यदि अपनी चेष्टा से एकत साधन कर सकें तो हिन्दूजाति के गौरव की सीमा न रहेगी। जब तक हम सब में वह एकता न होगी तब तक हमारा धर्मोपदेश वृथा है, हम सबों का राजनैतिक आन्दोलन व्यर्थ है। जब किसी दिन जातीय ऐक्यबल से बलवान् होंगे तब हमारी सामाजिक और राजनैतिक उन्नति को कौन रोक सकेगा ? हमारी उन्नतिहमारे अपने हाथ में है। दूसरे का अनुग्रह सापेक्ष नहीं। दूसरे का मुखावलोकन की आवश्यकता नहीं।

फिर सुनिए, यह जय जयकार शब्द ! ये दस हज़ार मनुष्य हमारे आत्मीय हैं। ये दस हज़ार हमारे स्वजातीय हैं। ये भी हिन्दू हैं, तो इन्हें हम क्यों न स्वजातीय मानें। हम सब से जहाँ तक हो सके, आजीवन हिन्दूजाति में ऐक्यसाधन की चेष्टा करनी चाहिए। ईश्वर करें, हम सब हिन्दू पूर्वकाल की तरह ऐक्यबल को प्राप्त हों, जिसमें हम हिन्दू सभी अच्छे कामों में एक साथ मिल कर अपने परम पिता परमेश्वर का नाम लेना सीखें।"

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया है। दरिद्र हेमचन्द्र के कहने से एक आदमी भी इस विवाह में न आता, खाने पीने की तो कोई बात ही नहीं।"

कमलाकान्त ने कहा—"मेरे कितने ही आत्मीय बन्धु-बान्धव बाहर भोजन कर रहे हैं। अगर आप देखना चाहें तो मेरे साथ चलिए।"

दोनों धीरे धीरे बाहर गये। चटकीली चाँदनी रात की शोभा से संसार शोभायमान हो रहा है। वसन्त ऋतु की ठंढी हवा मन्द मन्द बह रही है। खिले हुए जंगली फूलों का सुगन्ध दिग्दिगन्त को आमोदित कर रहा है। एक मील के क़रीब रास्ता चल कर दोनों एक बहुत बड़े आमबाग़ में पहुँचे। हेमचन्द्र ने देखा, जैसे वहाँ कोई मेला लगा हो। दस हज़ार आदमी के लगभग बड़े उल्लास से एक साथ भोजन करने को बैठे हैं। कमलाकान्त बाबू के जितने प्रजागण व्याह देखने के लिए आये थे, कमलाकान्त बाबू की आज्ञा के अनुसार उन सबों के भोजन का प्रबन्ध इसी बाग़ में किया गया था। कमला बाबू ने सब को नये कपड़े दिये हैं, मर्दों को धोती और स्त्रियों को साड़ी दी है। उनकी गोद के बच्चों के हाथ में एक एक रुपया भी दिया गया है। बड़े उल्लास के साथ सभी भोजन करने बैठे हैं। इतने में कमलाकान्त को वहाँ आते देख सब उठ खड़े हुए और अपने मालिक की उच्चस्वर से जय घोषणा की। स्त्रियों ने भी घूँघट काढ़ गोद में बच्चे को ले ज़मींदार महाशय की बहुत बड़ाई की। दीन प्रजाओं का यह उल्लास, भक्ति और स्नेह देख कर कमलाकान्त के नेत्र में आँसू भर आये।

कमलाकान्त ने धीरे धीरे हेमचन्द्र को एक ओर ले जा कर गम्भीर स्वर में कहा—"यह जय जय शब्द और आनन्द उल्लास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का सुन रहे हैं न ? ये सब भी मेरे आत्मीय बन्धु हैं। हम आपहिन्दू हैं, ये सब भी वैसे ही हिन्दू हैं। ये सब हमारे धर्म अनुयायी हैं, एक हिन्दूजातीय हैं। पूर्वकाल में सभी हिन्दू भोजन का व्यवहार था। सब का छुआ सब खाते पीते थे अभिमान नाम मात्र का न था। किन्तु आज कल के नियम हम लोग अलग हो कर जातीय दुर्बलता को प्राप्त हो गये हैं। हिन्दू जाति में परस्पर विभिन्नता और दुर्बलता का संचार करने कितनों का अभीष्ट है। हम सब यदि अपनी चेष्टा से एकत साधन कर सकें तो हिन्दूजाति के गौरव की सीमा न रहेगी। जब तक हम सब में वह एकता न होगी तब तक हमारा धर्मोपदेश वृथा है, हम सबों का राजनैतिक आन्दोलन व्यर्थ है। जब किसी दिन जातीय ऐक्यबल से बलवान् होंगे तब हमारी सामाजिक और राजनैतिक उन्नति को कौन रोक सकेगा ? हमारी उन्नतिहमारे अपने हाथ में है। दूसरे का अनुग्रह सापेक्ष नहीं। दूसरे का मुखावलोकन की आवश्यकता नहीं।

फिर सुनिए, यह जय जयकार शब्द ! ये दस हज़ार मनुष्य हमारे आत्मीय हैं। ये दस हज़ार हमारे स्वजातीय हैं। ये भी हिन्दू हैं, तो इन्हें हम क्यों न स्वजातीय मानें। हम सब से जहाँ तक हो सके, आजीवन हिन्दूजाति में ऐक्यसाधन की चेष्टा करनी चाहिए। ईश्वर करें, हम सब हिन्दू पूर्वकाल की तरह ऐक्यबल को प्राप्त हों, जिसमें हम हिन्दू सभी अच्छे कामों में एक साथ मिल कर अपने परम पिता परमेश्वर का नाम लेना सीखें।"

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

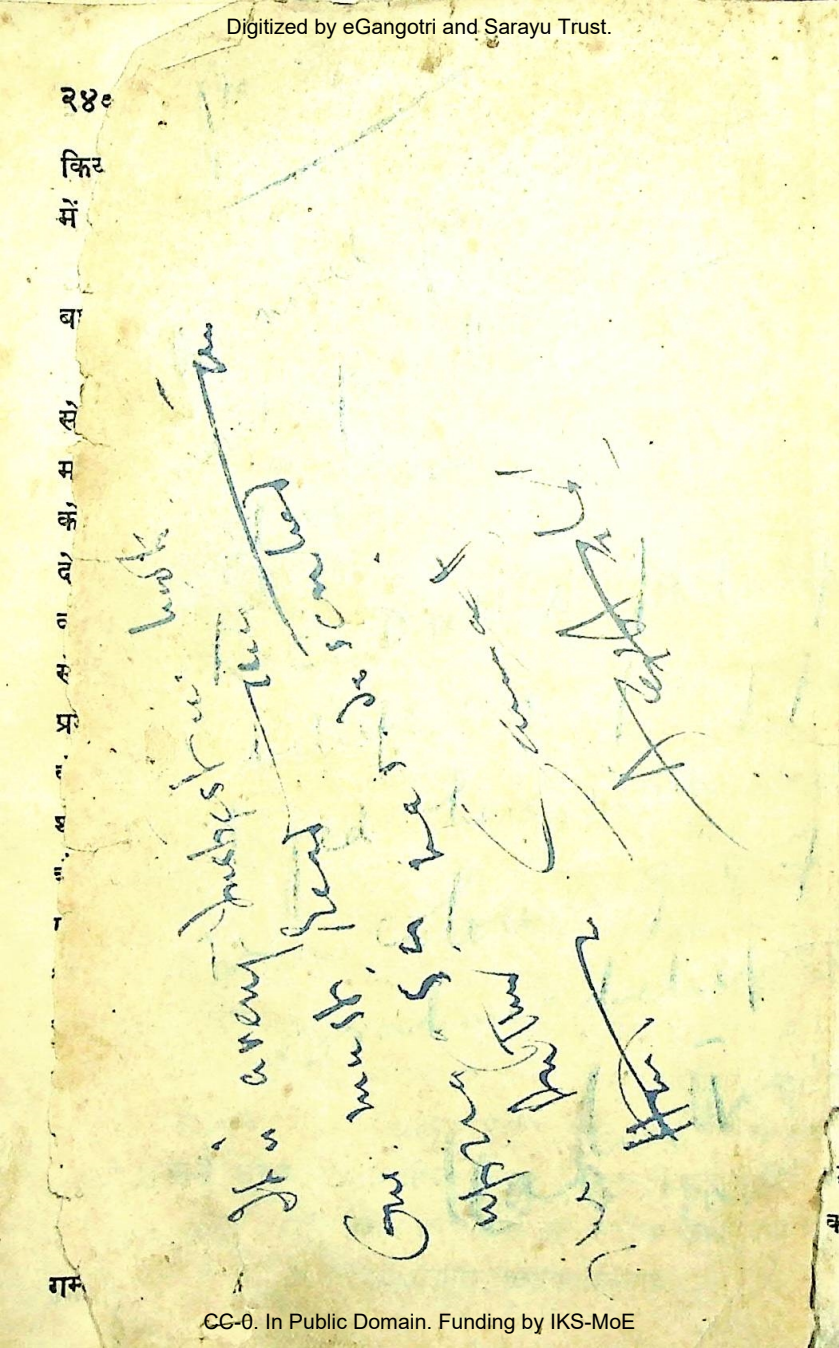

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

H83 6561

This book was taken from the library on the date last stamped. A fine of one anna will be charged for each day the book is kept overdue.

11-7-1962	8.8.62		
15-9-62	22.9.62		
27.X.63			
10.11.64	16.8.64		
30-IX-1964	4.X.64		
15.12.68	29/12/68		
20-5-0	25/5/20		
27/7/20			

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

No .....

LOANED	RETURNED	LOANED	RETURNE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

H83 J245 6561

This book was taken from the library on the date last stamped. A fine of one anna will be charged for each day the book is kept overdue.

11-7-1962	8.8.62		
15-9-62	22.9.62		
27.4.63			
10.11.64	16.8.64		
30-IX-1964	4.X.64		
15.12.68	29.12.68		
20-5-0	25.5.20		
27.7.20			

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

No

LOANED	RETURNED	LOANED	RETURNE

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE